आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मई, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मई, 2015 ★ ज्येष्ठ, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

31761

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हीरा — जय गुरु हस्ती — जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera — *Jai Guru Hasti* — *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

न हु पाणवहं अणुजाणे,
मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवारिएहि अक्खायं,
जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.8

हिंसादि पाप के अनुमोदक,
सब दुःखों से मुक्ति न पाते हैं।
साधु-धर्म का कथन किया,
वे आर्य ऐसा बतलाते हैं।।

मई, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
ज्येष्ठ, 2072

वर्ष 73 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	आचार्यपद के निकष पर आचार्यश्री हीरा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
प्रवचन-	अस्थायी के मोह में न उलझें	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	14
	जिन सरीखी जिनवाणी	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	18
अध्यात्म-	दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (3)	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	21
	धर्म को जीया जाता है	-श्री रणजीतसिंह कूमट	23
संगोष्ठी-आलेख-	दिगम्बर परम्परा में रात्रिभोजन-त्याग के संदर्भ	-प्रो. जिनेन्द्रकुमार जैन	26
शोधालेख-	लेश्या सिद्धान्त : एक विवेचन	-डॉ. जवाहरलाल नाहटा	31
प्रासङ्गिक-	विद्वानों को प्रोत्साहन आवश्यक	-डॉ. दिलीप धींग	39
	अल्पसंख्यक घोषित होने से जैन समाज को लाभ	-डॉ. एन. के खींचा	44
	आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद के रजत वर्ष का शुभारम्भ	-संकलित	48
नारी-स्तम्भ-	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	-श्री पारसमल चण्डालिया	53
धारावाहिक-	लग्न की वेला (12)	-आचार्य श्री उमेशमुनिजी 'अणु'	57
संवाद-	जिनशासन की दीक्षा (5)	-आचार्य विजययोगतिलकसूरिजी म.सा.	61
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (10)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	65
युवा-स्तम्भ-	कैसे करें स्वाध्याय	-श्री दुलीचन्द जैन	71
बाल-स्तम्भ -	पुस्तकें, बाल-मन और संघर्ष	-संकलित	76
चिन्तन/विचार-	अच्छा बनने के लिए	-आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज	20
	चिन्तन की मनोभूमि	-श्री सम्पतराज चौधरी	30
	आचार का होता है सम्मान	-श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा.	43
	जैन होने का अर्थ	-डॉ. श्वेता जैन	46
	चिन्तन	-श्री अरुण मेहता	60
	क्रोध की जीवनी	-श्री सचिन कुमार जैन	70
	अनाग्रही सत्य को प्राप्त करता है	-श्री अनोखीलाल मोगरा	75
कविता/गीत-	वीर भक्त कहलाने वालों, नव इतिहास रचाना है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	17
	नव द्वार की काया पुरी	-श्री सोहनलाल सिसोदिया	25
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	38
	पल-पल बीता जाय	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	52
शिविर-अनुभव-	जब ध्यान में मन रमने लगता है	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	118
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	80
समाचार विविधा-	दीक्षा समाचार	-संकलित	88
	समाचार-संकलन	-संकलित	100
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	119

सम्पादकीय

आचार्यपद के निकष पर आचार्यश्री हीरा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन परम्परा में आचार्य पद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि तीर्थंकर-प्रणीत वाणी एवं तीर्थ के संरक्षक आचार्य होते हैं। आचार्य संघ के नायक होते हैं, जो साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका चतुर्विध संघ का मार्गदर्शन एवं संरक्षण करते हैं। वर्तमान में पंच-परमेष्ठी के अन्तर्गत अरिहन्त एवं सिद्ध हमारे समक्ष नहीं होने से आचार्य हमारे सर्वोच्च मार्गदर्शक हैं। उनमें साधु के सभी सामान्य या मूल गुण तो होते ही हैं, किन्तु उनके अतिरिक्त भी वे संघ-नियन्ता होने से अष्टविध सम्पदाओं एवं 36 गुणों से सम्पन्न स्वीकार किए गए हैं। तीर्थंकरों की परम्परा को पहले गणधरों ने तथा उनके पश्चात् श्रुतकेवलियों ने आगे बढ़ाया और अब आचार्य ही जिनशासन के गौरव को संरक्षित, सुरक्षित एवं संवर्द्धित करने वाले हैं।

आचार्य के जिन छत्तीस गुणों का उल्लेख मिलता है, उनमें कुछ गुण साधुओं में भी पाए जाते हैं। मूलतः साधु ही आधारभूत पद है। वहाँ से ही उपाध्याय, आचार्य अथवा केवली या अरिहन्त, सिद्ध जैसे विशिष्ट एवं शुद्ध पदों को प्राप्त किया जाता है। जिसमें सम्यक् साधु बनने की योग्यता होती है, वही आठ सम्पदाओं से युक्त होकर आचार्य पद की गरिमा को सुशोभित कर पाता है। 36 गुणों में प्राणातिपात- विरमण आदि पाँच महाव्रतों; ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार- इन पाँच आचारों; श्रोत्रेन्द्रिय आदि पाँच इन्द्रियों पर विजय; क्रोध, मान, माया, लोभ- इन चार कषायों पर नियन्त्रण; नव वाड़ युक्त शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन तथा पाँच समिति एवं तीन गुप्ति की शुद्ध आराधना की गणना होती है। आचार्य सामान्य साधु की अपेक्षा पाँच महाव्रत आदि का पालन अधिक दृढ़ता से करता है, क्योंकि आचार्य के दृढ़ रहने पर ही साधु-साध्वी सरलता से आचारनिष्ठ बनते हैं।

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा के ऐसे निर्मल कीर्ति वाले आचार्य हैं, जो स्वयं भी साधना के प्रति सजग हैं तथा अपने संघ के साधु-साध्वियों को भी साधना के प्रति सजग रखते हैं। उनका आचार्यपद आरोहण ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी संवत् 2048 तदनुसार 2 जून 1991 को जोधपुर में हुआ था। आचार्यपद के 24 वर्ष साधना एवं संघ के विकास की दृष्टि से अत्यन्त सफल रहे हैं। विक्रम संवत् 2072 ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 9 मई 2015 को वे आचार्य पद के 25 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। प्रातःकाल से लेकर रात्रि-विश्राम के पूर्व तक वे सतत साधना में सन्नद्ध रहते हैं। दिन में कभी शयन या

आराम नहीं करते। वे स्वयं नियमित रूप से दैनिन्दनी भरते तथा संघ के सभी साधु-साध्वियों से भी यह आशा रखते हैं। वे सम्पूर्ण छत्तीस गुणों के धारक हैं।

आचार्यश्री दूरदर्शी, विवेकशील,अनुशासनप्रिय एवं आगमनिष्ठ हैं। वे भूत-भविष्य दोनों को दृष्टि में रखकर वर्तमान क्रियाओं को सम्यक् रूपेण सम्पादित करते हैं। वे सत्-असत्, करणीय-अकरणीय आदि का पूरा विवेक रखते हैं। एक आचार्य विधि एवं निषेध का पूर्ण ज्ञाता होकर ही संघस्थ सदस्यों का सम्यक् मार्गदर्शन करता है। आगमों के आधार पर एवं स्वविवेक से आचार्य ही यह निर्णय करता है कि विभिन्न परिस्थितियों में क्या आचरणीय है और क्या नहीं? उनका निर्णय संघस्थ सदस्यों को मान्य होता है। आचार्य श्री हीरा में यह विवेकशीलता पदे-पदे प्रस्फुटित होती है। संघ का अनुशास्ता आचार्य होता है। आचार्य श्री हीरा स्वयं अनुशासित रहकर साधु-साध्वियों को स्वप्रेरित अनुशासन में रखने में दक्ष हैं। उन्होंने अपने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती से जो कुछ सीखा उसे जीवन में जीने का सत्पुरुषार्थ किया। यही कारण है कि वे गुरु-मंत्र को जीवन-मंत्र बनाते हुए संघ का सतत विकास कर रहे हैं। उन्हें विचार शुद्धि एवं आचारनिष्ठा पर गहरी आस्था है।

साधक-जीवन का लक्ष्य अपने विकारों किं वा कषायों पर विजय प्राप्त करना है। समस्त साधना का मूल लक्ष्य यही है, इसलिए आचार्यप्रवर अपने प्रवचनों में भी कषाय-विजय हेतु प्रेरणा प्रदान करते हैं तथा कषाय-त्याग का अभ्यास कराते हैं।

स्थानांगसूत्र में आठ प्रकार की गणि सम्पदाओं का उल्लेख है- 1. आचार सम्पदा, 2. श्रुत सम्पदा, 3. शरीर सम्पदा, 4. वचन सम्पदा, 5. वाचना सम्पदा, 6. मति सम्पदा, 7. प्रयोग सम्पदा एवं 8. संग्रहपरिज्ञा सम्पदा। दशाश्रुतस्कन्ध में इन सम्पदाओं का विस्तार से निरूपण हुआ है। **आचार सम्पदा** का तात्पर्य है- संयम में ध्रुव योग युक्त होना। कहने का अभिप्राय है कि मन, वचन एवं काया तीनों स्तरों पर एक आचार्य की संयम में सदा तत्परता रहती है। वह ऐसा करके भी उसका अभिमान नहीं करता। वह अप्रतिबद्ध विहारी होता है। वह ज्ञान और शील में वृद्ध होता है। **श्रुत सम्पदा** श्रुतज्ञान से सम्बद्ध है। एक आचार्य बहुश्रुत होता है। स्व सिद्धान्त एवं पर सिद्धान्त का ज्ञाता होता है। उच्चारण शुद्धि को भी जानता है। आचार्य **शरीर सम्पदा** से भी सम्पन्न होता है, उसके शरीर की लम्बाई-चौड़ाई उचित प्रमाण में होती है, वह लज्जास्पद शरीर वाला नहीं होता। शरीर का संहनन सुदृढ़ होता है, समस्त इन्द्रियों से परिपूर्ण होता है। **वचन सम्पदा** से सम्पन्न आचार्य का वचन आदरणीय होता है, मधुर होता है, पक्षपात रहित एवं संदेह रहित होता है। **वाचना सम्पदा** से युक्त होकर वह शिष्य की योग्यता का निश्चय करने में समर्थ होता है। विवेकपूर्वक अध्ययन कराता है। प्रसन्नतापूर्वक वाचना देता है। अर्थ संगतिपूर्वक अध्यापन करता है। वह **मति सम्पदा** से

सम्पृक्त होकर अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा ज्ञान में कुशल होता है। वह शास्त्र के अभिप्राय को एवं शिष्यों के प्रश्नों के अभिप्राय को शीघ्र समझ लेता है। वह अनेक अर्थों को धारण करने में सक्षम होता है। वह ज्ञान सम्पन्न होकर भी प्रयोगविधि में कुशल होता है। स्वयं की शक्ति और ज्ञान को जानकर ही वाद-प्रतिवाद करता है। परिषद् की योग्यता को जानकर वाद-प्रतिवाद करता है। क्षेत्र को ठीक से जानकर एवं वस्तु के प्रतिपाद्य विषय को समझकर वाद-प्रतिवाद करता है। यह **प्रयोग सम्पदा** अथवा **प्रयोगमति सम्पदा** है। **संग्रह परिज्ञा सम्पदा** का अर्थ सम्यक् रूप से कल्पनीय में वस्तुओं, उपकरण, स्थान आदि का ग्रहण करना है। दशाश्रुतस्कन्ध में संग्रहपरिज्ञा के चार प्रकार इस तरह निरूपित हैं- 1. वर्षावास में अनेक मुनिजनों के रहने योग्य क्षेत्र का प्रतिलेखन करना, 2. अनेक मुनिजनों के लिए प्रातिहारिक पीठ, फलक, शय्या और संस्तारक ग्रहण करना, 3. समयानुसार कार्य करना, 4. गुरुजनों का यथायोग्य पूजा-सत्कार करना। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. इन आठ सम्पदाओं से सम्पन्न हैं। उनके चिन्तन, वचन एवं कार्य-प्रवृति में इन सम्पदाओं के विभिन्न लक्षणों का साक्षात्कार किया जा सकता है।

यास्क के निरुक्त में आचार्य शब्द की तीन प्रकार से निरुक्ति की गई है- 1. आचारं ग्राहयति, 2. आचिनोति अर्थान्, 3. आचिनोति बुद्धिं। प्रथम निरुक्ति के अनुसार जो आचार को स्वयं ग्रहण कर शिष्यों को ग्रहण कराता है, वह आचार्य है। वह सदाचार की शिक्षा देता है तथा उसे शिष्यों में धारित कराता है। द्वितीय निरुक्ति के अनुसार जो शिष्य की बुद्धि में सूत्रार्थ का सम्यक् संचय करता है, उसे अर्थबोध के प्रति निष्णात बनाता है, वह आचार्य है। तृतीय निरुक्ति का अभिप्राय है कि आचार्य शिष्य की बुद्धि को ज्ञान सम्पन्न बनाता है। इस तरह आचार्य आचार सम्पन्न एवं स्वस्थ मस्तिष्क वाली नई पीढ़ी का निर्माण करता है। आचार्य का इस दृष्टि से बहुत बड़ा दायित्व होता है।

आचार्य का यह दायित्व होता है कि वह संघस्थ साधुओं एवं साध्वियों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य सौंपे। जो अध्ययनशील हैं उन्हें स्वाध्याय में, जो वैयावृत्त्य गुण से सम्पन्न हैं उन्हें सेवा कार्यों में लगाए। वह सबका सन्तुलित विकास करे। जो व्यक्ति संसार के रिश्तों का त्याग कर साधना हेतु संघ में प्रव्रजित हुए हैं, उन्हें पिता, माता एवं गुरु की भांति स्नेह देते हुए उनके जीवन का निर्माण करे। वह उनकी स्वतन्त्रता एवं अनुशासन दोनों का प्रेमपूर्वक निर्वाह करने में समर्थ होता है। वह प्रेम एवं अनुशासन दोनों में समन्वय बनाकर चलता है।

किसी से कोई दोष हो जाए या चिकित्सा आदि कारणों से दोष लग जाए तो आचार्य ही प्रायश्चित का निर्णय करता है। दोष शुद्धि में उचित प्रायश्चित्त की महत्त्वपूर्ण भूमिका

होती है। किसको कैसा प्रायश्चित्त देना यह निर्णय पात्र एवं शुद्धि के नियमों को ध्यान में रखकर किया जाता है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. इस कार्य में विचक्षण हैं। वे दोषानुरूप प्रायश्चित्त का विधान करने में प्रवीण हैं।

यदि किसी व्यक्ति की धर्म के प्रति श्रद्धा डगमग हो जाए अथवा धर्म तत्त्व में संदेह उत्पन्न हो जाए तो आचार्य उसे विभिन्न दृष्टान्तों एवं हेतुओं से धर्म-मार्ग में दृढ़ करते हैं। वे वाद विद्या में एवं तर्क द्वारा वस्तु तत्त्व को समझाने में निपुण होते हैं।

आचार्य की दृष्टि अध्यात्मनिष्ठ होती है। अतः वे आचार को आध्यात्मिकता के साथ जोड़ने के लिए प्रयत्नशील होते हैं। उनके सम्पर्क में आने वालों को भी वे दोष-निराकरण की साधना से जोड़ते हैं। अध्यात्मयोगी आचार्यश्री हस्ती के कृपापात्र शिष्य आचार्य श्री हीरा के आचार्यत्व में वीतराग ध्यान साधना शिविरों का निरन्तर आयोजन हो रहा है। इन शिविरों से संत-मण्डल, महासती मण्डल एवं गृहस्थ सभी लाभान्वित हो रहे हैं।

आचार्य में यह भी विशेषता होती है कि वे लोकोपकारी होते हैं। जन-जन के व्यक्तिगत जीवन एवं सामाजिक-जीवन को निर्मल एवं निर्दोष बनाने हेतु प्रयत्नशील होते हैं। आचार्यश्री हीरा में इस प्रकार का वैशिष्ट्य सम्प्राप्त है। वे बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, मदिरा आदि विभिन्न व्यसनों से आम लोगों को मुक्त करते हैं, मानसिक शान्ति के लिए उन्हें सामायिक एवं स्वाध्याय की साधना से जोड़ते हैं। जीवन को विकाररहित बनाने के लिए शीलव्रत एवं ध्यान-साधना का मार्ग प्रशस्त करते हैं। क्रोधादि कषायों पर नियन्त्रण करने हेतु संकल्प कराते हैं। सामाजिक जीवन में आई विकृतियों के निवारण हेतु रात्रि में सामूहिक भोज एवं व्यंजनों की असीमितता का प्रतिषेध करते हैं। वे करुणा एवं दया के सागर हैं। सबका मंगल एवं कल्याण चाहते हैं। उनके आचार्यत्व की उत्कृष्टता के लिए जितना कहा जाए, कम ही है।

रत्नसंघ में पहली बार सन्तों की संख्या 20 तक तथा महासतियों की संख्या 90 तक पहुँची है। आपके आचार्यकाल में 80 से अधिक दीक्षाएँ हो चुकी हैं। इसके पीछे आपकी आचारनिष्ठा एवं निर्मलदृष्टि भी एक हेतु है। आप संघ के विकास में सतत सजग रहते हुए भी एवं संघ के गौरव की अभिवृद्धि करते हुए भी अभियान की गन्ध से परहेज रखते हैं। इससे आचार्य के प्रति आदर में वृद्धि होती है।

आचार्य श्री हीरा के आचार्यकाल के रजतवर्ष में हम उनके प्रति ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की आराधना में मनोयोग से संलग्न होकर जीवन का उन्नयन करें एवं शुभता की ओर अग्रसर हों तो यह ऐसे आचार्य के प्रति सच्चा श्रद्धार्पण होगा।

जयतु आचार्यो हीराचन्द्रः।

जयतु जिनशासनम्। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा।
सज्झाय-एगंत-निसेवणा य, सुत्तत्थ-संचिंतणया धिई य।।
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी।।
न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 32.3-5

अर्थ- उस (एकान्त सुखस्वरूप मोक्ष) की प्राप्ति के लिए मार्ग है- 1. गुरुजनों एवं वृद्धजनों की सेवा, 2. बाल (अज्ञानी) जनों के संग का दूर से ही विवर्जन, 3. स्वाध्याय, 4. एकान्त सेवन, 5. सूत्र एवं उसके अर्थ पर सम्यक् चिन्तन, 6. धृति, 7. समाधि की कामना करने वाला साधक परिमित एवं एषणीय आहार की अभिलाषा रखे, 8. निपुण बुद्धि वाले के साथ रहे, 9. विविक्त (स्त्री-पुरुष एवं नपुंसक के संसर्ग से रहित एकान्त) स्थान की इच्छा करे। यदि अपने से अधिक गुणों वाला या समान गुण वाला सहायक न हो तो पापों को वर्जित करता हुआ कामभोगों में अनासक्त रहकर विचरण करे।

विवेचन- जो साधक एकान्त सुखस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति का अभिलाषी है, उसे साधु-जीवन में जिन बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए, उनका उल्लेख उपर्युक्त तीन गाथाओं में हुआ है। सबसे पहले साधु में विनय एवं वैयावृत्त्य का गुण होना चाहिए। जो विनयशील है वही वैयावृत्त्य (सेवा) कर सकता है। विनयशील को ज्ञान की प्राप्ति होती है तो वैयावृत्त्य करने वाले के कर्मों की विपुल निर्जरा होती है। विनय एवं वैयावृत्त्य गुणों का यहाँ पर संकेत गुरुजनों एवं वृद्धों की सेवा (गुरुविद्धसेवा) शब्दों से किया गया है। दूसरा संकेत यह किया गया है कि जो अज्ञानी जन हैं, उनके संग से दूर रहना चाहिए। अज्ञानीजन संसार एवं विषय कषायों की ही बातें करते हैं तथा उन्हीं में रुचि रखते हैं, अतः उनका संग करने पर उनके दोषों की कालिख साधक की विचारधारा एवं आचरण को मलिन बना सकती है, इसलिए जहाँ तक सम्भव हो अज्ञानियों के संग से दूर रहना चाहिए। जब तक स्वयं के विचार एवं आचार की परिपक्वता नहीं हुई है तब तक अज्ञानियों के संग से खतरा रहता है। उन्हें समझाना एवं बदलना भी कठिन कार्य होता है। स्वयं की शुद्धि के लक्ष्य से उन्हें उद्बोधन देना एवं उनके प्रति हित की भावना से उपदेश देना उचित है, किन्तु उनके साथ अधिक समय बिताना ठीक नहीं है।

साधक को आत्मोन्नति के लिए स्वाध्याय में तत्पर रहना चाहिए तथा अनुप्रेक्षा करने हेतु एकान्त का सेवन करना चाहिए। साधु की दिनचर्या का अधिकांश समय स्वाध्याय और ध्यान

में व्यतीत होना चाहिए। स्वाध्याय करके भी जो साधक ध्यान नहीं करता उसका स्वाध्याय आत्मशुद्धि में अधिक सहायक नहीं बन पाता है। स्वाध्याय के साथ ध्यान या एकान्तसेवन का उल्लेख इसीलिए किया गया है। एकान्त सेवन करता हुआ साधक सूत्र एवं अर्थ का सम्यक् चिन्तन करे। आगम में जो कहा गया है उसका क्या अभिप्राय है तथा यह मेरे जीवन में कैसे उपयोगी है, इस प्रकार का चिन्तन नियमित चलना चाहिए। इसके साथ एक महत्त्वपूर्ण शब्द दिया गया-धिई। धिई शब्द के दो अर्थ हैं- धारण करना एवं धैर्य। जो सूत्र एवं अर्थ का चिन्तन किया है उसके सन्देश को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। उसे अपने जीवन का अंग बना लेना चाहिए। साधु को जल्दबाजी में नहीं रहकर धैर्यपूर्वक प्रवृत्ति करनी चाहिए। समता में रहने का अभ्यास करना चाहिए। जो साधक सूत्रार्थ को धारण करता है, उसके अनुसार जीवन को नये सांचे में ढालता रहता है वह निरन्तर आत्मशुद्धि एवं आत्मिक उन्नति के मार्ग पर बढ़ता रहता है। धैर्यशील व्यक्ति का चित्त अनुद्विग्न एवं स्वस्थ होता है, अतः वह ज्ञान, श्रद्धा एवं आचरण में प्रगति कर सकता है।

शरीर एवं चित्त में समाधि की वांछा रखने वाला साधक परिमित एवं एषणीय आहार का सेवन करे। चित्त की स्वस्थता एवं साधना में आगे बढ़ने में गरिष्ठ एवं विकारोत्पादक आहार उचित नहीं होता। इसलिए साधक निर्दोष एवं सात्त्विक आहार की एषणा करे तथा उसे ग्रहण कर साधना में निरत रहे। एषणीय आहार वही है जो सात्त्विक हो तथा उत्पादना आदि दोषों से रहित हो। आहार का अधिक सेवन शरीर एवं चित्त दोनों को अस्वस्थ बनाता है, अतः साधक को परिमित आहार का ही सेवन करना चाहिए।

साधक को निपुणबुद्धि वाले व्यक्ति/साधक का सहयोग लेना चाहिए। उसका संग कर अपने ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की साधना को पुष्ट करना चाहिए। ऐसे स्थान पर ठहरना चाहिए जो वैषयिक वातावरण से पृथक् हो, जहाँ स्त्री-पुरुष-नपुंसक के माध्यम से कामादि विकार न बढ़ते हों, ऐसा विवेक योग्य स्थान ही ठहरने के लिए उपयुक्त है। हित-मित आहार का सेवन, निपुणबुद्धि वाले का सहयोग एवं विवेक योग्य स्थान में निवास से समाधि-शान्ति रहने की सम्भावना है।

यदि कोई निपुणबुद्धि वाला सहायक न मिले, अर्थात् गुणाधिक एवं गुणों में समान सहायक न मिले तो साधक अकेला ही पाप कार्यों का वर्जन करता हुआ काम-भोगों में अनासक्त रहकर विचरण करे।

उपर्युक्त तीन गाथाएँ उस साधक का मार्गदर्शन करती हैं जो दुःखविमोक्ष की साधना में संलग्न हुआ है। वह यदि उपर्युक्त निर्देशों को ध्यान में रखकर अपनी जीवनचर्या को साध लेगा तो निश्चित रूप से ज्ञान का पूर्ण प्रकाश कर सकेगा, अज्ञान-मोह का वर्जन कर सकेगा तथा राग एवं द्वेष का क्षय कर एकान्त सुखस्वरूप मोक्ष को प्राप्त कर सकेगा। **-सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मनुष्य को मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए न कि मल-ग्रहण करने वाली मक्खो के समान।
- पुत्र की अपेक्षा पुत्रियों में सुशिक्षा और सुसंस्कार इसलिए आवश्यक हैं कि उन्हें अपरिचित घरों में जाना तथा जीवनपर्यन्त वहीं रहना है।
- लड़की यदि सुशीला और संस्कारवती होगी तो परिवार को प्रेम के बल पर अविभक्त और अखण्ड रख सकेगी।
- जो विरोधाग्नि का मुकाबला शान्ति के शीतल जल से करते हैं, वे विरोधी को भी जीत लेते हैं।
- जो ज्ञानी होकर स्वयं जागृत हैं, जड़ पदार्थ उसे अपनी धारा में नहीं बहा सकते हैं।
- ये भौतिक तुच्छ वस्तुएँ साधारण मनुष्य के मन को हिलाकर अशान्त कर देती हैं किन्तु ज्ञानी पर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, उल्टे वह इन्हीं पर अपना प्रभाव जमा लेता है।
- वस्त्राभूषणों की तरह सादगी का भी असर कुछ कम महत्त्व वाला नहीं होता।
- राजमहल का विराट वैभव-प्रदर्शन यदि दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है तो एक सादी पावन कुटिया भी चित्त को आकर्षित किये बिना नहीं रहती।
- व्यक्ति-जागरण के बिना समाज-धर्म पुष्ट नहीं होता, कारण कि व्यक्तियों का समूह ही तो समाज है।
- पर्व के द्वारा सामूहिक साधना का पथ प्रशस्त होता है एवं इससे समुदाय को साधना करने की प्रेरणा मिलती है, जिससे राष्ट्रीय-जीवन का संतुलन बना रहता है।
- मनुष्य यदि अपनी वृत्ति, विवेकपूर्ण नहीं रखे तो वह दूसरों के लिए घातक भी बन सकता है।
- असंयत मानवता पशुता और दानवता से भी बढ़कर बर्बर मानी जाती है तथा 'स्व-पर' के लिए कषाय का कारण हो जाती है।
- साधना के मार्ग में लगकर यदि साधक प्रमाद में पड़ जाए तो कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।
- उपासना में तन्मयता अपेक्षित है, अन्यथा 'माया मिली न राम' की स्थिति होगी।
- श्रद्धा की दृढ़ता न होने से मनुष्य अनेक देव-देवी, जादू-टोना और अंधविश्वास के फेर में भटकते रहते हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

अस्थायी के मोह में न उलझें

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा महावीर नगर, जयपुर में 18 जुलाई 2012 को फरमाए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वन-विभाग, जयपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

संसार में मिले हुए योग का सदुपयोग कर आठों कर्मों को क्षय करने वाले सिद्ध भगवन्त, अनन्त ज्ञानी-अनन्त दर्शनी अरिहंत भगवन्त, और उसके सही उपयोग की साधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनमोल वाणी में योग मिलाने के लिये, साधना प्राप्त करने के लिये पुण्य की महिमा गायी गई है। जीव ने एक-एक घाटी पार करके निगोद से लेकर यहाँ तक पहुँचने में अनन्त-अनन्त पुण्य का उपार्जन किया। इस सम्बन्ध में बालोतरा में आचार्य भगवन्त (आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) ने एक गाथा फरमायी थी-

पिधानं दुर्गतिद्वारे, निधानं सर्वसम्पदाम्।
विधानं मोक्षसौख्यानां, पुण्यैः सम्यक्त्वमाप्यते।।

इन सद् योगों में, इन सही उपयोगों में, इस सदाचरण में, इस सत्पुरुषार्थ में यह ताकत है कि वह दुर्गति का द्वार रोक देता है। जितने-जितने अशुभ के बंध हैं, उतने-उतने दुःख हैं, ये सब पाप के परिणाम हैं। पाप को रोकना अत्यन्त कठिन है। किन्तु अशुभ भावों को रोकना आस्रव को रोकना, नरक और तिर्यंच के दरवाजे रोकना है। इसी तरह जितने शुभ योग हैं, जितने अच्छे साधन हैं, वे सब पुण्य के माध्यम से प्राप्त होते हैं।

तीसरी बात यह है कि पुण्य मोक्ष के सुख का विधान करने वाले हैं। पुण्य के द्वारा ही यह जीव घाटी पार करता है। पुण्य के द्वारा ही पंचेन्द्रिय जाति प्राप्त करता है, सम्यक्त्व प्राप्त करता है। पुण्य के माध्यम से यह जीव निर्वाण को प्राप्त करता है।

मैं और आप इस बात का चिन्तन करें कि हम कहाँ भटके हुए हैं। हम पुण्य के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ साधन पाकर भी नाम के, व्यक्ति के, स्थान के, शरीर के बंधन में भटक गये। कभी दूसरों के कार्य करना पड़ता है तो हमारा मन आगे बढ़ने की गवाही नहीं देता। अपना नाम होता हो तो व्यक्ति हर साथी के साथ काम करने को तैयार हो जाता है। मेहमान घर में आता है तो नाम के लिए पाँच पकवान खिलाने को तैयार हैं, लेकिन यदि दूसरे के घर में रहकर

चला जाए तो पहचानने को भी तैयार नहीं हैं। किसी साथी के साथ संबंध हैं, हर तरह का सहयोग करने को तैयार हूँ और यदि विपरीत विचार वाले के साथ है, तो वह पंसद नहीं है। थांने म्हारी सौगँध है, उठे नहीं जावणो। स्थान, नाम आदि के मोह में आकर बंधन के रास्ते पर जा रहे हैं। किन्तु इनमें स्थायित्व किसी का नहीं है, यह जान लें। न नाम स्थायी है, न स्थान स्थायी है, न साथी स्थायी है, सब अनित्य हैं। हम ऐसे उलझे हैं, कर्म बंधे तो बंधे, कोई परवाह नहीं है। म्है सब जाणा। मेरे भाई, विचार करो, जहाँ जाये जन्मे थे, जहाँ खेलेकूदे थे वह स्थान भी छूट गया। जहाँ बंधन में बंधे थे वह स्थान भी छूट गया, जहाँ चिता जलाई जाएगी, वह स्थान भी अपना नहीं रहेगा। आपसे पूछूँ आपमें से अपने जन्मे हुए स्थान में कौन-कौन बैठा है? (सभा में से कोई उत्तर नहीं)। फिर स्थान के साथ चिपके हुए क्यों रहते हो? व्यक्ति नाम के साथ चिपका रहता है, पर उसकी भी समय अवधि है, किसी के सालभर की, किसी के 5 साल की या अधिक, ये सब छूट जाएगा। जिस दिन यह समझ में आता है कि जिसके प्रति मेरा मोह है, उसमें कुछ भी स्थायी नहीं है तो व्यक्ति अशुभ को छोड़कर शुभ की ओर बढ़ जाता है। महासती छोगा जी 15 वर्ष की अवस्था भोपालगढ़ में 1955 में दीक्षित हो गए। संवत् 1940 का जन्म है। आप कितने साल के हो गये? अब क्या विचार है? आपने संयोग शुभ का पाया, शुभ स्थान, शुभ संगति, विचार शुभ मिले, पर भावना में शुभता नहीं आए तो साधना अधूरी। भावना में शुभता आनी चाहिये।

भोजन में श्वेत वस्तु आते ही भोजन का अंत। भोजन करते समय अन्त में श्वेत चावल आते हैं तो भोजन पूरा होने को आ जाता है। युद्ध में श्वेत ध्वज दिखाया जाता है, युद्ध विराम हो जाता है, शिर पर श्वेत बाल आना जीवन के अंत की सूचना करता है। ध्यान में शुक्लता आने पर संसार का अंत हो जाता है। चावल परोस दिया, इसका मतलब भोजन का अन्त होने वाला है। जीवन में शुक्ल ध्यान आते ही संसार का अंत आता है। यहाँ तो सारा माथा ही सफेद हो गया। अन्त किसका आया? दुकान का, पाप का, आस्रव का? किसका अन्त आया? 15 वर्ष की आयु में साध्वी बनने वाले, को देखकर हमारी शुभता, श्वेतता भावना बने, इस निमित्त को लेकर कहा जा रहा है। वे जसकंवर जी म.सा. के चरणों में दीक्षित हुए। संवत् 1975 में अजमेर में प्लेग फैल गया, कहीं बुखार, तो कहीं और बीमारी हुई। प्रान्त की बात, राष्ट्र की बात कहूँ तो पूरे राष्ट्र को संतप्त करने वाला रोग चला। एक नहीं, सैकड़ों नहीं, हजारों लोग काल कवलित हो गये। कोई लाल बुखार के नाम से बोलता, कोई काला बुखार के नाम से। जो भी इन रोगों की जो चपेट में आया वह चलता बना। नन्हा भी, जवान भी, बूढ़ा भी, सभी चले गये। आस्रव को छोड़कर जीने वाले संत-सती भी चले गये। एक को श्मशान में पहुँचा कर आते दूसरा श्मशान जाने के लिये

तैयार मिलता। पीपाड़ में भी ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई। आचार्य भगवन्त (पूज्य हस्ती) का पूरा परिवार चला गया। लाश पड़ी है, कोई ले जाने वाला नहीं मिला। ऐसी स्थितियाँ देखने वालों ने देखी है। ऐसी विभीषिका ही नहीं, छोटा-सा निमित्त भी जगाने में सहायक बन जाता है, अगर आपका पुरुषार्थ शुभ है तो।

मेघमुनि के जीव ने पूर्व भव में हाथी के रूप में छोटे से खरगोश को बचाने में तत्परता दिखाई। हजारों जीवों को मंडल बनाकर पूर्व भव में हाथी के जीव बचाने में जो प्राप्त नहीं हुआ, वह एक खरगोश को बचाने में मिल गया। संत जीवन में अकेले रहने पर कैसी स्थिति होती है। महासती छोगाजी म.सा. के सिंघाड़े की सभी सतियों का देवलोकगमन हो गया। इतना सब हो जाने के बाद शोक करने की आवश्यकता नहीं। किशनगढ़ पधारे, दूसरी अन्य सतियों के साथ रहे। इन्द्रकंवरजी म.सा. के साथ रहे। वहाँ भी रोग शुरू हुआ। सतियाँ काल कवलित हो गईं। बुखार के भयंकर रोग से भी ज्यादा रोग वहम का रोग होता है। वहम का रोग होता है तो अच्छे से अच्छे व्यक्ति को खराब मानने लग जाते हैं। मारवाड़ी में कहावत है- पुण्य छूटे तो तन रा कपड़ा भी वैरी हो जावै। यह नई बात नहीं है। महासतीजी ने सम्बल लिया, दुःख को समता से सहन किया। जोधपुर पहुँचे। महासतीजी को स्वप्न आया कि बहराने के लिये लडडू मिले, बहराने वाली बहन को स्वप्न आया है कि मैं छोगाजी म.सा. आएँ तो उनके पास दीक्षा लूँ। संवत् 1979 में आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. महामंदिर जोधपुर में विराज रहे थे। उस बहिन ने आचार्य श्री से पूछा- छोगाजी म.सा. कहाँ विराज रहे हैं? आचार्यश्री ने बताया बहन! छोगाजी म.सा. की जानकारी नहीं है। वह बहन पूछकर घर गई कि इधर छोगाजी म.सा. पधार गईं।

मूल बात है परिवार छूटा, स्थान भी, गुरुणी भी छूटी, नाम भी छूटा, साधु-संत भी छूटे। ये सब तो छूटने वाला ही है। आज नहीं तो कल छूट जाएगा, चलने वाला कोई नहीं है। हमारा मोह छूट जाएगा तो ये सब छूट जायेंगे। मन का मोह छूट गया तो सब छूट जायेंगे। इस छूटने की स्थिति में, विपरीत परिस्थितियों में महासतियाँ जी ने जिस तरह से शुभ परिणाम रखे, सहनशीलता के साथ सहन किया। आचार्य भगवन्त हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में अनेकों ने निवेदन किया निकाले हुए संतों को वापस ले लो, पर आचार्य भगवन्त का मानस नहीं बना, किन्तु महासतियाँजी ने निवेदन किया तो भगवन्त का मानस भी बना। महासतियाँजी कहीं भी रहे शुभ भावना में जोड़ते रहे। प्रवर्तिनी जी महासती सुन्दरकंवरजी म.सा. आहार करते हुए भी मांगलिक सुना देतीं। जो भी जिज्ञासा लेकर आता, समाधान कर देतीं। सागरमलजी म.सा. को सुनें, शुभ भावना वाले छोगाजी म.सा. के जीवन से प्रेरणा लें। शुभ भावनाए भायें। हो सके तो सहयोग करें, पर किसी के श्रेय कार्य में असहयोग

कर उसमें बाधा, अंतराय के निमित्त नहीं बनेंगे। ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे, जिससे शुभ से हटकर अशुभ में आएं। पुण्य क्या? मन का शुभयोग, वचन की शुभ वागरणा, काया की शुभ अवस्था पुण्य है। **परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्।** किसी का अच्छा कर सको तो करो, बुराई के समय निवृत्ति कर लो। किसी कार्य में कदाचित् सहयोग नहीं कर पाये, तो सहयोग करने वालों का विरोध नहीं करेंगे। अगर हम किसी स्थान, नाम, व्यक्ति को लेकर रुक गये तो आगे प्रगति बंद हो जाएगी। जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् होती है। पर जहाँ संघ का, समाज का विषय आता है वहाँ हम स्थान, व्यक्ति आदि को सहयोग देने के बजाय संघ-सेवा को महत्त्व देने का प्रयास करेंगे तो आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। हम निरन्तर प्रगति करते हुए संघ-सेवा में अपने समय श्रम को लगाएगें तो निश्चित सफल होंगे। इन्हीं भावों के साथ.......। ■

वीर भक्त कहलाने वालों, नव इतिहास रचाना है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

वीर भक्त कहलाने वालों, नव इतिहास रचाना है,
आया वक्त बड़ा बेढंगा, अपना धर्म बचाना है।
वीर भक्त कहलाने वालों.....।।टेर।।
कोई न भटके सद्राहों से, ऐसी तान गुँजाओ तुम।
सोये हुए जो अपने साथी, उनको शीघ्र जगाओ तुम।
मिलजुल करके हम सबको बस, धर्म का बाग सजाना है,
वीर भक्त कहलाने वालों.....।।1।।
घिर आए संकट के बादल, घोर अंधेरा छाया है,
संस्कारों को हमें बचाना, वक्त सामने आया है।
बच्चे-बच्चे के मन में अब, धर्म की ज्योति जगाना है,
वीर भक्त कहलाने वालों.....।।2।।
इतना ऊँचा धर्म मिला है, यह तो अपनी किस्मत है,
हम जैनी हैं, आज हमारी, चारों ओर ही इज्जत है।
अपनी गौरव गाथाओं का, इतिहास हमें दुहराना है,
वीर भक्त कहलाने वालों.....।।3।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

प्रवचन

जिन सरीखी जिनवाणी

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय कविवर श्री गौतममुनिजी म.सा. के द्वारा 23 अप्रेल, 2014 जोधपुर के सिंहपोल स्थानक में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन और सम्पादन साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

तीर्थंकर परमात्मा की सदेह अनुपस्थिति में उनकी वाणी उनकी विद्यमानता का एहसास कराती है। गणधरों द्वारा सूत्र रूप में गूंथी हुई उनकी वाणी में मुमुक्षुओं और जिज्ञासुओं को प्रभु के साक्षात् दर्शन होते हैं। परमात्मा की विद्यमानता का एहसास कराने वाली उनकी वाणी को पूर्वाचार्यों और विद्वानों ने आगम के रूप में बचाए रखा, यह उनका परम उपकार है। आगमों का स्वाध्याय, आगमाधारित अनुसंधान तथा सम्यक् आचरण करके हम परमात्मा की वाणी की उपासना कर सकते हैं, करनी चाहिये।

जिनवाणी की उपासना के लिए जिज्ञासा जरूरी है। जिज्ञासा के बगैर जिनवाणी की सही उपासना प्रायः नहीं हो पाती है। दो कारणों से जिज्ञासा जागृत नहीं हो पाती है- पूर्व जन्म के संस्कार और वर्तमान के निमित्त। सत्पुरुषार्थ और सत्संगति से इन दोनों ही कारणों को परास्त किया जा सकता है।

इस जीव की सुख-सुविधाओं से अनादिकालीन दोस्ती है। इसलिए वह बार-बार सुख-सुविधाओं की ओर दौड़ता है। अनेकविध त्याग-तप करते हुए भी उसे बाह्य सुख-सुविधाएँ आकर्षित करती हैं। रेल में सफर करते हुए कुछ घण्टों में ही सहयात्री से लगाव हो जाता है। कभी-कभी सहयात्री आपस में सम्पर्क-सूत्र का आदान-प्रदान भी करते हैं। घर में रहने वाले पालतू कुत्ते तथा मवेशियों से भी लगाव हो जाता है। जब कुछ दिन या कुछ देर तक किसी के साथ सम्पर्क से भी रागात्मक सम्बन्ध बन सकता है तो पुद्गलों से तो अनादिकालीन रिश्ता है। इसलिए पौद्गलिक सम्बन्ध तोड़ने के लिए सतत अभ्यास और निरन्तरता आवश्यक है। पुद्गलों से सम्बन्ध विसर्जित करने में अनेक व्यवधान पैदा हो सकते हैं और निर्धारित मर्यादाओं का अतिक्रमण भी हो सकता है। सारे पौद्गलिक सम्बन्ध अस्थायी और संयोगजनित होते हैं। आत्मा के स्थायी हित के लिए अस्थायी सम्बन्धों का परित्याग परम आवश्यक है।

पौद्गलिक सम्बन्धों के प्रति आसक्ति तोड़ने तथा इन सम्बन्धों को छोड़ने के लिए

समता का सतत अभ्यास आवश्यक है। एक महात्मा के पास पीतल का कमण्डलु था। वह बहुत ही चमकदार और दागरहित था। एक भक्त ने कमण्डलु की चमक का राज पूछा तो महात्मा ने कहा कि वे पीतल के कमण्डलु को रोज माँजते हैं। पीतल के कमण्डलु में चमक बाहर से नहीं आई। वह उसमें विद्यमान थी। बस, बाहर का मैल हटाना था। बाहर के मैल को हटाने के लिए उसे रोज माँजना होता था। आत्मा की चमक भी आत्मा के अन्दर ही विद्यमान है। बस, बाहर के पौद्गलिक आवरणों को हटाने के लिए नित्य नियमित अभ्यास आवश्यक है।

चिरकालीन रिश्ता होने से बाह्य वैभव और पौद्गलिक सौन्दर्य अच्छे-अच्छे साधकों को भी विचलित कर देता है। मगध सम्राट् श्रेणिक और उनकी पत्नी चेलना तीर्थंकर भगवान महावीर के दर्शन-वन्दन करने के लिए पहुँचे। श्रेणिक और चेलना अप्रतिम सौन्दर्य के धनी थे। भगवान् महावीर के कुछ साधु-साध्वी उनके सौन्दर्य को देखकर मुग्ध हो उठे और उन्होंने श्रेणिक-चेलना जैसा बनने का निदान कर लिया। पुद्गलों का आकर्षण साधकों को भी विचलित कर सकता है, इसलिए प्रतिपल सजग रहना चाहिये।

यदि कभी वस्त्र फट जाए तो उसकी तुरन्त सिलाई कर लेनी चाहिये। यदि कभी दोष लग जाए, मन में पलभर के लिए भी विकार पैदा हो जाए तो तुरन्त प्रायश्चित्त करके शुद्धि कर लेनी चाहिये। साधक को साधना में सतत लगे रहना, जुड़े रहना चाहिये। एक न एक दिन उसे अवश्य ही उसकी साधना का सुफल मिलेगा।

कितने ही लोग कहते हैं कि द्रव्य साधना या क्रियात्मक उपासना से क्या होने-जाने वाला है। कुछ लोग धर्म-ध्यान करते हैं, लेकिन उनका आचरण निराशाजनक होता है। इसलिए धर्म-ध्यान नहीं करने वालों को कहने का अवसर मिल जाता है कि कोरी क्रिया से कुछ नहीं होता है, 'दिल साफ होना चाहिये'। यह सच है कि धार्मिक क्रियाओं का सुप्रभाव जीवन व्यवहार में परिलक्षित होना चाहिये। जो लोग धर्म-क्रियाएँ करते हैं, उनका दायित्व बढ़ जाता है, उनसे अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं। लेकिन कुछ लोगों की कमजोरी की वज़ह से द्रव्य साधना को अनावश्यक और अनुपयोगी बतलाना भी ठीक नहीं है।

द्रव्य साधना की भी आवश्यकता और महत्ता होती है। धर्म क्रियाओं से जुड़े रहने से वातावरण बनता है। इसलिए 'दिल साफ होना चाहिये' कहने वालों का बुरा नहीं मानना चाहिये और व्यवहार में भी निष्ठा से धर्म को निभाना चाहिये। द्रव्य का भाव और भाव का द्रव्य पर प्रभाव होता है। धर्म क्रियाओं से जुड़े साधकों को अपनी अपूर्णता दूर करनी चाहिये। उनकी पूर्णता से दूसरों को भी उनकी क्रियात्मक अपूर्णता से अवगत करवाया जा सकता है।

द्रव्य साधना के प्रति उपेक्षा के कारण हमारी समृद्ध आचार-परम्परा से नई पीढ़ी

वंचित होती जा रही है। मुझे एक प्रसंग याद आता है। एक जैन घर में मुनिराज गोचरी के लिए पधारे तो घर के बालक ने महाराज के लिए कहा, "अंकल खाना लेने आए हैं!" हमारे महान् धर्म, संस्कृति और परम्पराओं की भाषात्मक, क्रियात्मक और भावनात्मक जानकारी नहीं होने से ऐसी 'अविनय' की स्थितियाँ बनती हैं। कई बार ऐसी असहज स्थितियाँ सुनने-देखने को मिल जाती हैं, जिनमें आचार और परम्परा के प्रति हमारा अज्ञान प्रकट होता है। जीवन के लिए तीन सूत्र महत्त्वपूर्ण हैं-

1. **जिज्ञासु भावः**- श्रद्धापूर्वक और विनयपूर्वक जानने और सीखने की तीव्र अभिलाषा रखना।
2. **साधना में निरन्तरताः**- समझ और सामर्थ्य के अनुसार व्रत-नियम ग्रहण करना और गृहीत व्रत-नियमों का बिना चूके निरन्तर पालन करना।
3. **लक्ष्य पर नज़रः**- हमारा लक्ष्य है सिद्धत्व को पाना। हर व्यक्ति को अपने लक्ष्य पर नज़र रखते हुए यह विचार करना चाहिये कि 'मुझे सिद्ध बनना है'। लक्ष्य-समर्पण से सारे प्रपंच, प्रमाद और कषाय छूट जाते हैं।

जीवन के समग्र विकास के लिए ये तीन सूत्र वरदानस्वरूप हैं। जीवन एवं जीवन का प्रतिक्षण दुर्लभ है। जीवन की इस दुर्लभता को जानकर हे चेतन! तू जाग और स्वयं को पहचान। तू सिंह के समान है, भेड़ मत बन। तू अपना अज्ञान दूर कर। अरिहन्त परमात्मा ने कहा है कि तू सिद्ध जैसा जीव है। अपने उस सिद्धत्व को जान और उसे प्रकट कर। तू यह चिन्तन कर कि पाप में रमना और विकारों में भटकना मेरा स्वभाव नहीं है। ऐसी सज़गता और साधना से कर्म का भार कम होगा। जैसे कर्जमुक्ति का उपाय है कि नया नहीं लेना और पुराना चुकाना, उसी प्रकार मुझे नये कर्मबंध से बचना है और पुराने कर्मों की निर्जरा करनी है। जम्बू स्वामी की तरह अनासक्त होकर, जिन सरीखी जिनवाणी की आराधना करके अनन्त संसार की दुःखभरी यात्रा को विराम देना है। ■

अच्छा बनने के लिए

आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज

1. अच्छा खाने के लिए नहीं, किन्तु अच्छा पचाने के लिए व्यायाम किया जाता है।
2. अच्छा बताने के लिए नहीं, किन्तु अच्छा जानने के लिए अध्ययन किया जाता है।
3. अच्छा दिखाने के लिए नहीं, किन्तु अच्छा बनने के लिए सदाचार का पालन किया जाता है।

अध्यात्म

दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (3)

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

53. सुख और समृद्धि के लिए संसार की किसी वस्तु आदि की आवश्यकता नहीं है; अपने कामना, ममता, लोभ-मोह आदि दुर्गुणों के त्याग की आवश्यकता है। दुर्गुणों के त्याग से शांति, मृदुता, सरलता आदि सद्गुणों की अभिव्यक्ति स्वतः हो जाती है। सद्गुणों की अभिव्यक्ति ही सच्ची समृद्धि व सुखानुभूति है।
54. अपने से भिन्न पदार्थों से संबंध जोड़ना ही बंधन है। संबंध-विच्छेद करना ही इनका त्याग करना है। त्याग करना ही बंधन मुक्त होना है। बंधन मुक्त होना ही दोषों व दुःखों से मुक्त होना है। यह ही सच्ची मुक्ति है।
55. विनाशी के संबंध के त्याग से अविनाशी (अमरत्व) की अनुभूति होती है।
56. कामना के त्याग में ही शांति व सम्पन्नता की अनुभूति होती है।
57. सुख की दासता के नाश में ही स्वाधीनता की अभिव्यक्ति होती है।
58. सुख में दुःख का दर्शन (अनुभव) करना ही दुःख का अंत करना है।
59. सुख की दासता समस्त दोषों और दुःखों की जननी है।
60. अपना सुख बांटना, दूसरों का दुःख बंटाना, उससे प्रमुदित होना अर्थात् सेवा करना सुख की दासता से मुक्त होना है।
61. सुखासक्ति की निवृत्ति विरक्ति से ही संभव है।
62. अपने से भिन्न से सुख चाहना राग है और अपना सुख बांटना प्रेम है। राग विकार व विभाव है, प्रेम स्वभाव है।
63. प्रेम का सुख क्षति, पूर्ति, निवृत्ति से रहित है।
64. प्रेम की अभिव्यक्ति में ही राग व काम का नाश है।
65. प्रेम स्वरूप से दिव्य, चिन्मय व नित्य है। प्रेम का क्रियात्मक रूप उदारता, करुणा, सेवा है।
66. 'उदारता' करुणा तथा प्रसन्नता की जननी है।
67. 'करुणा' व सेवा से सुखभोग की रुचि, आशा व दासता का नाश होता है।
68. प्रसन्नता से नीरसता मिट जाती है।
69. नीरसता का नाश होने पर जीवन में निर्विकारता आ जाती है।

70. करने में सावधान और होने में प्रसन्न रहने से जीवन दोषमुक्त व दुःखमुक्त हो जाता है।

71. सेवा से सुख की दासता और त्याग से दुःख के भय का नाश हो जाता है।

72. अपने अधिकारों के त्याग और दूसरों के अधिकारों की रक्षा से दोष व दुःख की उत्पत्ति नहीं होती है।

73. दूसरे के दुःख से करुणित होना, उसके दुःख को बाँटना अपने दुःख को मिटाना है।

74. सेवा संग्रह की रुचि व सुख की दासता मिटाने का साधन है।

75. अप्राप्त वस्तुओं की कामना, मिली हुई वस्तुओं की ममता के त्याग तथा उनका सेवा में सदुपयोग करने से आवश्यक वस्तुएँ स्वतः प्राप्त होने लगती हैं।

76. विकारों के त्याग से आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार की उन्नति स्वतः होती है।

77. सुख के पीछे दौड़ने पर सुख पकड़ में नहीं आता है। सुख से विमुख होते ही सुख स्वतः पीछे दौड़ने लगता है जैसे छाया के पीछे दौड़ने पर छाया पकड़ में नहीं आती है, छाया से विमुख होते ही छाया पीछे दौड़ने लगती है।

78. किसी भी प्रकार के सम्मान आदि की प्राप्ति के लिए यदि सेवा की जाती है तो वह सेवा सौदा है, सेवा नहीं।

79. सुख के प्रलोभन तथा दुःख के भय से किया गया कार्य चाहे वह संयम व त्याग ही हो, भोग है, साधना नहीं है।

80. सुख-दुःख का भोगी व्यक्ति सुख-दुःख में आबद्ध रहता है। सुख का बंधन निःस्वार्थ सेवा से और दुःख का बंधन त्याग से ही मिट सकता है। अतः सुख-दुःख के बंधन से मुक्त होने के लिए सेवा तथा त्याग को अपनाना अनिवार्य है।

81. दुःख की प्रतीति में सुख की आशा जगे तो यह दुःख का भोग है। आया हुआ दुःख सुख में भी दुःख का दर्शन करा दे तो यह दुःख का प्रभाव है।

82. कोई भी दुःख हो वह सुख-भोग का परिणाम है। इस तथ्य को स्वीकार कर दुःख से मुक्त होने के लिए सुख-भोग का त्याग करना दुःख का प्रभाव है। दुःख को किसी सुख व सामग्री से मिटाने का प्रयास करना व दुःख को सहन करते रहना परन्तु उसके कारण सुख की दासता का त्याग न करना दुःख का भोग है।

83. सुख की दासता व पराधीनता से मुक्त कराने के लिए ही दुःख आता है।

84. समस्त दुःख सुख की इच्छा, सुख की आशा व सुख के प्रलोभन से उत्पन्न होते हैं।

85. सुख का त्याग करते ही सुख-दुःख से अतीत के अलौकिक आनन्द का अनुभव हो जाता है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

अध्यात्म

धर्म को जीया जाता है

श्री रणजीतसिंह कूमट (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

वस्तु स्वभाव को धर्म कहा है (वत्थु सहावो धम्मो), अतः जो स्वभावतः एवं नैसर्गिक रूप से होता है वही धर्म है। धर्म को जीया जाता है।

स्वभाव और विभाव

स्वभाव में रहना और स्व में स्थित होना ही धर्म है और स्वभाव को छोड़ते हैं तो विभाव में चले जाते हैं। विभाव में जाना ही धर्म से विमुख होना है। स्वभाव में रहने के लिये कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। जो स्वतः हो रहा है उससे आत्मसात् होना ही स्वभाव में रहना है। जो स्वतः हो रहा है उसके साथ जब हम कुछ छेड़छाड़ करते हैं यथा राग या द्वेष जगाते हैं तो हम स्वभाव से विभाव में चले जाते हैं। जो हो रहा है उसमें से कुछ स्वभावतः अच्छा या सुखद लगेगा और कुछ दुःखद लगेगा। जब सुखद से चिपकने या उसे रोकने का प्रयास करते हैं तो हम राग जगाते हैं और जब दुःखद को हटाने या उससे बचने की कोशिश करते हैं तो द्वेष जगाते हैं। यह राग और द्वेष को जगाना ही विभाव में जाना है। अतः जो स्वतः हो रहा है उसे द्रष्टा भाव से जानना और उसके प्रति कुछ न कर समभाव में बने रहना ही धर्म है।

सामायिक का अर्थ सम-भाव

सामायिक का अर्थ है सम-भाव में रहना। सम भाव में यदि हम बने हुए हैं तो सामायिक हो रही है। इसके विपरीत सम भाव से हटने पर सामायिक समाप्त हो जाती है। समभाव में बने रहना ही सामायिक का मूल है, जो स्वभाव में बने रहने से ही संभव है।

विभाव में क्यों और कब जाते हैं

हम स्वभाव से विभाव में क्यों और कब जाते हैं? जब भी हम अपने प्रति, अपने कार्य और विचारों के प्रति जागरूक नहीं होते हैं, हम स्वभाव से विभाव में चले जाते हैं। विभाँव में जाने का मुख्य कारण है- कषाय का आगमन। कषाय के प्रति जागरूक न होने पर क्रोध, मान, माया और लोभ का आगमन होता है और उनके वशीभूत होकर राग व द्वेष जागते हैं और तब जागरूकता न होने से हम विभाव में चले जाते हैं; समभाव से दूर हो जाते हैं। स्वभाव का त्याग कर विभाव में चले जाते हैं। जब होश आता है तब हम पुनः स्वभाव में आते हैं। अतः विभाव में जाने का मुख्य कारण है जागरूकता का अभाव अर्थात् प्रमत्तता।

जब तक जागरूक नहीं हैं (हम प्रमत्त हैं), कषाय हमें विभाव में ले जाते रहेंगे।

स्वभाव से हम क्रोध नहीं करते। क्रोध आता है, लोभ और अहं के कारण। जब भी हमारे अहं को ठेस लगती है तब हम क्रोध करते हैं। जब हमारी चाही वस्तु की प्राप्ति में कोई अवरोध पैदा करता है या प्राप्त वस्तु से अलग होने का कारण बनता है तो हम उस पर क्रोध करते हैं। अतः स्वभाव में क्रोध न होते हुए भी क्रोध हम पर सवार होता है, क्योंकि लोभ और अहं के हम वशीभूत हैं। यह लोभ और अहं का अस्तित्व तब तक है जब तक हम इच्छाओं से ग्रस्त हैं। जब तक हम भौतिक जगत् की चकाचौंध से आकर्षित हैं, हमारा मन इच्छाओं से घिरा रहता है और इन्द्रियों की वासनाओं को पूरी करने में लगे रहते हैं। इच्छाएँ हमारे सामने पर्वत के समान खड़ी हैं। एक इच्छा को पूरा करते ही अन्य कई नई इच्छाओं का जन्म हो जाता है। इच्छाओं व वासनाओं को पूरा करने में एक होड़ लगी हुई है जो कभी समाप्त होने वाली नहीं है। तृष्णा का कोई अंत नहीं है। चाहे सुमेरु पर्वत सोने का बन जाये और हमारे कब्जे में आ जाय तब भी तृष्णा समाप्त होने वाली नहीं है। जब तक तृष्णा बनी हुई है, कषाय भी बने हुए हैं, अतः स्वभाव में रहना कठिन है। तृष्णा ही हमारे दुःख का मूल कारण है। जब हमारी इच्छा-अनुरूप कार्य न हो या इच्छा के प्रतिकूल कार्य हो तो दुःख होता है। इच्छा के पहाड़ समाप्त हुए बिना दुःख और सुख की कड़ी भी हमेशा बनी रहेगी। दुःख का अंत करने के लिए स्वभाव में आगमन करना ही होगा। कितनी ही धार्मिक क्रिया कर लें जब तक स्वभाव में आगमन नहीं होगा धर्म में आगमन नहीं होगा, धर्म में स्थित होने से ही दुःख का अंत होगा और इसके लिए स्वभाव में स्थित होना आवश्यक है।

कर्तृत्व भाव

'करने' में कर्तृत्व भाव (करने का भाव) रहता है। सामायिक, तप या कोई भी क्रिया करने में करने का भाव बना रहता है तो उसमें अहम् भाव जुड़ा होता है। जहाँ अहम् आ गया वहाँ क्रिया का मूल गुण गौण हो जायेगा। जब कोई चीज की जाती है तो उसकी गिनती भी होती है और अन्य से तुलना भी। कितनी सामायिक की? कितना तप किया? कितनी कठिन क्रिया की? उन सबका आकलन कर अहं का पोषण करने लगते हैं। यह सब धर्म और स्वभाव के प्रतिकूल प्रक्रिया है। अहं कषाय है और जब तक कषाय की उपस्थिति है, धर्म की अनुपस्थिति है। अतः कर्तृत्व भाव के तिरोहित होने पर ही अहं भाव समाप्त होगा और तब ही धर्म का प्रादुर्भाव होगा।

सिद्ध पुरुष की स्थिति और पहचान

यदि हम जागरूक हों और तृष्णा से विमुक्त हो जाएँ तो हम लोभ, अहं आदि कषाय के वश में न होंगे और तब क्रोध भी हम पर हावी नहीं होगा। कषाय पर नियंत्रण अथवा

विजय हो जाये तो हम स्वभाव में ही बने रहेंगे और विभाव में जाने का कोई कारण ही नहीं होगा। तब समता में ही रमण करेंगे और वही हमारा स्वभाव होगा। जो स्वभाव होगा वही हमारा धर्म होगा और उसके लिए कुछ और प्रयत्न की आवश्यकता ही नहीं रहेगी, हम अप्रयत्न हो जायेंगे। जो अप्रयत्न हो गया वह अकर्म हो गया। अब कुछ करने की आवश्यकता नहीं रही। इच्छारहित होते ही करने को कुछ शेष ही नहीं रहता। सिद्ध पुरुष की यही स्थिति है और यही पहचान है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि धर्म करना नहीं होता, जीना होता है, जीवन में धारण करना होता है। धारण करे वो धर्म है, बाकी सब दिखावा है। धर्म जीवन जीने की कला है। इसे क्रियाकाण्ड में न फंसा कर जीवन में उतारना है। सत्य, समता, प्रेम और दया जीवन में उतरने चाहिये तथा क्रोध आदि विकार दूर होने चाहिए तब ही हमारा जीवन सुख, शान्ति व समाधि से परिपूर्ण हो सकता है। अन्यथा सुख व शांति हमारे लिये मृगतृष्णा बन जायेंगे। सुख व समाधि हमारे अन्दर है और इसे जितना बाहर ढूँढेंगे उतना ही वे अप्राप्य हो जायेंगी।

-सी 1701, लेक प्रिम रोज, लेक होम्स फेज-IV पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

नव द्वार की काया पुरी

श्री सोहनलाल सिसोदिया

निबिड़ कल्मषमय निशा में, थक-भटक कर हर दिशा में।
पंक कण्टक पूर्ण राहें, विवश होकर पार की हैं।
आ बसा अब तू जहाँ पर, वह पुरी नव द्वार की है।।

विषय के कीड़े विषैले, नगर के हर द्वार फैले।
तीक्ष्ण है आघात उनकी, मधु-सनी तलवार सी है।
आ बसा अब तू जहाँ पर, वह पुरी नव द्वार की है।।

कर्म-कौशल युक्त सुन्दर, पुरुष वर हो या पुरन्दर।
द्वार-रक्षक बन खदेड़ो, सैन्य विषय-विकार की है।
आ बसा अब तू जहाँ पर, वह पुरी नव द्वार की है।।

"रीझ मत पर वस्तु जड़ पर, उदित कर निज में दिवाकर।"
योग-दर्शन सार है यह, और सब विस्तार ही है।
आ बसा अब तू जहाँ पर, वह पुरी नव द्वार की है।।

-बैंगलोर (कर्नाटक)

संगोष्ठी–आलेख

दिगम्बर परम्परा में रात्रिभोजन-त्याग के संदर्भ

प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन

जिनवाणी के नवम्बर एवं दिसम्बर के अंकों में रात्रिभोजन-त्याग सम्बन्धी आलेख प्रकाशित हुए थे। उसी क्रम में प्रस्तुत आलेख प्रकाशित है।–सम्पादक

शौरसेनी प्राकृत भाषा में निबद्ध दिगम्बर आगम एवं उत्तरवर्ती साहित्य में अनेक आचार्यों एवं रचनाकारों ने श्रमण–श्रावक धर्म का वर्णन किया है। श्रमण धर्म के अन्तर्गत महाव्रत सहित 28 मूलगुणों की चर्चा प्राप्त होती है तथा श्रावकधर्म के रूप में अणुव्रत सहित द्वादश व्रतों एवं 11 प्रतिमाओं की व्याख्या की गई है। आचार्य कुन्दकुन्दकृत प्रवचनसार एवं अष्टपाहुड, शिवार्य कृत भगवती आराधना, वट्टकेर कृत मूलाचार, उमास्वामिकृत तत्त्वार्थसूत्र, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती कृत क्षपणासार, अनेक आचार्यों कृत श्रावकाचार विषयक ग्रन्थ, वसुनन्दि श्रावकाचार, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, उमास्वामिकृत श्रावकाचार, अमितगतिकृत श्रावकाचार, पं. आशाधरकृत अनगार धर्मामृत, सागार धर्मामृत, सोमदेवसूरिकृत उपासकाध्ययन आदि अनेक ग्रन्थों की लम्बी परम्परा प्राप्त होती है।

अणुव्रत एवं महाव्रत जैनाचार की सीढ़ी के रूप में स्वीकार्य है, जिसके अभाव में चारित्र/संयम की साधना नहीं हो सकती। जैन परम्परा में श्रावक के लिए पाँच अणुव्रतों की पालना सहित बारह व्रतों का विधान किया गया है। कुछ आचार्यों ने रात्रिभोजन–त्याग को छठा अणुव्रत स्वीकार किया है।[1] श्रावकाचार के अन्तर्गत रात्रिभोजन–त्याग में महाव्रत की तरह पालन किया जाना अनिवार्य नहीं है, बल्कि विरताविरत नामक गुणस्थान के अनुरूप रात्रिभोजन के त्याग की सीमा इसमें निर्धारित की जाती है। यही कारण है कि पाक्षिक श्रावक के लिए कुछ अपवाद रात्रिभोजन–त्याग में स्वीकार किया गया है।[2] जहाँ कहा जाता है कि जल, दवा, पान व इलायची आदि को रात्रि में खाया या खिलाया जा सकता है। लेकिन छठे प्रतिमाधारी श्रावक को औषधि व जल आदि पदार्थ प्राणान्त के समय भी रात्रि में नहीं खाने चाहिए।[3] अर्थात् छठी प्रतिमा का धारक ही रात्रि में चारों प्रकार के आहार का

*** आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 11 एवं 12 अक्टूबर 2014 को कोटा में आयोजित 'रात्रिभोजन : समस्याएँ और समाधान' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।**

त्याग करता है। छठी प्रतिमा में जीव अतिचार रहित होने से रात्रिभोजन-त्याग करता है।

जैन परम्परा में मुनि/श्रमण धर्म के लिए मूलगुणों एवं उत्तर गुणों का विधान है। जिन गुणों का पालन प्रतिसमय अनिवार्य रूप से मुनि/श्रमण को करना होता है, वे गुण 'मूलगुण' कहलाते हैं, तथा इससे भिन्न अन्य सभी गुण, जिन्हें आवश्यकतानुसार पालना होता है, वे गुण 'उत्तरगुण' कहलाते हैं। मूलगुण दिगम्बर परम्परा में 28 एवं श्वेताम्बर परम्परा में 27 कहे गये हैं। मूलाचार में निरूपित 28 गुण इस प्रकार हैं[4]- 5 महाव्रत, 5 समिति, 5 इन्द्रिय-निग्रह, 6 आवश्यक, केशलोच, अचेलकत्व, अस्नान, क्षितिशयन, अदन्तधावन, खड़े रहकर भोजन एवं दिन में एक बार भोजन। इन 28 गुणों के अन्तर्गत दिन में एक बार भोजन के कथन से ही ज्ञात हो जाता है कि साधु रात्रि में आहार नहीं करता है। श्वेताम्बर परम्परा के उत्तराध्ययन सूत्र की बृहद्वृत्ति एवं आवश्यकवृत्ति में 27 गुणों के अन्तर्गत रात्रिभोजन-त्याग का भी सीधा उल्लेख हुआ है, किन्तु समवायांग सूत्र में जो 27 गुण गिनाए गए हैं, उनमें रात्रिभोजन-त्याग का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है।[5] सम्भव है यह नियम श्रमण-धर्म के पालन से पूर्व ही प्रारम्भ होने से उल्लेख न हुआ हो। उत्तराध्ययन एवं आवश्यक की टीकाओं में रात्रिभोजन-त्याग का निर्देश कर इस कमी को दूर किया गया है। यद्यपि रात्रिभोजन का त्याग तो 5 वें गुणस्थानवर्ती श्रावक के रूप में ही हो जाना चाहिए तथा होता भी है, लेकिन श्रमणों के मूल गुणों के अन्तर्गत टीकाओं में लिया जाना उसका स्पष्ट उल्लेख किए जाने की भावना ही प्रतीत होती है।

आचार्य वट्टकेर[6] ने मूलाचार में रात्रिभोजन-त्याग को 5 महाव्रतों की रक्षा के लिए दशवैकालिक आदि में हुए उल्लेख की भांति आवश्यक माना है। भगवती आराधना में भी इसी भावना से रात्रिभोजन-त्याग का निर्देश मिलता है।[7] दिगम्बर परम्परा के आचार्य देवसेन[8], चामुण्डराय[9], वीरनन्दी[10] एवं पं. आशाधर[11] आदि सभी ने महाव्रतों की रक्षार्थ इसे छठा व्रत स्वीकार किया है। जबकि अनेक आचार्यों ने श्रमण धर्म के लिए रात्रिभोजन को सर्वथा त्याज्य माना है। उनमें आचार्य पूज्यपाद[12], अकलंक[13], विद्यानन्द[14], श्रुतसागर[15] आदि प्रमुख टीकाकार हैं।

रात्रिभोजन-त्याग नामक व्रत श्रावकों की 11 प्रतिमाओं के अन्तर्गत स्वीकार किया जाता है। छठी प्रतिमाधारी श्रावक रात्रिभोजन का त्याग करता है। इसका उल्लेख दिगम्बर परम्परा की अनेक कृतियों में हुआ है। जिनमें चारित्रसार[16], समन्तभद्र कृत रत्नकरण्डक श्रावकाचार[17], कार्तिकेयानुप्रेक्षा[18], उपासकाध्ययन[19], वसुनन्दि श्रावकाचार[20], अमितगतिकृत श्रावकाचार[21], भावसंग्रह[22], सागार धर्मामृत[23] आदि प्रमुख हैं। श्वेताम्बर

परम्परा में छठी प्रतिमा का नाम 'अब्रह्म वर्जन प्रतिमा' है, जिसे दिगम्बर परम्परा में 'रात्रिभुक्ति विरति' के नाम से स्वीकार किया गया है। वे प्रतिमाएँ हैं- 1. दर्शन, 2. व्रत, 3. सामायिक, 4. पौषध, 5. सचित्त-त्याग, 6. रात्रि-भोजन-त्याग, 7. ब्रह्मचर्य, 8. आरम्भ-त्याग, 9. परिग्रह-त्याग, 10. अनुमति-त्याग, 11. उद्दिष्ट त्याग।

रात्रिभोजन त्याग का महत्त्व

रात्रिभोजन त्याग के विभिन्न संदर्भों को ध्यान में रखते हुए उसकी महत्ता को भी अनेक दृष्टिकोण से आंका जा सकता है। वैज्ञानिक दृष्टि, सामाजिक दृष्टि, वैयक्तिक दृष्टि एवं योगशास्त्रीय दृष्टि आदि सभी संदर्भ रात्रिभोजन त्याग की महत्ता के लिए आवश्यक हैं। जैन आचार्य समन्तभद्र के ग्रन्थ रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा गया है-

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्तविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः ।।142।।

अर्थात् रात्रि में चार प्रकार के आहार के त्याग का विधान किया गया है। इसके पीछे जीवों की हिंसा न करना तथा उनके प्रति अनुकम्पा भाव रखने की ही भावना होनी चाहिए।

रात्रिभोजन त्याग की वैज्ञानिक महत्ता के संदर्भ में अनेक बिन्दु दृष्टिगत होते हैं। विज्ञान से यह सिद्ध है कि रात्रि में पाचन तंत्र मुरझाए हुए फूल की तरह सिकुड़ जाता है। इसका कारण कार्बन-डाइ-ऑक्साइड की मात्रा का रात्रि में अधिक होना है। इसीलिए रात्रिकालीन भोजन पचाने में पाचन तंत्र स्वस्थतापूर्वक काम नहीं कर पाता है। अतः सूर्य की किरणों के समक्ष किया गया भोजन पाचन प्रक्रिया के अनुकूल होता है। यहाँ यह बात ध्यातव्य है कि सूर्य की किरणों में दो तरह की किरणें (1) INFRA-RED (2) ULTRA-VIOLET रहती हैं। इनमें एक प्रकार की किरण सूक्ष्म जीवों का विनाश करने में सहायक होती है, जबकि रात्रि में सूर्य की इन किरणों का अभाव होने से सूक्ष्म जीवोत्पत्ति अधिकाधिक कही गई है।

वैज्ञानिक दृष्टि से शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भी दिन में ही भोजन करना आवश्यक है, क्योंकि रात्रि में जीवोत्पत्ति की मात्रा अधिक होती है। व्यावहारिक दृष्टि से भी यह समझने योग्य है कि शरीर में होने वाले फोड़े-फुन्सी में मवाद अधिक मात्रा में रात्रि में ही बनती है। स्पष्ट है कि बैक्टीरिया की मात्रा रात्रि में अधिक होती है। इसलिए रात्रि में किया गया भोजन अनावश्यक जीव हिंसा का कारण बन जाता है।

रात्रिभोजन त्याग के सामाजिक महत्त्व की चर्चा करें तो यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति में अहिंसात्मक प्रवृत्ति का विकास करने के लिए रात्रिभोजन त्याग आवश्यक है। श्रावक की मर्यादा में यह भी आवश्यक है कि दिन में किया जाने वाला भोजन दिन में ही

पकाया गया हो। अर्थात् रात्रि में बना हुआ भोजन करने का निषेध हमारे आचार्यों ने किया है। वर्तमान युग में विवाह, जन्मोत्सव तथा अन्य अवसरों पर आयोजित किए जाने वाले भोज भी दिन में ही सम्पादित किए जाने चाहिए। इन महोत्सवों में रात्रिकालीन भोज का सर्वथा बहिष्कार किया जाना आज की प्रासंगिकता है। इसमें श्रावक के कर्तव्यों का पालन सहजता से हो जायेगा, साथ ही हिंसा के अनन्तानन्त दुष्परिणामों से बचा जा सकेगा।

रात्रिभोजन का त्याग वैयक्तिक दृष्टि से भी महत्त्व रखता है। सायंकालीन अथवा रात्रि का समय स्वाध्याय व आत्मकल्याण के कार्यों में नियोजित किया जाना चाहिए। यदि हम रात्रिभोजन नहीं करते हैं तो स्वाध्याय आदि के लिए पर्याप्त समय निकाला जा सकता है। इससे व्यक्ति की प्रज्ञा का विकास होता है और वह आत्मकल्याण की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

समाज में झूठी शान-शौकत के प्रदर्शन में फँसा हुआ व्यक्ति अपने-आपको अनावश्यक हिंसा का कारण बना लेता है। चाहकर भी वह उससे बच नहीं पाता। औपचारिकता एवं प्रतिष्ठा के वशीभूत होकर रात्रिभोजन नहीं करना चाहिए। संयमित, संतुलित एवं सुसंस्कृत भोजन करके शरीर को स्वस्थ रखना और धर्म की प्रभावना करना आज की आवश्यकता है।

रात्रिभोजन त्याग की महत्ता के इन विविध आयामों के आधार पर निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि दिन में किया हुआ भोजन हर दृष्टि से उत्तम है। हमारे प्राचीन जैन शास्त्रों में लिखा है- "**भुंजसु सूरे जं जिज्जे**" अर्थात् श्रमण उतना ही खाये कि सूर्य रहते वह जीर्ण (पच) हो जाये। यह बात भले ही श्रमण चर्या के संदर्भ में कही गई है, किन्तु मानव मात्र के लिए भी इसका पालन आवश्यक है।

महाभारत के शान्तिपर्व में रात्रि में भोजन करने का निषेध किया गया है। वहाँ लिखा है- "**वर्जनीया महाराजन् निशीथे भोजन-क्रिया।**" योगशास्त्र (3.67) में भी रात्रिभोजन त्याग का निर्देश है। वहाँ कहा गया है कि रात्रिभोजन करने वाले परलोक में कष्ट भोगते हैं तथा तिर्यंच गति में जन्म लेते हैं। अतः ये संदर्भ इस बात को सिद्ध करते हैं कि किसी भी दृष्टि से रात्रिभोजन करना उचित नहीं है।

संदर्भ सूचीः-

1. (क) सर्वार्थसिद्धि (पूज्यपाद) 7.1, "ननु च षष्ठमणुव्रतमस्ति........"
   (ख) राजवार्तिक (अकलंक), 7.1.15
   (ग) चारित्रसार, पृ.13, पंक्ति 3, "पंचधाणुव्रतं रात्र्यभुक्तिःषष्ठमणुव्रतं"
2. (क) सागारधर्मामृत (आशाधर पण्डित) 2.76,
   (ख) ला.सं. 2.42

3. लाटी सं. 2.43

4. मूलाचार (वट्टकेर), 1.2-3

पंचय महव्वयाइं समिदीओपंच जिणवरुदिट्ठा।

पंचेविंदियरोहा छप्पि य आवासया लोओ।।2।।

आचेलकमण्हाणं खिदिसयणमदंतघंसणं चेव।

ठिदिभोयणेयभत्तं मूलगुणा अट्ठवीसा दु।।3।।

5. (क) उत्तराध्ययन सूत्र 31.18 वृहद्वृत्ति, पत्र 6.6

(ख) आवश्यक हारिभद्रीयावृत्ति, पृ. 113

(ग) समवायांग, समवाय 27.1

6. मूलाचार- 112-113

7. भगवती आराधना, 6-1186, 1207

8. दर्शनसार, प्रकाशक, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, मुम्बई

9. चारित्रसार, पृ. 7, माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, मुम्बई

10. आचार सार (वीरनन्दी)5-70

11. अनगारधर्मामृत

12. सर्वार्थसिद्धि, 7.1, टीका पृ. 343-344

13. तत्त्वार्थराज वार्तिक, 7.1, टीका भाग 2, पृ. 534

14. तत्त्वार्थवार्तिक 7.1 की श्लोकवार्तिक टीका

15. तत्त्वार्थवृत्ति, 7.1

16. चारित्रसार, पृ.19 (चामुण्डराय)

17. रत्नकरण्डक श्रावकाचार- 142

18. कार्तिकेयानुप्रेक्षा- 382

19. उपासकाध्ययन, 853 (सोमदेवसूरि)

20. वसुनन्दिश्रावकाचार, गाथा-296

21. अमितगति कृत श्रावकाचार, 772

22. भावसंग्रह (देवसेन), 538

23. सागार धर्मामृत, 7.12

-अध्यक्ष, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग,

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

चिन्तन की मनोभूमि

संकलन : श्री सम्पतराज चौधरी

1. कर्त्तव्य-पालन में असमर्थता की बात मन में तभी आती है, जब हम प्राप्त सामर्थ्य का व्यय सुख-भोग में करने लगते हैं।
2. अप्राप्त की कामना यह सिद्ध करती है कि हमारे जीवन में दरिद्रता है। *-संतवाणी, भाग 5*
3. स्व-दोष देखने की दृष्टि का उत्पन्न होना भगवान की विशेष कृपा है।

-संत समागम, भाग 2

-14, वरदान अपार्टमेंटस्, 64, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

शोधालेख

लेश्या सिद्धान्त : एक विवेचन

डॉ. जवाहरलाल नाहटा

जैन आगमों में लेश्या की विभिन्न परिभाषाएँ मिलती हैं। अभयदेवसूरि ने लेश्या का शाब्दिक अर्थ संश्लेषण किया है। तदनुसार जीव, कर्म और पुद्गलों के योग, संश्लेषण और उनके प्रभाव को लेश्या कहा जाता है। गोम्मटसार के जीव काण्ड में कहा गया है कि जीव जिसके द्वारा अपने को पुण्य-पाप से लिप्त करता है- वह लेश्या है। नन्दी चूर्णि में लेश्या की व्याख्या रश्मि, आणविक आभा, कांति अथवा छाया के रूप में की गई है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि लेश्या जीव को प्रभावित करने वाला एक पौद्गलिक आवरण है। आत्मा की शुद्धि और अशुद्धि के साथ लेश्या का सम्बन्ध है।

पुद्गल की भाँति इसके भी चार मुख्य गुण हैं, यथा- रंग, रस, गंध और स्पर्श। इन गुणों में रंग अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि छह प्रकार की लेश्याओं का वर्गीकरण और नामकरण रंगों के आधार पर किया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के चौतीसवें अध्ययन में इसको 11 द्वारों में [1] विस्तार से अनेक उदाहरणों के साथ समझाया गया है। प्रज्ञापना के पद 17 में जीवों की गति में लेश्याओं के प्रभाव का विशद वर्णन मिलता है। तत्त्वार्थवार्तिक के चतुर्थ अध्याय के सूत्र 22 में निर्देश, वर्ण, परिणाम, संक्रम, कर्म-लक्षण, गति, स्वामित्व, साधन, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्प-बहुत्व इन सोलह अनुयोगों के साथ लेश्याओं का वर्णन आया है।[2] 'उत्तराध्ययन' के आधार पर छह लेश्याओं का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार से है-

1. **कृष्ण लेश्या**- इसका वर्ण काले मेघ, महिष शृंग, काक या अरीठे के फल, खंजन, अंजन और नयन तारा के समान होता है। इसका रस कड़वे तूम्बे, नीम, कटुक-रोहिणी (नीम गिलोय) से भी अनन्त गुना कड़वा होता है।
2. **नील लेश्या**- इसका वर्ण नील अशोक, चाष पक्षी के परों एवं नीलम के समान होता है और रस-सूंठ, पिप्पल, कालीमिर्च से भी अनन्त गुणा तीखा होता है।
3. **कापोत लेश्या**- इसका वर्ण अलसी के पुष्प एवं कबूतर की ग्रीवा के समान तथा रस कच्चे आम और कपित्थ के रस से अनन्त गुणा कसैला होता है।
4. **तेजो लेश्या**- इसका वर्ण हिंगुल, गेरु, नवोदित सूर्य, तोते की चोंच, दीपक की लौ

के समान तथा रस पके हुए आम और कपित्थ के रस से भी अनन्त गुणा खट्टा-मीठा होता है।

5. **पद्म लेश्या–** इसका वर्ण हरिताल, हल्दी, सन और असन पुष्प के समान होता है तथा रस मधु से अनन्त गुणा मीठा होता है।

6. **शुक्ल लेश्या–** इसका वर्ण शंख, कुंद पुष्प, दुग्ध, रजत एवं मुक्ता के समान तथा रस खजूर, दाख, शक्कर से भी अनन्त गुना मीठा होता है।

इन छह लेश्याओं में प्रथम तीन को अप्रशस्त अर्थात् अशुभ-लेश्या तथा अंतिम तीन को प्रशस्त अर्थात् शुभ-लेश्या कहा गया है। अप्रशस्त लेश्याओं की गंध मरे हुए पशुओं की गंध से भी अनन्त गुना दुर्गन्धमय होती है और प्रशस्त लेश्याओं की गंध सुगन्धित पुष्पों तथा चन्दन जैसे सुगन्धित पदार्थों की गंध से भी अनन्त गुणा सुगन्धमय होती है। इसी तरह स्पर्श गुण के अन्तर्गत करवत, गाय की जीभ और शाक वृक्ष के पत्तों से अनन्त गुणा कर्कश स्पर्श अप्रशस्त लेश्याओं का होता है और नवनीत, शिरीष पुष्प के मृदु स्पर्श से अनन्त गुणा मृदु स्पर्श प्रशस्त लेश्याओं का होता है। शास्त्रकार ने तीन-तीन के गुणकों में लेश्याओं के कुल 243 परिणाम बताये हैं। कृष्ण और नील लेश्या के परिणाम जघन्य, कापोत और तेजो लेश्या के परिणाम मध्यम और पद्म एवं शुक्ल लेश्या के परिणाम उत्कृष्ट श्रेणी में आते हैं। जीव अपने कर्मों के परिणाम स्वरूप सम्बन्धित लेश्याओं में परिणत हो जाता है। अर्थात् जीव पर उन कर्म लेश्याओं का पौद्गलिक आवरण चढ़ जाता है।

जो मनुष्य पाँच आस्रवों में प्रवृत्त है, पाप-पुण्य की चिन्ता न करते हुए विवेक रहित है, जिसका अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है, दया रहित होकर हिंसक कार्यों में लिप्त रहता है- वह कृष्ण लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मनुष्य ईर्ष्यालु, बुराई को ग्रहण करने वाला, तपस्या न करने वाला, अज्ञानी, मायावी और निर्लज्ज है तथा मूर्खतापूर्ण रसों में सुख का लालच करता है, वह नील लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मन, वचन और आचरण से कपटी है, अपने दोष छिपाने वाला है, धूर्त तथा चोर वृत्ति से ग्रसित है, वह कापोत लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मनुष्य नम्र, माया रहित, विनयी तथा समाधि, स्वाध्याय और धर्म में दृढ़ रहने वाला है, वह तेजो लेश्या के परिणाम वाला होता है। जिस मनुष्य के क्रोध-मान-माया-लोभ अति अल्प हैं, जो अपनी चित्तवृत्तियों का दमन करते हुए शान्त चित्त वाला है तथा अल्पभाषी जितेन्द्रिय है- वह पद्म लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मनुष्य आर्त्त और रौद्र ध्यान को त्याग कर धर्म और शुक्ल ध्यान में प्रशान्त चित्त रहता है, वह वीतराग जितेन्द्रिय शुक्ल लेश्यावाला होता है।

उपर्युक्त वर्णन में लेश्याओं के लक्षण और परिणामों को स्पष्ट किया गया है, जो

लेश्या अध्ययन का अधिकृत विषय है। उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 34 के अनुसार लेश्याएँ पौद्‌गलिक द्रव्य हैं, जो वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थान, स्थिति, गति और आयुष्य से युक्त होती हैं। लेश्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः जीव के कर्मों से है- जो जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट श्रेणी के परिणाम उत्पन्न करते हैं। केवल कर्म ही नहीं, जीव और द्रव्य की पौद्‌गलिक संरचना भी लेश्या से प्रभावित और निर्धारित होती है। इस दृष्टि से लेश्या के दो वर्ग होते हैं- द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या। भौतिक वस्तु के रूप, रंग, प्रकृति, गुण और प्रभाव का अध्ययन द्रव्य लेश्या के अन्तर्गत होता है तथा जीवों के मन, वचन और आचरण का विश्लेषण भाव लेश्या के अन्तर्गत होता है। लेश्या अध्ययन से यह भी निर्दिष्ट होता है कि जीव के कर्म और लेश्या का प्रभाव परस्पर है, अर्थात् लेश्या से कर्म प्रभावित होते हैं और कर्मों से लेश्या प्रभावित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि लेश्या कर्मों का कारण भी है और कार्य भी। संक्षेप में कहा जा सकता है कि लेश्या वह सिद्धान्त है जिसके द्वारा जीव और पुद्‌गल के पारस्परिक प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

लेश्या और त्रिगुणात्मक प्रकृति

लेश्या सिद्धान्त को सांख्य दर्शन की त्रिगुणात्मक प्रकृति के साथ अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। महर्षि कपिल का सांख्य दर्शन भी एक प्राचीन भारतीय दर्शन है। उत्तराध्ययन सूत्र और सांख्य दर्शन दोनों ईसा पूर्व 5 वीं शताब्दी से ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तक व्यवस्थित हो गये थे। सांख्य दर्शन के सत्त्व-रज-तम, ये तीन गुण और जैन दर्शन की छह लेश्याएँ तुलनात्मक दृष्टि से बहुत साम्य रखती हैं। जैन और सांख्य दोनों दर्शन द्वैतवादी हैं। जीव और अजीव की तरह सांख्य दर्शन में भी दो मूल अनादि तत्व- पुरुष और प्रकृति माने गये हैं। इन्हीं के संयोग से इस सृष्टि का विकास होता है। इस सृष्टि का सारा विस्तार त्रिगुणात्मक प्रकृति का विस्तार है। मूल प्रकृति में ये तीनों गुण साम्यावस्था में रहते हैं। पुरुष के संयोग से इन गुणों में विक्षोभ उत्पन्न हो जाता है और कार्य-कारण शृंखला के साथ प्रकृति का विकास प्रारम्भ हो जाता है। जैन दर्शन भी मानता है कि लोक में दो द्रव्य हैं- जीव और अजीव। दोनों ही अनादि और शाश्वत हैं। इस सृष्टि में जो कुछ भी है वह जीव और पुद्‌गलों का संयोग है। इन दोनों के संश्लेषण और संघात से सारे प्राणी और भूत पदार्थों की रचना होती है। यहाँ सांख्य से कुछ पार्थक्य है। सांख्य के अनुसार सृष्टि में पुरुष की भूमिका निष्क्रिय और उदासीन है। वह न किसी का कारण है और न कार्य। वह एक अविकारी कूटस्थ तत्त्व है। सारा विकार, विस्तार, परिवर्तन प्रकृति का होता है।

यहाँ विवेचनीय विषय यह है कि इस सृष्टि की जीव राशि और पौद्‌गलिक पदार्थों में इतनी विविधता क्यों है? शहद मीठा, नीम्बू खट्टा और नीम के फल कड़वे क्यों होते हैं?

बगीचे के फूलों में रंगों की विविधता क्यों और कहाँ से आती है? हांथी शान्त, बाघ हिंसक और शूकर आलसी क्यों होते हैं? एक ही माँ-बाप के तीन पुत्रों में एक बुद्धिमान, विवेकशील और दयालु, दूसरा कर्मठ, लोभी और विलासी तथा तीसरा मूर्ख और आलसी क्यों होता है? जैन दर्शन के अनुसार इन विविधताओं का कारण द्रव्य लेश्याएँ और भाव लेश्याएँ हैं, किन्तु सांख्य दर्शन की मान्यता यह है कि यह विविधता त्रिगुणात्मक प्रकृति के कारण है। सत्त्व, रज और तम ये तीन प्रकृति के गुण हैं। इन्हीं गुणों के संयुक्त प्रभाव से भूतों की प्रकृति, स्वभाव, कर्म और फल निर्धारित होते हैं।

जिस तरह लेश्याओं का अपना रंग, स्वाद, गंध, स्पर्श, गुण और प्रभाव होता है, उसी तरह सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का अपना रंग, स्वाद और प्रभाव होता है। सत्त्व को शुक्ल वर्ण का, रज को रक्त वर्ण का और तम को कृष्ण वर्ण का माना गया है। इसलिए रंग अपने से सम्बन्धित गुण के अनुसार मनुष्य के मन को प्रभावित करते हैं। इस सम्बन्ध में कवि बिहारी लाल का एक सार्थक दोहा उल्लेखनीय है-

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकी-झुकी परत जेहिं चितवत एक बार।।

अमृत, विष और मदिरा क्रमशः श्वेत, काले और लाल रंग से युक्त हैं। इनमें से जिस ओर, जो भी एक बार दृष्टिपात करले- वह तदनुसार जी जाता है, मर जाता है, लड़खड़ाता हुआ वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है।

प्रकृति के तीनों गुणों का यही प्रभाव है। गुण प्रत्यक्ष नहीं होते। सांसारिक विषयों की प्रकृति, स्वभाव और उनसे उत्पन्न फल को देखकर इनका अनुमान किया जाता है। सांख्यदर्शन के अनुसार जिस समय मनुष्य में ज्ञान-शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, उस समय अनुमान करना चाहिये कि यह सत्त्व गुण का प्रभाव है। रजो गुण चंचल होता है, जो मनुष्य की क्रियाशीलता में व्यक्त होता है और अहंकार उत्पन्न करता है। इसके प्रभाव से मनुष्य भोग के लिए विषयों पर अधिकार करना चाहता है। जब मन में कुछ करने का संकल्प, आसक्ति, कामना और लोभ का प्राबल्य हो, तो हमें रजोगुण का अनुमान करना चाहिये। तमोगुण सत्त्वगुण और रजोगुण के विपरीत है। तमोगुण का प्रभाव शरीर की जड़ता और निष्क्रिय मन के रूप में व्यक्त होता है। सत्त्व गुण ज्ञान को प्रकाशित करता है तो तमोगुण अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान को आवृत्त करता है। जब शरीर में काम करने की अनिच्छा, संकल्पहीनता, आलस्य, प्रमाद, निद्रा जैसे लक्षण दिखाई पड़ें तो हमें तमोगुण की वृद्धि का अनुमान करना चाहिये। इसी तरह हमारे मन के सारे भाव और शरीर की सारी क्रियाएँ सत्त्व, रज और तमोगुण की संयुक्त राशि से नियंत्रित होती है। मनुष्य सहित सारी जीवात्माएँ

त्रिगुणात्मक प्रकृति के बन्धन में बंधी हुई हैं।

सांख्यदर्शन के अनुसार भौतिक संसार के सारे पदार्थों की उत्पत्ति सत्त्व, रज और तमो गुण के संयोग से होती है। सूक्ष्म बुद्धि से लेकर स्थूल पत्थर में भी ये तीनों गुण पाये जाते हैं। कुछ पदार्थ सात्त्विक होते हैं, कुछ राजसिक और कुछ तामसिक। यह निर्णय उनके गुण और प्रभाव के आधार पर किया जा सकता है। जिस वस्तु में जो गुण प्रबल होता है, वह उसकी श्रेणी में आ जाती है। शेष दो गुण उस वस्तु में गौण रूप से स्थित होते हैं। अपने शुद्ध रूप में कोई गुण किसी कार्य का कारण नहीं बन सकता, न कोई प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। सृष्टि के निर्माण और विकास में तीनों गुणों का संयोग आवश्यक है। सात्त्विक वस्तुएँ लघु, हल्की, स्निग्ध, मधुर, सुगन्धित, प्रकाशयुक्त और ऊर्ध्वगामी होती हैं, जैसे- फूल, मक्खन, मधु, दीपशिखा इत्यादि। ऐसी वस्तुओं के सम्पर्क से हर्ष, आनन्द, आशा, संतोष और तृप्ति का बोध होता है। चंचल, गतिशील, तीक्ष्ण और नशीले पदार्थ रजोगुण युक्त होते हैं। इन पदार्थों का सेवन अहंकार, आसक्ति, लालसा, असन्तुष्टि, दुःख, रोग और वृद्धावस्था उत्पन्न करता है। काले रंग के भारी और अवरोध उत्पन्न करने वाले पदार्थ तमोगुणी होते हैं। तामसी पदार्थ हमें अज्ञान, अंधकार, निद्रा, आलस्य, अवसाद, निराशा और उदासीनता की ओर ले जाते हैं।

खाद्य पदार्थों का वर्गीकरण भी इन गुणों के आधार पर किया जाता है। गुणों का प्रत्यक्ष प्रभाव भोजन की विविध सामग्रियों के सेवन से लक्षित किया जा सकता है। सात्त्विक भोजन रसमय, स्निग्ध, स्वास्थ्यप्रद तथा हृदय को प्रिय होता है। ऐसा भोजन करने से स्वास्थ्य, सुख तथा तृप्ति प्राप्त होती है। कड़वे, खट्टे, नमकीन, अति गरम, चटपटे, रूखे और जलन उत्पन्न करने वाली आहार सामग्री रजोगुणी होती है। यह भोजन दुःख, शोक और रोग प्रदान करने वाला होता है। रस रहित, दुर्गन्ध युक्त, बासी, उच्छिष्ट और अपवित्र खाद्य सामग्री तामसी भोजन कहलाता है। ऐसे भोजन से शरीर में आलस्य, निद्रा और अकर्मण्यता की प्रवृत्ति होती है।

'आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः,
आयुःसत्त्वबलारोग्य-सुख-प्रीति-विवर्धना,
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकाः प्रिया।' – गीता, 17.7-8

इस तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृष्ण, शुक्ल इत्यादि छह लेश्याएँ और सत्त्व-रज-तम- ये तीन गुण तात्त्विक दृष्टि से एक ही हैं। पुरुष और प्रकृति अथवा जीव और पुद्गलों के संयोग-संश्लेषण और इस संश्लेषण के विविध पर्यायों का वर्गीकरण करने हेतु लेश्या सिद्धान्त अस्तित्व में आया और आत्मा की शुद्धि

अथवा अशुद्धि के कारण-कार्य के रूप में विकसित हुआ।

गोशालक और महावीर : उष्ण और शीतल तेजोलेश्या

लेश्या का एक अन्य विशिष्ट रूप हमें भगवान महावीर और गोशालक के कथा प्रसंगों में प्राप्त होता है। जैन आगमों में मंखलि गोशालक को एक योग भ्रष्ट साधक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पहले भगवान का शिष्य था, किन्तु तुच्छ एवं मलिन उद्देश्यों के कारण इसने अपना अलग पंथ बना लिया और महावीर का विरोध करने लगा। वह छह वर्ष तक भगवान के साथ रहा। एक बार उग्र बाल तपस्वी वैश्यायन के साथ दुर्व्यवहार करने और उसकी तपस्या में विघ्न डालने के कारण तपस्वी ने गोशालक को भस्म करने के लिए उष्ण तेजोलेश्या का प्रहार किया, किन्तु शिष्य के प्रति करुणा के कारण भगवान ने अपनी शीतल तेजोलेश्या से उस उष्ण तेजोलेश्या को नष्ट कर दिया। इससे गोशालक बच गया। गोशालक ने इसे चमत्कारिक शक्ति जानकर भगवान से आग्रह करके तेजोलेश्या प्राप्त करने की विधि जान ली और छह महीनों में इसको सिद्ध कर लिया। तेजोलेश्या तथा कुछ अन्य विद्याओं को जानकर गोशालक और अधिक अहंकारी हो गया। वह अपने आपको तीर्थंकर और सर्वज्ञ बताने लगा। भगवान महावीर से शत्रुता के कारण उसने भगवान के अनुयायी मुनियों को धमकाना शुरू कर दिया और नहीं मानने पर तेजोलेश्या का प्रयोग करने लगा। एक बार उसने भगवान पर भी तेजोलेश्या का प्रबल प्रहार किया। किन्तु इसका प्रभाव उलटा हुआ। वह लेश्या भगवान की परिक्रमा करके गोशालक को ही जलाने लगी। कथा में यह भी बताया गया है कि तेजोलेश्या तीर्थंकरों को जला नहीं सकती, किन्तु कष्ट अवश्य पहुँचा सकती है। इस लेश्या के विकिरण प्रभाव के कारण भगवान को मलद्वार से रक्तस्राव की पीड़ा हो गई।

यदि यह कथा केवल कथा नहीं है तो इसमें लेश्या से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण तात्त्विक बातें छिपी हुई हैं। क्या है गोशालक की उष्ण तेजोलेश्या और भगवान महावीर की शीतल तेजोलेश्या? परमाणु प्रक्षेपास्त्रों के युग में यदि हमारा चिन्तन इस तरफ आकर्षित हो तो यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं है।

नन्दी चूर्णि और बृहद्वृति (पत्र 650) के अनुसार लेश्या आँखों को चकाचौंध करने वाली एक तीव्र प्रकाश रश्मि (उष्ण तेजोलेश्या) अथवा स्निग्ध दीप्त रूप छाया (शीतल तेजोलेश्या) है-''**लेश्या अतीव चक्षुराक्षपिका स्निग्धदीप्तरूपा छाया**''।

भौतिक विज्ञान के अनुसार यदि इसका विवेचन करें तो, गोशालक द्वारा तेजोलेश्या का प्रक्षेपण दीर्घ गति की विद्युत् चुम्बकीय तरंगों का विकिरण है। जिन तत्त्वों के परमाणु नाभिक स्वतः अल्फा, बीटा, गामा किरणें उत्सर्जित करते हैं, उनसे रेडियो सक्रिय विकिरण

होता है। इनमें गामा किरणें बहुत खतरनाक होती हैं। इनकी वेधन क्षमता अत्यधिक होती है, जो लोहे को भी काट सकती हैं, गला सकती हैं। इसी तरह एक्स किरणें भी होती हैं जिनका रेडियोलोजी के तहत नियंत्रित उपयोग चिकित्सा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में होता है। जिस तरह परमाणुओं को खण्डित करके विद्युत् चुम्बकीय तरंगों का प्रयोग परमाणु प्रक्षेपास्त्रों जैसे विनाशकारी कार्यों में और ऊर्जा उत्पादन जैसे कल्याणकारी कार्यों में किया जाता है उसी तरह तेजोलेश्या का प्रयोग गोशालक और भगवान महावीर ने किया। इस दृष्टि से तेजोलेश्या उच्च दीर्घ गति की प्रकाश तरंगों का शक्तिपात है।

लेश्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः रंगों से है। भौतिक विज्ञान के अनुसार रंग, प्रकाश और ऊर्जा तीनों परस्पर सम्बन्धित द्रव्य हैं। रंग प्रकाश का ही रूप है और प्रकाश एक प्रकार की ऊष्मा-ऊर्जा है जो विद्युत चुम्बकीय तरंगों में संचरण करती है। प्रत्येक पदार्थ की एक विशिष्ट उष्मा होती है और उस उष्मा के तापमान के अनुसार उसका रंग होता है। दूरस्थ तारों का तापमान उनके रंगों से ज्ञात किया जाता है। इसी तरह पृथ्वी के गर्भ में स्थित तत्त्वों की खोज एवं शरीर के आन्तरिक अवयवों की बहुत सी जानकारी यंत्रों द्वारा उनके विशिष्ट ताप और रंग के आधार पर की जाती है। वस्तु के तापमान में परिवर्तन के साथ-साथ उनके रंग विकिरण में भी परिवर्तन हो जाता है। प्रकाश, रंग और ऊर्जा का जो पारस्परिक सम्बन्ध भौतिक विज्ञान ने सिद्ध किया है, उनसे मिलती-जुलती बहुत सी जानकारी लेश्या सिद्धान्त में लक्षित की जा सकती है। प्रकाश की विद्युत् चुम्बकीय तरंगें अपनी शक्ति, गति और तरंग दैर्घ्य (वेव लेन्थ) के अनुसार अपना प्रभाव उत्पन्न करती हैं। प्रकाश की शक्तिशाली लेजर तरंगें वस्तुओं को भाप बनाकर उड़ा देती हैं, उसी तरह गोशालक तेजोलेश्या का प्रयोग मुनियों को भस्मीभूत करने के लिए करता है। इसके विपरीत महावीर की करुणामय शीतल तेजोलेश्या सूर्य के प्रकाश से मिलने वाले स्निग्ध ताप की तरह जीवन का परिपोषण करती है और रक्षा करती है। जैन आगमों में लेश्याओं का वर्ण-वर्गीकरण और प्रभाव जिस तरह वर्णित हुआ है वह द्रव्य की संरचना में प्रकाश-रंग-ताप और ऊर्जा के भौतिक सिद्धान्तों का सूक्ष्म निदर्शन है।

प्रज्ञापनासूत्र के वृत्तिकार ने लेश्याओं को योग परिणाम कहा है- 'योगपरिणामो लेश्या' यह योग परिणाम कर्मों पर निर्भर करता है। कर्म यदि अशुभ हो तो उनका योग परिणाम जघन्य, निम्नगामी ही होगा और शुभ कर्मों का योग परिणाम प्रशस्त और ऊर्ध्वगामी होगा। भगवान महावीर और गोशालक से सम्बन्धित तेजोलेश्या के कथा प्रसंग की समीक्षा इस दृष्टि से भी की जा सकती है। पातंजल योग दर्शन में बताया गया है कि योग साधना के समय योगी को विविध प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। योग दर्शन के विभूति पाद में

अणिमा आदि आठ सिद्धियों का वर्णन मिलता है। इनमें 'ईशित्व' नाम की एक सिद्धि है, जिसके प्राप्त होने पर योगी भौतिक पदार्थों को नाना रूपों में उत्पन्न करने और उनका इच्छानुसार संचालन करने की सामर्थ्य पा लेता है (योग दर्शन : विभूतिपाद-45) किन्तु समाधि की सिद्धि में ये सिद्धियाँ विघ्न स्वरूप हैं (योग दर्शन : 3/37) सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चरित्र के अभाव में ये सिद्धियाँ विनाशकारी होती हैं। गोशालक के साथ भी ऐसा ही हुआ। अपने अहंकार और दुश्चरित्र के कारण उसने तेजोलेश्या की शक्ति का प्रयोग निकृष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया। इस योग के जघन्य परिणाम स्वरूप वह अपनी साधना से च्युत हो गया और अपने पतन का कारण बना। गोशालक की कथा द्वारा शास्त्रकार ने यह स्पष्ट किया है कि शक्ति का असम्यक् उपयोग विनाशकारी और सम्यक् उपयोग कल्याणकारी होता है।

संदर्भः-

1. नामाइं वण्ण-रस-गंध-फास-परिणाम-लक्खणं।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे।- उत्तराध्ययनसूत्र, 34.1

2. निर्देश वर्णपरिणामसंक्रमकर्मलक्षणगतिस्वामित्वसाधनसंख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तर भावाल्प-बहुत्वैश्च साध्या लेश्याः।-तत्त्वार्थवार्तिक, 4,22.10

-एसोशिएट प्रोफेसर (से.नि.), आरण्यक, गली नं.2, बरपेटा रोड़-781315 (असम)

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

भव दुःख से उबार

संसार का सुख कांटे
की तरह चुभेगा,
तब ही इस भव
दुःख से उबरेगा।

देहातीत

हे आत्मसाधक!
हो जा देहातीत
फिर नहीं होगा तन की
बिमारी से भयभीत।

साधना में दम

जो समझते हैं स्वयं को
किसी से अधिक या कम,
उनकी साधना में नहीं है
अभी तक दम।
(णो हीणे णो अइरिते- आचारांग)

संसार रिक्त

चित्त में जब तक भरा है वित्त,
तब तक नहीं होगा
संसार रिक्त (परीत)।

-संकलित

प्रासङ्गिक

विद्वानों को प्रोत्साहन आवश्यक

डॉ. दिलीप धींग

किसी भी परम्परा, धर्म और संस्कृति का मूलाधार उसका साहित्य, तत्त्वज्ञान और दर्शन होता है। ज्ञान और दर्शन के विभिन्न पहलुओं को विद्वान, साहित्यकार, कवि और विचारक अपनी प्रतिभा, योग्यता और मनीषा से भाँति-भाँति से विवेचित करके उन्हें युगानुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। इस तरह एक सच्चा रचनाकार युगद्रष्टा होता है और युगस्रष्टा भी। रचनाकार को एक ओर ज्ञान के उपलब्ध मूल स्रोतों से जुड़ा रहना पड़ता है, दूसरी ओर उसे वर्तमान समय का विशेषज्ञ होना पड़ता है। इस प्रकार की ज्ञानाराधना में उसे एक जिज्ञासु, विद्यार्थी, शोधार्थी और प्रयोगधर्मी की भाँति साधना करनी होती है। ऐसी साधना के फलस्वरूप ही अभिनव, मौलिक, उपयोगी, प्रभावी और कालजयी सृजन संभव हो पाता है। ऐसी सर्जनधर्मिता से अधिकाधिक लोगों के जीवन में ज्ञान की महिमा के प्रति आकर्षण बढ़ता है और ज्ञानार्जन की एक परम्परा का विकास होता है। ज्ञान की इस परम्परा के विकास के लिए समाज में समय-समय पर विद्वानों के प्रोत्साहन के बारे में विचार होता रहा है। लेकिन कुछ दीर्घद्रष्टा युगमनीषी व्यक्ति ही ऐसे उपयोगी विचार को मूर्त रूप देने के लिए पहल कर पाते हैं।

समय-समय पर अनेक सन्तों, आचार्यों, उदारमनाओं और नेतृत्वकर्ताओं ने ज्ञानाराधना, ज्ञान-विकास और ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए कई स्तरों पर उल्लेखनीय कार्य किये। ज्ञान को उन्होंने जीवन की सच्ची पूंजी माना। साहित्य सर्जन और लेखन को प्रोत्साहित किया। उन दूरदर्शी महामनाओं ने अनेक ज्ञानभण्डार और ग्रंथालय बनाये और उनमें हमारे विपुल श्रुतज्ञान और इतिहास को सुरक्षित करवाया। विद्वानों को तैयार करके धर्म और संस्कृति के प्रचारार्थ उन्हें देश-विदेश में भेजा।

जैन आगम और साहित्य ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोष है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के अनेक सूत्रों, तथ्यों व विषयों के मूल स्रोत और सन्दर्भ भी जैनागमों, प्राचीन व अर्वाचीन जैन साहित्य और भारतीय साहित्य में प्राप्त होते रहे हैं। यही वज़ह है कि देश-विदेश के जैन-जैनेतर जिज्ञासु और विद्वान हमेशा से जैन तत्त्वज्ञान के प्रति आकर्षित होते रहे हैं। पाश्चात्त्य विद्वान डॉ. हर्मन जेकोबी, विण्टरनित्स आदि के योगदान से जैनविद्या के अध्येता अपरिचित नहीं हैं। पिछली सदी में जैनविद्या और अनुसंधान के क्षेत्र में जो कार्य हुआ, उसके पीछे ऐसे मनीषियों की प्रेरणा भी एक निमित्त बनी।

जैनविद्या, जैन तत्त्वज्ञान और जैन दर्शन की वैज्ञानिकता से प्रभावित होकर जैनेतर परम्परा के अनेक मनीषियों ने भी अपना जीवन पूर्ण या आंशिक रूप में जैन धर्म, दर्शन और संस्कृति के अध्ययन, लेखन, संवर्द्धन और अनुसंधान में लगा दिया। ऐसे मनीषियों में गृहस्थ थे तो सन्त भी थे। जब जैनेतर कुल में जन्म लेने वाले मनीषियों ने भी जैनविद्या के विकास के लिए अद्‌भुत कार्य किया तो मौजूदा जैन समाजवेत्ताओं का यह परम कर्त्तव्य बनता है कि वे श्रुत साहित्य तथा जैनविद्या के विकास के लिए सुनियोजित ढंग से स्थायी महत्त्व के कार्यों को आगे बढ़ाएँ। इस सम्बन्ध में वरिष्ठ और समर्थ जैन विद्वानों से भी यह अपेक्षा है कि वे विद्वानों की नई पीढ़ी तैयार करने और उन्हें प्रोत्साहित करने में अपना सकारात्मक योगदान करें।

अनेक विद्वान आचार्यों, उपाध्यायों और सन्तों के ज्ञान-विकास में गृहस्थ-विद्वानों का योगदान भी रहा है। यह योगदान, जैन और जैनेतर, दोनों ही परम्पराओं में जन्मे विद्वानों का रहा। एक बार पंडित सदासुखदासजी ने जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज को व्यंग्यपूर्वक कहा - "पढ़े लिखे जैन सन्त साधारण ब्राह्मण की बराबरी नहीं कर सकते हैं।" भले ही यह कथन सही नहीं था, लेकिन इस उपहासपूर्ण कथन को उन्होंने प्रेरणा के रूप में लिया। वे स्वयं आगम व इतिहास के गहन अध्येता तथा ऊँचे दर्जे के विद्वान तो बने ही; साथ ही उन्होंने विद्वानों के निर्माण और उनके यथेष्ट मान-मूल्यांकन के लिए अनेक विशिष्ट प्रयास किये। उन्होंने समाज को विद्या के इस शुष्क क्षेत्र को हरा-भरा करने की प्रबल प्रेरणाएँ दीं।

आज दुनिया अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। मौजूदा समय की समस्याओं का समाधान आगम-वाणी और आप्त-वचनों में समाया हुआ है। कोरी विद्वत्ता या शुष्क पांडित्य के आधार पर तो समस्याओं का समाधान हो नहीं सकता, लेकिन 'पढमं नाणं तओ दया' के अनुसार ज्ञान बहुत आवश्यक है। विद्वान जब ज्ञानी बनने लगता है तो वह जीवन और जगत की समस्याओं को सकारात्मक तरीके से सुलझाने की पात्रता अर्जित करने लगता है। सच्चे विद्वान का यह कर्त्तव्य भी होता है कि वह अपनी ज्ञान-शक्ति से समस्याओं के समाधान, बुराइयों के समापन और भ्रान्तियों के निवारण में योगदान करे। जीवन की अंधेरी गुफा में ज्ञान दीपज्योति है। इतिहास, समय और समाज की अनेक गुत्थियाँ और उलझनें ज्ञान की रोशनी में सुलझाई जा सकती हैं। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में ज्ञान, ज्ञानोपासना और ज्ञान-उपासकों का प्रचुर लाभ समाज को अनेक रूपों में मिलता है और सदियों-सदियों तक मिलता रहता है।

ज्ञान की महिमा यह है कि तीर्थंकर भगवान अपनी देशना में पहले श्रुतधर्म का प्रवर्तन

करते हैं और उसके बाद चारित्र धर्म का। ज्ञाताधर्मकथांग के अन्तर्गत तीर्थंकर नाम गोत्र उपार्जन के बीस बोलों में से अनेक बोल ज्ञान की उत्कृष्ट आराधना से सम्बन्धित हैं। जैसे- प्रवचन (श्रुतज्ञान) और बहुश्रुत की भक्ति और सेवा, ज्ञान में निरन्तर उपयोग तथा अपूर्व ज्ञान का अभ्यास करने से तीर्थंकर बनने की अर्हता अर्जित की जा सकती है। इन बोलों में ज्ञान और ज्ञानी, दोनों के समुचित समादर एवं ज्ञान की उपासना की बात कही गई है। सामायिक तीन प्रकार की बताई गई है- दर्शन, श्रुत और चारित्र सामायिक। सम्यक् ज्ञान की आराधना करना श्रुत सामायिक के अन्तर्गत आता है। स्वाध्याय को आन्तरिक तप के रूप में परिगणित करके भगवान ने ज्ञानाराधना को निर्जरा का कारण बताया है।

वस्तुत: ज्ञान और ज्ञान-साधना की महिमा अपरम्पार है। इसीलिए साहित्य और साहित्यकारों का महत्त्व हर कालखण्ड में रहा है। जहाँ साहित्यकारों और विद्वानों का पूरा मान-मूल्यांकन होता है, वहाँ संस्कृति और समाज की विशेष उन्नति होती है। संस्कृति-रक्षा का एक प्रमुख उपाय शास्त्र-रक्षा है। शास्त्र की रक्षा का आशय, शास्त्र को प्रकाशित करके या करवाकर अलमारियों में सजा देना मात्र ही नहीं है। शास्त्ररक्षार्थ और शास्त्रोद्धार के लिए पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन, शोध-अनुसंधान, अनुवाद-विवेचन आदि करना, करवाना और करने वालों को सहयोग प्रदान करना होता है। नवीन मौलिक सर्जन, अनुसंधान, युगीन लेखन, चिन्तन, प्रयोग और विवेचन से ज्ञान के नये क्षितिज खुलते हैं और नया ज्ञानालोक प्रसारित होता है। विद्वानों, साहित्यकारों और विचारकों के इस प्रकार के योगदान से समाज और संस्कृति को जो लाभ होता है, वह अमाप, अगणनीय और अनमोल होता है।

किसी भी देश और समाज में तीन वर्गों का विशेष स्थान होता है- सन्त, सिपाही और साहित्यकार। सन्तों का पूरा ध्यान समाज रखता है। सिपाही का ध्यान शासन की ओर से रखा जाता है, देश के बजट का बड़ा हिस्सा सेना के लिए नियोजित/आवंटित होता है। अब बचता है साहित्यकार। पहली बात तो श्रेष्ठ साहित्यकारों का अभाव है। दूसरी बात है कि समाज को उनकी कोई विशेष फिक्र नहीं है। समाज में बड़े-बड़े कार्यक्रम होते हैं। वहाँ शासन, प्रशासन, न्याय और व्यवसाय क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों का बोलबाला रहता है। उनकी अपनी महत्ता है, लेकिन विद्वानों की उपेक्षा अनुचित है। समाज और संस्कृति के उत्कर्ष में जिस प्रकार उनकी भूमिका होती है, उसी प्रकार साहित्यकारों और विद्वानों की भूमिका भी होती है। अत: उन्हें भी पर्याप्त महत्त्व मिलना चाहिये। समाज के कार्यक्रमों में जैसे पद और पैसे वालों को बुलाया जाता है, वैसे ही ज्ञान की आराधना करने वालों को भी बुलाना चाहिये। इससे समाज में सन्तुलन बनेगा। लक्ष्मी और सरस्वती, ज्ञान और धन का

जब समान सम्मान होगा तो सर्वांगीण प्रगति की राह प्रशस्त होगी।

समाज साक्षी है कि खेल, सिनेमा (फिल्म) आदि में खिलाड़ियों, कलाकारों को जबरदस्त महत्त्व, प्रोत्साहन, यश और सम्मान मिलता है। सरकार और मीडिया के द्वारा भी उन्हें तरह-तरह से प्रोत्साहित किया जाता है। सिनेमा तथा सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र में तो लेखकों और कवियों को भी उत्साहवर्धक पारिश्रमिक और प्रचुर मान-सम्मान मिलता है। लेकिन जैन साहित्य के क्षेत्र में वैसी बात नहीं है। यथेष्ट मान और सम्मानपूर्ण मानदेय के अभाव में सत्साहित्य की धाराएँ सूखने लगती हैं। पूरे जैन समाज को इस विषय पर गौर करना चाहिये। यह आज या कल की बात नहीं है। सुदीर्घ भविष्य की दृष्टि से, पंथ और आम्नाय के भेदों को उपेक्षित करते हुए इस पर विचार किया जाना चाहिये।

इस सम्बन्ध में यदि निजी क्षेत्र में रहकर या व्यक्तिगत स्तर पर श्रुत साहित्य की उपासना की बात हो तो स्थितियाँ अधिक विकट बन जाती हैं। ऐसी विकट स्थितियों में कुछ मजबूर रचनाकारों की प्रतिभा का शोषण और साहित्यिक घालमेल जैसी घटनाएँ भी होती हैं। व्यथा तब अधिक होती है, जब कुछ सन्त भी ऐसा करते-करवाते हैं। ऐसा होने से साहित्य का गौरव, प्रभाव और स्तर घटता है। साहित्य-विकास का रथ लड़खड़ाने लगता है और थम जाता है। ऐसी दुष्प्रवृत्तियों को हतोत्साहित किया जाना चाहिये। सही व स्थायी साहित्यिक विकास के लिए साधनशुद्धि और ईमानदारी भी आवश्यक है।

पिछले कुछ वर्षों में जैन समाज में एक जागृति आई है कि समाज के विद्यार्थी राजनीति, प्रशासन, न्यायिक सेवाओं तथा इस प्रकार के अन्य प्रभावशाली क्षेत्रों में अपना कैरियर बनायें। इस दिशा में समाज में अनेक योजनाएँ, परियोजनाएँ और संस्थाएँ भी बनी हैं। सन्तों और उदारमनाओं ने इस अभियान को अच्छी गति दी है तथा उसके सुफल भी समाज को मिल रहे हैं। इस क्रम में, इस अभियान के साथ उच्च कोटि के विद्वानों के निर्माण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। देश और दुनिया में निजी और विश्वविद्यालय के स्तर पर जैनविद्या के संस्थानों, विभागों और केन्द्रों की स्थापना की योजनाओं को भी मूर्त रूप दिया जाना चाहिये। ज्ञान, इतिहास और संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन से अन्य क्षेत्रों की सफलताएँ और उन्नतियाँ भी अधिक सार्थक, स्थायी और फलप्रद बन सकेंगी। धनाढ्य माना जाने वाला जैन समाज यदि 'विद्वानों का समाज' भी बन सके तो अच्छा है।

आज के अर्थप्रधान युग में उसी ज्ञान का आदर अधिक हो रहा है, जो जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक है। ऐसे विकट समय में जब कोई व्यक्ति शास्त्र-ज्ञान और प्राचीन सत्साहित्य पर आधारित ज्ञान की उपासना में अपना जीवन समर्पित करता है तो उसके इस सारस्वत पुरुषार्थ का पूरा मान-मूल्यांकन होना चाहिये। ऐसे ज्ञान साधकों की बदौलत ही

आज हमारे पास विपुल प्राचीन ज्ञान में-से थोड़ा-बहुत ज्ञान बचा है। इस बचे हुए को बचाने के लिए विद्वानों को प्रश्रय और प्रोत्साहन देना अत्यावश्यक है। साहित्य की सुरक्षा के बगैर किसी भी धर्म, संस्कृति, इतिहास और परम्परा की सुरक्षा संभव नहीं है। जैन परम्परा में जो प्रभावक आचार्य हुए हैं, प्राय: सबने शास्त्रीय ज्ञान के संरक्षण, संवर्द्धन और प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया है। उनका यह प्रयास भी उनकी प्रभावकता का एक आधार बना। उनके कार्यों को आगे बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। विद्वानों को प्रोत्साहित करके उन सब आचार्यों और मनीषियों के प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित कर सकेंगे, जिन्होंने किसी भी रूप में श्रुत आराधना और श्रुत आराधकों के प्रति प्रमोद भाव रखा।

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु)

आचार का होता है सम्मान

श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा.

ज्ञान-दर्शन-चारित्र मुख्य तत्त्व हैं। ज्ञान और दर्शन से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है चारित्र यानी आचरण। एक व्यक्ति है जिसमें ज्ञान तो खूब है, विषय की विशद जानकारी है, पर यदि आचरण नहीं तो उस ज्ञान का क्या मूल्य?

प्रभु का ज्ञान कैसा, दर्शन कैसा, चारित्र कैसा? प्रभु को अनेक नाम से सम्बोधित किया गया है। हम महावीर कहें, वर्द्धमान कहें, श्रमण कहें, ज्ञात पुत्र कहें। इस तरह के कई नाम हैं। ज्ञान और चारित्र में क्या अन्तर है, इसे समझने के लिए एक छोटा-सा रूपक है।

एक राजा ने अपने पंडित से पूछा- ज्ञान बड़ा या आचरण?

पंडित जी ने कहा- राजन्! इसका दो दिन में जवाब दूँगा।

वह राज दरबार का पंडित था। पंडित के आने पर स्वयं राजा खड़ा होकर सम्मान देता था। पंडित ने कोषाध्यक्ष के पास से एक स्वर्ण मुद्रिका उठा ली। कोषाध्यक्ष देख रहा है पर, बोला कुछ नहीं, क्योंकि राजा पंडितजी का सत्कार करता है। दूसरे दिन पंडितजी ने फिर एक स्वर्णमुद्रिका उठा ली।

राजा को बात बताई गई। पंडित के आने पर राजा न तो खड़ा हुआ और न ही स्वागत-सत्कार दिया। उलटा कहा- ऐसा काम करते हो।

पंडित को पता चल गया कि राजा को वृत्तान्त ज्ञात हो गया है। पंडित बोला- राजन्! मैं तो आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा था। आपने देखा- "आचरण से गिर जाने वाले का सम्मान नहीं होता, भले ही ज्ञान कितना ही क्यों न हो।" ***-प्रवचन से संकलित***

प्रासंगिक

अल्पसंख्यक घोषित होने से जैन समाज को लाभ

डॉ. एन. के. खींचा (सेवानिवृत्त आर.ए.एस.)

भारत के राजपत्र दिनांक 27 जनवरी, 2014 को अल्प संख्यक कार्य मंत्रालय की अधिसूचना मुद्रित हुई। इस अधिसूचना के माध्यम से राष्ट्रीय अल्प संख्यक आयोग अधिनियम, 1992 की धारा-2 खंड (ग) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार के कल्याण मंत्रालय की अधिसूचना द्वारा उक्त अधिनियम के प्रयोजनार्थ अल्प संख्यक समुदायों के रूप में पहले से ही अधिसूचित मुस्लिमों, ईसाइयों, सिक्खों, बौद्धों और पारसियों के अलावा जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित किया गया है।

इस अधिसूचना से जैन समुदाय को क्या-क्या लाभ हो सकेंगे, वे निम्न प्रकार से हैं-

1. जनगणना के समय (जो हर 10 वर्ष में सरकार कराती है) जैनों की गणना के लिये भी कॉलम रहेगा, ताकि यह समुदाय अपनी व्यवस्थाओं, योजनाओं को उचित एवं वैज्ञानिक तरीके से एवं योजनाबद्ध रूप से संचालित कर सके।
2. सभी अल्पसंख्यकों को अपने शिक्षा संस्थान स्थापित करने तथा उनका प्रबंध करने का अधिकार है अर्थात् जैनों द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थानों में हम जैन धर्म की पढ़ाई करने/कराने के लिए स्वतंत्र हैं। अतः लौकिक शिक्षा के साथ-साथ जैन धर्म की शिक्षा भी दी जाती है, तो सरकारी हस्तक्षेप नहीं रहेगा।
3. अल्पसंख्यकों के धार्मिक संस्थानों, मंदिरों, तीर्थों आदि का भी पूर्ण सरकारीकरण नहीं किया जा सकता है, यानी अधिग्रहण आदि नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार जैनों को अपनी संस्कृति एवं धर्मायतनों की रक्षा का अधिकार प्राप्त हो जायेगा।
4. सभी अल्पसंख्यकों को उनके द्वारा स्थापित एवं संचालित शिक्षण संस्थाओं में जैन विद्यार्थियों के लिये 50 प्रतिशत तक सीटें आरक्षित की जा सकती हैं। इससे जैन बच्चों को अपने इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेज में भी प्रवेश लेने में सुविधा हो जाएगी।
5. अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित ट्रस्टों को भाड़ा नियंत्रण अधिनियम (रैण्ट कण्ट्रोल एक्ट) से भी मुक्ति प्राप्त है। अतः हमारे मंदिर आदि में पुराने किराये पर दिए हुए दुकान/मकान को त्वरित रूप से खाली करवाया जा सकता है।
6. सरकारी नौकरियों में अगर अल्पसंख्यक वर्ग के साथ कोई भेदभाव किया जाता है तो

सीधे अल्पसंख्यक आयोग के जरिए त्वरित न्याय प्राप्त किया जा सकता है।

7. विश्वविद्यालयों द्वारा चलाए जा रहे कोचिंग कक्षाओं में अल्प संख्यक विद्यार्थियों को शुल्क से मुक्ति की पात्रता रहती है।

8. अल्पसंख्यक वित्त निगम धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों की संस्थाओं या व्यक्तियों को रियायती ब्याज दर पर विकास अथवा कारोबार के लिये ऋण उपलब्ध कराता है।

9. भविष्य में यदि केन्द्रीय एवं राज्य सरकारें अल्पसंख्यकों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण सुविधा प्रदान करती है तो वह लाभ जैनियों को भी मिलेगा। अभी अल्पसंख्यकों को आरक्षण में नहीं लिया गया है।

10. बहुसंख्यक समुदाय द्वारा प्रताड़ित किये जाने पर सरकार जैनत्व, उसकी संस्कृति और पुरातत्त्व की रक्षा करेगी।

11. जैन समाज द्वारा स्थापित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों तथा इंजीनियरिंग, मेडिकल, व्यावसायिक प्रबंधन, कम्प्यूटर साइंस आदि संस्थाओं में प्रवेश एवं प्रबंध संबंधी अधिकार जैन समाज के पास प्राथमिकता के आधार पर रहेंगे। (हालांकि उसका लाभ अन्य समाज को भी होगा)

12. पुण्यार्थ, प्राणी सेवार्थ, शिक्षार्थ एकत्रित किये गये धन कर-मुक्त रहेंगे। जैन मंदिरों, ट्रस्टों की व्यवस्थाओं में स्वतंत्रता रहेगी। कम हस्तक्षेप की व्यवस्था रहेगी।

13. आई.ए.एस., आई.पी.एस., प्री मेडिकल टेस्ट आदि की तैयारी, कोचिंग क्लासेज चलाने, गर्ल्स हायर सैकण्डरी स्कूल एवं छात्रावास भवन आदि के निर्माण के लिए 50 लाख रुपये तक का अनुदान अल्पसंख्यक समुदाय को भारत सरकार से मिल सकता है।

भारत के सभी राज्यों में क्षेत्रीय/राज्य स्तर की जरूरतों के अनुसार राज्य स्तर पर सभी अल्पसंख्यक वर्ग को सुविधाएँ दी जा रही हैं। अतः जो जरूरतमंद हैं, वे अपने-अपने राज्य में जो भी जानकारी चाहिए, उसे इसकी वेबसाइट से भी प्राप्त कर सकते हैं।

अल्पसंख्यक समुदाय हेतु संचालित योजनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

1. प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति
2. मैरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति
3. मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक स्वरोजगार योजना
4. अल्पसंख्यक प्रशिक्षण योजना

-544-ए, सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल के पीछे, जयपुर-302017 (राज.)

चिन्तन

जैन होने का अर्थ

डॉ. श्वेता जैन

भगवान् आदिनाथ से लेकर महावीर तक सभी तीर्थंकरों ने जगत् के सत्य को उद्घाटित किया। यह सत्य था पुद्गल और चेतन का, बन्धन और मुक्ति का, जीवन और मरण का, चित्त की अशुद्धि और शुद्धि का। सत्य के ये सभी अन्वेषक राग-द्वेषदि विकारों के विजेता होने से 'जिन' कहलाए और उनका उपदेश जैन धर्म कहलाया। यह जैन-धर्म ज्ञान, दर्शन और चारित्र की त्रिवेणी के रूप में प्रवाहमान है। इस त्रिवेणी में जो अवगाहन करता है वही जैनत्व को महसूस करता है और जैनत्व में जीता है।

जैन संस्कृति मानवीय मूल्यों की संवाहक है। जैनों की जीवन शैली अहिंसा, दया, करुणा, समता, क्षमाशीलता, सौहार्द, मार्दव, आर्जव, अपरिग्रह एवं अनेकान्तवाद की भावनाओं से अनुप्राणित है। इस जीवन शैली की अनेक विशेषताएँ हैं-

ज्ञान सम्बन्धी वैशिष्ट्य

1. नव तत्त्व का बोध प्राप्त करना 'ज्ञान' है। जीव के साथ अजीव का बन्ध को प्राप्त होना और उनसे मुक्त होना, यही नवतत्त्व का सार है। नव तत्त्व हैं- जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, पाप, पुण्य, संवर, निर्जरा और मोक्ष। नव तत्त्व के ज्ञान को अनुभूति के साथ जीने पर जीवन में सरलता और समरसता आने लगती है, जो जैनों की पहचान है।
2. कर्मसिद्धान्त को समझना भी जैन की ज्ञानात्मक विशेषता है। कर्मसिद्धान्त को क्रिया की प्रतिक्रिया के रूप में समझ सकते हैं। मन में क्रोध आते ही, उसके साथ जुड़कर प्रत्युत्तर दे देना, कर्मबन्धन के मार्ग पर चलना है। मन में क्रोध उत्पन्न होना 'उदय' है और प्रत्युत्तर देना 'बंध' है। कर्म का उदय में आना, एक क्रिया है और 'बन्ध' हो जाना उसकी प्रतिक्रिया है। जो मुक्ति या शुद्धि के मार्ग पर चलना चाहता है वह प्रतिक्रिया करना छोड़ दे तो उसके कर्म उदय में आकर निर्जरित हो जाते हैं। प्रतिक्रिया न करने पर जीवन में समता/समभाव प्रकट होता है। अतः कहा है- **''समभावो सामाइयं। सामाइए सावज्जजोगविरइं जणयइ''** (उत्तराध्ययन 29.8) समभाव सामायिक है और सामायिक से पापकारी वृत्तियों का निरोध होता है।

दर्शन सम्बन्धी वैशिष्ट्य

1. जैन-धर्म सम्यक् दृष्टि पर बल देता है। **'यथार्थतत्त्वश्रद्धा सम्यक्त्वम्'** (जैन

सिद्धान्त दीपिका, 5.3) वस्तु या तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को जानने एवं प्रस्तुत करने वाली दृष्टि सम्यक् होती है। जिन वस्तु, व्यक्ति आदि को हम अपना मानकर राग कर रहे हैं, वे यथार्थ में अपने नहीं है, तथा जिन्हें पराया मानकर द्वेष करते हैं, वे भी यथार्थ में दूसरे नहीं हैं। अपने-पराये की राग-द्वेषात्मक दृष्टि यथार्थ से हमें दूर करती है। जबकि राग-द्वेष के अभाव रूप समता के धरातल पर सम्यक् दृष्टि पनपती है।

2. धर्म के दो पक्ष होते हैं- एक उसका शाश्वत और सार्वभौम पक्ष होता है तथा दूसरा दैशिक और कालिक पक्ष। धर्म का शाश्वत और सार्वभौम पक्ष उसका सार तत्त्व है, जबकि दैशिक और कालिक पक्ष उसका बाह्य रूप है, जो कि समय-समय पर परिवर्तित होता रहता है। जैन धर्म को समझने की यह आधारभूत दृष्टि है।

चारित्र सम्बन्धी वैशिष्ट्य

1. ज्ञान और दर्शन के सम्यक् होने पर आचरण/चारित्र स्वतः सम्यक् हो जाता है। राग-द्वेष के कारण ही मनुष्य का आचरण अशुद्ध होता है वह हिंसा, झूठ, चोरी, ठगाई, अब्रह्मचर्य, लड़ाई-झगड़े आदि सभी गलत क्रियाएँ राग-द्वेष के वशीभूत होकर करता है। अतः समता के जीवन में प्रवेश कर लेने पर उसकी इन बुराइयों में न्यूनता आने लगती है।
2. जैन का व्यवहार, प्रेम, करुणा और सद्भावना से युक्त होता है। वह 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के लक्ष्य के साथ जीता है और समाज में सहयोग और सेवा की भावना से सबको उपकृत करता है।
3. सव्वे पाणा पियाउआ, सुहसाया, दुक्खपडिकूला, अप्पियवहा पिय जीविणो,
   जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं, नाइवाएज्ज कंचणं।। (आचारांग, 1.2.3)
   सभी प्राणियों को अपना जीवन प्यारा है, उन्हें सुख अच्छा लगता है और दुःख बुरा। वध सबको अप्रिय है और जीवन प्रिय। सभी प्राणी जीना चाहते हैं, अतः किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। भगवान् महावीर का यह उद्घोष प्राणिमात्र की रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है। अतः जैनों की जीवन शैली मानव मात्र की एवं सम्पूर्ण पर्यावरण की रक्षा करती है।

ज्ञान, दर्शन और चारित्र सम्बन्धी विशेषताओं की सुवास से प्रत्येक जिनानुयायी का जीवन सुगन्धित हो, इसका प्रयत्न करना चाहिए। यही जैन होने का अर्थ है।

-सह-सम्पादक, जिनवाणी मासिक पत्रिका
समता कुंज, 12/7 ए, जालम विलास स्कीम, पावटा, जोधपुर (राज.)

आचार्यपद

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद के रजतवर्ष का शुभारम्भ (ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 9 मई 2015)

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, निर्व्यसनता, रात्रि-भोजन-त्याग, शीलव्रत एवं सामूहिक सामायिक के विशेष प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ज्येष्ठ कृष्णा, पंचमी, 9 मई 2015 को आचार्यपद के रजतवर्ष में प्रवेश हो रहा है। उनकी उज्ज्वल आचारकीर्ति चहुँओर प्रसृत है। अभी 2 वर्ष पूर्व उनकी दीक्षा अर्द्धशती पर अनेकविध तप-त्याग हुए थे। जिनवाणी पत्रिका का एक विशेषांक 'आगमादर्श आचार्य हीरा' प्रकाशित हुआ था। आचार्य श्री हीरा के संघनायकत्व में चतुर्विध संघ निरन्तर प्रगति कर रहा है। सन्तों की संख्या पहली बार 20 तथा महासतियों की संख्या 90 पहुँच गई है। आप निर्मल साधनापक्ष पर विशेष बल प्रदान करते हैं। आचार्य हीरा का नाम आज समस्त स्थानकवासी सम्प्रदायों में आदरपूर्वक लिया जाता है। वे व्यक्ति एवं समाज दोनों को सुधारने हेतु प्रवचन पीयूष का वर्षण करते हैं। उनके आचार्यपद के 25 वें वर्ष में प्रवेश पर हम सब उनका कृतज्ञतापूर्वक अभिनन्दन करते हैं। उनके अभिनन्दन में यहाँ कतिपय भावाभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत हैं, जिन्हें महासतियों द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर के 77 वें जन्मदिवस अथवा दीक्षा अर्द्धशती के प्रसंग पर प्रस्तुत किया गया था।-**सम्पादक**

अच्छा, बहुत अच्छा, सबसे अच्छा

महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.

हे आचार्य भगवन्!
आपके नेतृत्व में जीना,
आप जिस संघ के सारथी हैं
उस रथ में बैठने का सुअवसर मिलना,
आपकी नेश्राय में संयम का पलना,
आपके हेय-ज्ञेय-उपादेय के उद्‌बोध को सुनना,
आपके निर्देशों के अनुसार कदम धरना,
आपकी भावनाओं को अपनी बना सकने का सौभाग्य मिलना,
आपके पद्म पदों में रहने का अवसर मिलना,

दिखलाता है हमारा भूतकाल अच्छा था।
आपकी प्रसन्न मुद्रा का दर्शन करना,
आपको अहोभाव पूर्वक वंदन कर पाना,
अपने संरक्षक के रूप में आपका परिचय
कहने का सौभाग्य मिलना,
आपके संघ में आनन्द से जीना,
आपको अपना समझ सकने का पुण्य खिलना,
आपकी दिव्य-भव्य साधना का सम्मान
एवं पर्युपासना का सुअवसर मिलना,
आपकी शिष्य-ऋद्धि में हमारी गणना,
प्रगटाता है हमारा वर्तमान बहुत अच्छा है।
आपकी नाव में निश्चिन्त हो बैठना,
आपके द्वारा जीवन का निर्माण होना,
आपके अनुशासन व वात्सल्य को पाना,
आपके संकेतों पर जीने का प्रयास करना,
आपके द्वारा अंगुली पकड़कर चलाया जाना,
आपकी सार-संभाल से पल्लवित-पुष्पित होना,
शिष्यों के प्रति आपकी कल्याण बुद्धि का होना,
आपके द्वारा अध्यात्म वृक्ष का पोषण होना,
सभी साधक-साधिकाओं को विश्वास दिलाता है,
हमारा भविष्य सबसे अच्छा है।

-श्री अशोक कवाड़, चेन्नई द्वारा संकलित

भावी तीर्थंकर बनो यह कामना

महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा.

(तर्जः- पहले प्यार का पहला गम)

जिनशासन के मोती अनुपम, तीर्थंकर से ना लगते कम,
भावी तीर्थंकर बनो ये कामना-2
मन मंदिर में मेरे भगवन्, हरदम तेरी तस्वीर,

तेरी शरण मिल जाये तो खिल उठे तकदीर,
पापी को पावन करती, कंकर को शंकर करती,
गुरु हस्ती सम करो खूब प्रभावना।।
भावी तीर्थंकर बनो.....।।1।।

मुख में सरस्वती, नयनों में करुणा, वचनों में अमृत वास,
आणा धम्मो बंभ निवासो, हर दिल में तेरा निवास,
सुन्दर-सौम्य छवि तेरी, मधुर-मधुर वाणी तेरी,
दीक्षा शताब्दी मनाने की है चाहना।।
भावी तीर्थंकर बनो.....।।2।।

हस्ती सा जौहरी, सौभाग्य लहरी, अद्भुत रत्न तराशा,
मोती-मोहिनी, सूरत सोहिनी, गाँधी कुल की आश
निर्मल मानसरोवर है, अमल गंगाजल है ये
'सिद्धि' करती तव चरणों की उपासना।।
भावी तीर्थंकर बनो.....।।3।।

तुम जीओ हजारों वर्षों

महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा.

(तर्ज:- कब तक याद करूँ मैं तुझको)

हीरा गुरुवर के चरणों में, वन्दन करूँ मैं सौ-सौ
अन्तर के अरमान हैं गुरुवर, जीओ हजारों वर्षों।।1।।
गुरुवर की दृष्टि में कृपा, सब भक्तों पर रहती,
अरिहन्तों का भास है तुझमें, आस्था मेरी कहती,
ऐसे गुरुवर के चरणों में, वन्दन करूँ मैं सौ-सौ।
अन्तर के अरमान हैं गुरुवर, तुम जीओ हजारों वर्षों।।2।।
माँ मोहिनी का है ये लाडला, पिता मोती दुलारा,
तारों के मण्डल में चमके, टिम-टिम एक सितारा।
करुणा सागर के चरणों में, वन्दन करूँ मैं सौ-सौ।
अन्तर के अरमान हैं गुरुवर, तुम जीओ हजारों वर्षों।।3।।
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, सूत्र दिल में धारा,

तीर्थंकर का पद है पाये, कहता आगम सारा।
हस्ती सम हीरा गुरुवर को, वन्दन करूँ मैं सौ-सौ।
अन्तर के अरमान हैं गुरुवर, तुम जीओ हजारों वर्षों।।4।।
गुरुवर की महिमा को गाते, शिव, ब्रह्मा और विष्णु,
इतनी शक्ति देना गुरुवर, बन जाऊँ मैं सहिष्णु।
'ऋद्धि' सिद्धि तव चरणों में, करती वन्दन सौ-सौ।
अन्तर के अरमान हैं गुरुवर, तुम जीओ हजारों वर्षों।।5।।

-श्रीमती बीना मेहता, जोधपुर द्वारा संकलित

हीरा मान गुरु प्यारे

महासती श्री रक्षिता जी म.सा.

(तर्जः- गुण सौरभ से....।)

शरणागत के शरणभूत हैं, दीनों के जो सहारे,
हीरा मान गुरु प्यारे.....।
युग-युग जीओ मोहनी नन्दन अंतर उद्गार हमारे।
हीरा मान गुरु प्यारे.....।
पंच महाव्रत पालक जो, मेरु सम सुदृढ़ हैं,
अनुकम्पा का स्रोत बहे ज्यों, निर्मल शीतल जल है,
रजतवर्ष पर लाखों बधाई, भव्यों के तारण हारे।
हीरा मान गुरु प्यारे.....।।1।।
रवि सम इनका तेज झलकता, सिंह सम गूंजे वाणी,
धरती पर है स्वर्ग को पाया, बरसे जहाँ अमृत वाणी,
हीरा-मान की अनुपम जोड़ी, रत्नवंश उजियारे।
हीरा मान गुरु प्यारे.....।।2।।
चम-चम चमके चन्दा सम गुरु, जन-जन के मन भाये,
सुवास जिनमें अनेक गुणों की, जीवन को सरसाये,
रक्षित की पतवार संभालो, नैया खेवन हारे।
हीरा मान गुरु प्यारे.....।।3।।

-सौरभ जैन, खेरली द्वारा प्रवचन से संकलित

कविता

पल-पल बीता जाय

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

तेरा पल-पल बीता जाय
मुख से जपले महामंत्र नवकार।
नमो अरिहंताणं, नमो अरिहंताणं-2
अरिहंत, अरिहंत हृदय से बोलो,
मन मन्दिर का पर्दा खोलो।
तेरा अवसर खाली न जाय,
मुख से जपले महामंत्र नवकार।
नमो सिद्धाणं, नमो सिद्धाणं-2
ये दुनिया पंछी का मेला,
समझो उड़ जाना अकेला,
तेरा तन-मन साथ न जाय
मुख से जपले महामंत्र नवकार।
नमो आयरियाणं, नमो आयरियाणं-2
जीवन यात्रा जब पूरी होगी,
चलने की मजबूरी होगी
पिंजरा प्राण रह जाय,
मुख से जपले महामंत्र नवकार।
नमो उवज्झायाणं, नमो उवज्झायाणं-2
गुरुवंदन में नित रमजा
भक्ति सुधा रस पान किये जा
दर्शन गुरुदेव के पाय
मुख से जपले महामंत्र नवकार
नमो सव्व साहूणं, नमो सव्व साहूणं-2
तेरा पल-पल बीता जाय
मुख से जपले महामंत्र नवकार। *नमो.....*

-"हुक्म", 5-ए/1, सुभाषनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

नारी–स्तम्भ

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

श्री पारसमल चण्डालिया

भारतीय समाज में आठ वस्तुएँ मंगलकारी मानी गई हैं। इनमें 'कन्या' भी एक है–

दर्पणः पूर्णकलशः कन्या सुमनसोक्षता।
दीपमाला ध्वजः लाजा संप्रोक्ता अष्टमंगलाः।।

आठ मंगलों में बेटी की गणना होते हुए भी प्राचीन काल से बेटी की अपेक्षा बेटे को ज्यादा महत्त्व दिया जाता रहा और आज के आधुनिक युग में भी बेटी के विषय में समाज की सोच में कोई खास परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा है। यही कारण है कि गर्भ में ही कन्या भ्रूणहत्या सामान्य बात हो गई है। पर हम यह न भूलें कि बेटी है तो कल है। कवि के शब्दों में–

तपती धूप में छांव है बेटियाँ
दिखावे कि दुनिया में गुमदान हैं बेटियाँ।
टिका जिनसे परिवार वह बुनियाद है बेटियाँ।
दो घर जिनसे रोशन, आफताब है बेटियाँ।
घर को हसीन ख्वाब सा बनाती हैं बेटियाँ।
परिवार रूपी महल की नींव है बेटियाँ।

आश्चर्य है आज नारी ही नारी का शोषण कर रही है। अतः भ्रूणहत्या का विचार करने वाली माँ इस जघन्य अपराध को करने से पहले एक बार अवश्य सोचे कि– ''मैं जो कार्य करने जा रही हूँ, अगर ऐसा ही दुष्कृत्य मेरी माँ ने भी किया होता तो क्या आज मैं इस संसार को देख पाती?'

कन्या भ्रूण हत्या क्यों?

कन्या भ्रूणहत्या के लिए पुत्र की चाहत के अलावा भी बहुत से कारण हैं। कन्याओं को बोझ या पराया धन मानना, बढ़ती दहेज प्रथा, धार्मिक व सामाजिक कुरीतियाँ, घर परिवार का दबाव आदि भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। महिलाओं में बेटे को जन्म न दे पाने पर अपने आपको अधूरा मानने की मानसिकता भी कम दोषी नहीं है। अतः हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा। कन्या भ्रूणहत्या के विरुद्ध अभियान चलाकर बेटी बचाओ अभियान चलाना होगा। क्योंकि बेटियाँ कुदरत का करिश्मा है। यदि बेटियाँ नहीं होंगी तो वंश परम्परा कैसे चलेगी? जो यह कहते हैं कि बेटे से वंश चलता है, पर असल में तो

बेटियों से ही वंश चलता है। जब बेटियाँ ही नहीं होंगी तो पुरुष कौन पैदा करेगा? स्त्री-पुरुष के लैंगिक अनुपात में असंतुलन की वजह से लड़कों को शादी के लिए लड़कियाँ नहीं मिल पा रही हैं। लड़कों को कुंवारा रहना पड़ रहा है। इससे सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न होने की सम्भावना है।

बेटी बचाओ की आवश्यकता

'बेटी बचाओ' अभियान की आज जरूरत इसलिए है कि दिन प्रतिदिन कन्याओं की संख्या घट रही है। जिसका प्रमुख कारण है- कन्या भ्रूणहत्या। आधुनिक युग में सोनोग्राफी मशीन से गर्भ में ही गर्भ की जाति (बच्ची है या बच्चा?) जान ली जाती है और कन्या गर्भ है तो उसकी पेट में ही हत्या कर दी जाती है। इस क्रूर और घातक प्रवृत्ति के कारण ही आज समाज में असंतुलन है तथा पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या घट रही है।

जैन समाज की वर्तमान स्थिति- 'अहिंसा परमो धर्मः', 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त को अपनाने वाला जैन समाज भी आज इससे अछूता नहीं है। एक छोटी सी चींटी को भी नहीं मारने का ध्यान रखने वाले, पंचेन्द्रिय जीव की हत्या को महापाप मानने वाले, जैन परिवारों में भी कन्या गर्भ की हत्या करने की मानसिकता दिखाई दे रही है। स्वार्थ, भौतिकवाद, बदलती जीवन शैली आदि के कारण यह मानसिकता बढ़ती जा रही है, इसीलिए "बेटी बचाओ (समाज बचाओ) बेटी पढ़ाओ" का नारा दिया जा रहा है।

जैन समाज में भी लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या कम होने के कारण आज जैनों के कई लड़कों को शादी योग्य हो जाने पर भी लड़कियाँ नहीं मिल रही हैं, इसलिए जैनेतर जातियों में विवाह हो रहे हैं। फलस्वरूप संस्कार, सभ्यता और संस्कृति रक्षा के प्रश्न खड़े हो रहे हैं।

अहिंसा के अनुयायी समाज में खासकर उत्तर भारत के हिन्दी भाषी राज्यों- राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि में कन्या भ्रूण हत्या का प्रतिशत ज्यादा है, इसलिए बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की संख्या में उत्तरोत्तर कमी हो रही है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 6 वर्ष तक की उम्र के प्रत्येक 1000 लड़कों के सामने लड़कियों की संख्या इस प्रकार है- हिन्दू 925, मुस्लिम 950, ईसाई 964, सिक्ख 786, बौद्ध 972, जैन 870

अर्थात् जैन समाज में कन्याओं की घटती दर के कारण अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहन मिल रहा है, जो कि चिंताजनक है। अन्य जातियों में विवाह होने के कारण जैनत्व के संस्कार बचा पाना अत्यन्त मुश्किल है। क्या ऐसे विवाहों से उत्पन्न होने वाली संतानें जैन धर्म का पालन कर पांएगी? यह विचारणीय है, अतः बेटियों की सुरक्षा आवश्यक है। जो कन्याओं के शिक्षित होने पर ही संभव है।

बेटी सुरक्षा और शिक्षा क्यों ?– गर्भपात– पेट में पल रहे मनुष्य की हत्या है। यह निर्विवाद जीव हिंसा है, अतः हमें कैसे भी हो कन्या की कोख से कब्र तक के सफर को रोकना होगा। कन्या के जन्म पर फीलगुड करना होगा। सामाजिक संतुलन के लिए लड़की की अहमियत को समझना होगा। अतः जागो...जैनों...जागो! बेटियों को बचाओ ही नहीं उन्हें पढ़ाओ भी।

इसके लिए ''बेटी–बेटी एक समान'' की विचारधारा को प्रोत्साहन देकर लड़के-लड़की का भेदभाव तिरोहित करना होगा। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण पुरुष कभी भी स्त्री हत्या के लिए, गर्भपात के लिए स्त्री को मजबूर नहीं करे, इसके लिए स्त्री का शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षित एवं सुसंस्कारी स्त्री ही अपने भले–बुरे, हित–अहित का विचार कर सकती है। अतः बालिकाओं का संस्कारी और शिक्षित होना अति आवश्यक है।

सुशिक्षा का फल– यदि एक कन्या शिक्षित होती है तो उससे पूरा परिवार ही शिक्षित होता है। शिक्षित और संस्कारी कन्या दो कुलों (मातृपक्ष और पितृपक्ष) को उज्ज्वल करती है। शिक्षा जीवन को सत्यं शिवं सुंदरं से समन्वित करती है। इसके द्वारा बुद्धि का शिवत्व, हृदय का सौन्दर्य और आत्मा का सत्य स्वरूप दीप्त होता है। सच्ची शिक्षा चरित्र में समुज्ज्वलता, चिंतन में उत्कृष्टता एवं व्यवहार में उदात्त भाव भरती है। अज्ञान का निवारण करती हुई शिक्षा व्यवहार जगत् में सहिष्णुता एवं कर्मठता का पाठ पढ़ाती है। नीति शतक में कहा है–

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं।
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्।
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

विद्या बुद्धि की जड़ता का हरण करती है, वाणी में सत्य का सिंचन करती है, सम्मान में वृद्धि करती है और पापों को दूर करती है। चित्त को प्रसन्न बनाती है, दिशाओं में कीर्ति फैलाती है, अतः कल्पलता के समान विद्या क्या–क्या सिद्ध नहीं करती है।

विद्या की इस महत्ता को समझकर बेटियों को शिक्षा देना वर्तमान की परम आवश्यकता है। यदि बेटियाँ शिक्षित नहीं होंगी तो वे अपनी संतानों को कैसे सुसंस्कारित कर पाएँगी ? शिक्षित बेटी ही आगे चलकर आदर्श स्त्री और आदर्श माँ बनकर घर को स्वर्ग बना सकती है। शिक्षित कन्या ही सामाजिक कुरूढ़ियों का त्याग कर महिला सशक्तीकरण का आदर्श उपस्थित कर सकती है। कवि के शब्दों में–

मासूम बेटियाँ जब न जलेंगी, समय से पहले अर्थियाँ न उठेंगी
भ्रूण हत्यायें जब रुकेंगी, बहू बेटियाँ स्वच्छंद विचरेंगी
होगा नहीं दहेज का दानव, सरल हृदय हर होगा मानव

कोई बाप मजबूर न होगा, बेटा-बेटी का भेद न होगा
विचार क्रांति एवं नारी शिक्षा से ही निकलेगा हल
महिला सशक्तीकरण वर्ष तब होगा सफल।।

समाज के उत्थान एवं पतन में नारी का योगदान महत्त्वपूर्ण है। अतः वर्तमान में ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' नारे को यदि हम क्रियान्वित करेंगे तो अवश्य ही इसके सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। कन्या भ्रूणहत्या को एक सामाजिक कलंक मानते हुए आओ हम सब अपने अंतर्मन में प्रकाश फैलाएँ, अंतर के अंधियारे को दूर करें, कन्या की सुरक्षा हेतु प्रयत्नशील बनें और कन्या भ्रूणहत्या रोकने हेतु समर्पित भाव से कार्य कर सामाजिक क्रांति का शंखनाद करें। *-7/14, उत्तरी नेहरू नगर, बिट्ठल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)*

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को '**डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान**' से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने 17 फरवरी 2014 के पश्चात् पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से पाँच पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा दो डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. 17 फरवरी 2014 से 31 जुलाई 2015 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता हों, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।
5. सभी आवेदन-पत्र निम्नांकित पते पर 31 जुलाई 2015 के पूर्व प्राप्त हो जाने चाहिए।- **महामंत्री,** अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2636763

-आनन्द चौपड़ा, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

धारावाहिक

लग्न की वेला (12)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

स्थिरवास

आचार्यदेव सोच रहे थे- "क्या करना चाहिये? यहाँ स्थिरवास के लिये लोगों का आग्रह है। क्षेत्र भी बड़ा है और अनुकूल है। कहीं न कहीं अब स्थिरवास करना ही होगा।" ऐसा विचारकर उन्होंने विनति के लिए उपस्थित हुए श्रावकों को सम्बोधित करते हुए कहा- " कुशस्थलपुर स्थिरवास के योग्य स्थान है। जब तक द्रव्य, क्षेत्रादि अनुकूल रहेंगे और उपकार आदि का कोई कारण उपस्थित नहीं होगा, तब तक मैं यहीं रहकर आराधना करने की भावना रखता हूँ अर्थात् साधु-भाषा में आपकी प्रार्थना को आगार सहित स्वीकार करता हूँ।" ये शब्द सुनते ही जन-समुदाय में हर्षोल्लास छा गया।

समय बीत रहा था। वर्षावास भी आ गया। कापालिक प्रचण्ड अब उपासक प्रचण्ड बन गया था। वर्षावास लगते ही आश्रम त्यागकर वह मुनिराज के पास आ गया। वह आचार्यश्री से ज्ञानार्जन करने लगा। वह अपनी हार्दिक इच्छा से इस मार्ग पर बढ़ रहा था। अतः कुछ ही दिनों में वह प्रतिक्रमण सीख गया। वह और अरुण आचार्यदेव के प्रमुख छात्र थे।

अरुण पूछता-"आपका नाम क्या है?" पहले तो वह हँसता रहा और फिर उसने पूछा- "क्या करोगे मेरा नाम जानकर। नाम सुनकर डर जाओगे।" अरुण कहता- "आपको देखकर डरा नहीं तो नाम सुनकर कैसे डर जाऊँगा?" वह हँसता रहता, परन्तु अपना नाम नहीं बताता। तब अरुण कहता-"अच्छा, मैं आपका नाम बता दूँ?" तब उसने पूछा- "क्या है- मेरा नाम?" तब अरुण एक-एक अक्षर को प्लुत करके कहता- "प्र...चं....डऽऽऽ का...पा...लि...कऽ!" तब वह हँस पड़ता और कहता- "वाह-वाह! आप मेरा नाम जानते हो। आप वीर बालक हो...." फिर कुछ देर रुककर कहता- "पर अब मैं कापालिक नहीं हूँ।" तब अरुण प्रसन्नता से कहता- "तभी आप से डर नहीं लगता है। तो अब आप कौन हैं?" वह बड़े गौरव के साथ कहता- "प्रचण्ड उपासक!" तब अरुण पूछता- "अब आप अपना नाम क्यों नहीं बदल लेते?" "नाम क्यों बदलें? गुण बदलना चाहिये सो बदल ही रहा हूँ। गुण बदले तभी तो कापालिक से उपासक हुआ हूँ और फिर गुण बदलूँगा तो उपासक से अनगार बन जाऊँगा। यह ठीक रहेगा न।"

"यही ठीक रहेगा"- अरुण ने कहा- "नाम चाहे जो हो, महिमा तो गुणों की है। यों

हम आप से डरते थे। गुण बदले तो आपके पास बैठे हैं और आगे बढ़ोगे तो आपको वन्दना करेंगे।''

''कोई निन्दा करे या वन्दना करे- मुझे इससे क्या हानि? क्या लाभ? मैं तो साधु बन रहा हूँ- तप करने के लिए, कर्म काटने के लिये।''

चातुर्मास में ही प्रचण्ड दीक्षित हो गया। आचार्यदेव ने उससे पूछा था- ''तुम्हारा कोई दूसरा नाम रख दें, जिससे लोग तुम से घृणा न करें? तब प्रचण्ड ने कहा था- ''नाम तो मेरा यही रहने दें, जिससे मैं अपने पिछले पापों को न भूलूँ और कोई निन्दा करे तो मेरे हृदय में पश्चात्ताप की ज्वाला जागे। मैं अपने कर्म जल्दी काटना चाहता हूँ, प्रभो!'' प्रचण्डमुनिजी को उनकी इच्छानुसार मुनिराज धर्मप्रियजी का शिष्य बनाया गया। वे बड़ी तत्परता से ज्ञानार्जन और तप-आराधना में लग गये।

इधर नगरश्रेष्ठी का उत्साह ठण्डा पड़ने लग गया। एक दिन सिद्धि देवी ने पूछ लिया- ''आजकल धर्म-आराधना में मंदता आ गयी?''

''क्या एक समान उत्साह सदा बना रह सकता है? अब आचार्यश्री यही विराजेंगे। जब मन होगा, तभी धर्म-आराधना कर लेंगे।''

''मन होने की राह धर्म-आराधना में नहीं देखना चाहिये''- सिद्धि देवी ने श्रेष्ठी से कहा- ''देखो हमारे अरुण की ओर, कैसा उत्साह है?''

''पढ़ने में उसका उत्साह कम हो गया है। उसे प्रमुख कलायतन में भेजना ही होगा।'' श्रेष्ठी ने पत्नी से कहा।

''परन्तु उसकी इच्छा वहाँ जाने की नहीं है।''

''पढ़ने में बच्चे की इच्छा क्या देखना? बच्चे कब सीधी तरह से पढ़ने जाते हैं? बड़े घर का लड़का है। उसे अपने घर के स्तर के अनुसार स्तर वाले कलायतन में जाना होगा।''

''कभी-कभी बच्चे की इच्छा को भी मान देना पड़ता है''- सिद्धिदेवी ने अरुण का पक्ष लिया- ''क्योंकि कई बच्चे समझदार होते हैं। अरुण पढ़ने से जी चुरानेवाला लड़का नहीं है। वह बुद्धिमान बालक है- बड़ा परिश्रमी है। हम घर के स्तर के मिथ्या अभिमान में न पड़ें। यदि उसे यहीं के कलायतन में पढ़ने की इच्छा है तो ऐसा करने में क्या हानि है?''

''हानि की बात पूछती हो?''- जरा तेज स्वर में सागरचन्द्र बोले-''मैं अब मात्र श्रेष्ठी ही नहीं हूँ, नगरश्रेष्ठी हूँ। साधारण श्रेष्ठी-सार्थवाहों के पुत्र प्रमुख कलायतन में पढ़ें- और मेरा सुपुत्र साधारण कलायतन में पढ़े- यह मेरे गौरव से विपरीत नहीं है?''

''आप मान-सम्मान की कैसी मिथ्या कल्पना में फँस गये हैं? हमारे सभी चिरंजीव

उसी कलायतन में पढ़े हैं। फिर एक वहाँ नहीं पढ़े-नहीं पढ़ना चाहे तो हमारे गौरव में कौनसी हानि हो जायेगी?''

''एक यही बात नहीं है''....कहूँ या न कहूँ! इस विचार में श्रेष्ठी कुछ रुक गये, फिर झटके से बोले- ''वह सारे दिन स्थानक में बैठा रहता है......''

''स्थानक में बैठा रहता है' इसकी क्या चिन्ता? यह आपको किसने कहा कि वह सारे दिन स्थानक में ही बैठा रहता है? अरुण कलायतन यथासमय पहुँचता है। अभ्यास भी करता है। उसकी रुचि है- कुछ समझने की, अतः कुछ समय निकालकर आचार्यदेव के पास भी चला जाता है। वह कोई बुरी संगत में तो जाता नहीं है।''

''ऐसी बात नहीं है। मैं इसके विरुद्ध नहीं हूँ''- जैसे मन का छिपा चोर पकड़ में आ गया हो, इस प्रकार श्रेष्ठी हकलाते हुए बोले- ''फिर भी अपना ऊँचा घर है। कुछ अपना भी गौरव है। अपनी मर्यादा का लोप करके, यों साधारण जन-सा फिरते रहना उचित है क्या?''

''अच्छा, अब समझी, आपके धर्म-उत्साह की मंदता का कारण''- सिद्धिदेवी को बरबस ही हँसी आ गयी। उसके मन में विचार आया कि- 'एक महान् श्रेष्ठी के भी कितने तुच्छ विचार हैं। जो साधु-संगति में ही अपने गौरव का नष्ट होना मानता है, वह पुत्र के साधु बनने के विचार से साधुओं का दुश्मन बन जाए, इसमें क्या आश्चर्य! गाथापतिजी का इसी ओर संकेत था।'' वह कह रही थी-''आर्यपुत्र! यह कैसी मान की ग्रंथि है? हम कितने ऊँचे हैं? क्या हम तीर्थंकरों और चक्रवर्तियों के कुल से भी ऊँचे कुलवाले हैं? इन्द्र भी जिनकी चरण-वन्दना से अपने आपको धन्य समझते हैं, उनके चरणों में बैठने से किसी की हीनता होगी, यह सोचना कितना कुत्सित है? **ज्ञानियों के चरणों में बैठकर, ज्ञान पाने का मन, महान् पुण्यशाली आत्मा को ही होता है। अपने पुत्र में यदि ऐसी प्रवृत्ति है तो यह परम गौरव की ही बात है, हीनता की नहीं।**''

यह बात सुनकर नगरश्रेष्ठी अत्यन्त लज्जित हो गये। उनके मुँह से कुछ देर तक कुछ बात ही नहीं निकल पायी। बाद में वे यह कहते हुए चले गये- ''जैसी तुम्हारी इच्छा। बाद में पछताना मत।'' इसके बाद उन्होंने इस विषय में चर्चा ही नहीं की। अरुण भी ज्ञान सीखता रहा। समय बीतता गया। चातुर्मास पूर्ण हुआ। अन्य गणी मुनि आचार्यदेव की सेवा में आये। आचार्यदेव ने मुनिराज धर्मप्रियजी को अन्यत्र विचरण की आज्ञा दी। अपने शिष्य समुदाय के साथ उनका विहार अन्यत्र हो गया। मुनिराज धर्मप्रियजी ने श्रावक-संघ में जो-जो धर्म प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ करवायी थीं, उनमें अन्य मुनिराज भी प्रेरणा देते रहे। वहाँ विराजते

हुए आचार्यदेव को सात वर्ष हो गये। प्रतिवर्ष अन्य गणी मुनि आचार्यदेव की सेवा में आते रहे और पहले सेवा में स्थित मुनियों को अन्यत्र विहार की आज्ञा मिलती रही। शेषकाल में अन्यगण के मुनि भी आचार्यश्री के दर्शन के लिये या ज्ञान-अर्जन के लिये आ जाते थे, परन्तु पूरे एक वर्ष तक वे ही गणी अपने शिष्य मुनियों के साथ वहाँ विराजमान रहते थे, जिनका क्रम होता था। इस प्रकार कुशस्थलपुर में आचार्यश्री के सात वर्षावास हो गये थे। सात गणी मुनिराज आचार्यदेव की सेवा में रहकर, विहार कर चुके थे। अब आठवें गणी मुनिराज सेवा में विराजमान थे। लोगों को कभी लगा ही नहीं कि वे मुनि यहाँ हैं- या कोई मुनि स्थिरवास विराज रहे हैं।

सात वर्षों में बहुत परिवर्तन हो गया। वृद्ध अतिवृद्ध, प्रौढ़ वृद्ध, युवा प्रौढ़ और कुमार युवा हो गये। कई वृद्ध संसार से विदा हो गये तो कई नये जीवों ने भव ग्रहण किया। कई धर्म-प्रवृत्तियाँ नई चलीं तो कई बंद हो गयीं। काल अविरत गति से चलता रहता है और पर्यायों का परिवर्तन होता रहता है।

अरुण भी अब नवयुवक हो गया था, परन्तु उसमें युवक जनोचित चञ्चलता नहीं थी। आचार्यदेव की चरणोपासना से उसने अलभ्य लाभ पाया था। उसकी प्रवृत्ति धर्म से युक्त थी। वह शिष्ट और शान्त युवक था। वह अपनी धार्मिक वृत्ति के कारण अपने मित्र-मण्डल में 'भगतजी' नाम से पहचाना जाता था। उसकी समझ विशिष्ट थी। उसका ज्ञान उत्तम था। कभी-कभी उसके हृदय में विरक्ति इतनी उत्कट हो जाती कि वह गृह त्यागकर आचार्यश्री के चरणों में ही आराधना करने के भाव से तरंगित हो जाता। यह बात गुरुदेव भी जानते थे।

वहाँ का श्रावक संघ तो आचार्यश्री के प्रति समर्पित था ही। किन्तु उनके ज्ञान, सौम्य स्वभाव और धर्म-वात्सल्य से वहाँ के साधारण-जन भी आचार्यश्री का सम्मान ही नहीं करते थे, प्रत्युत उन्हें गुरु ही मानते थे- आराध्य रूप में देखते थे। दिवस में एक बार उनके दर्शन-वन्दन से अपना अहोभाग्य समझते थे। उन महामहिम प्रभु की मंगलमयी सौम्य मुद्रा जन-जन के हृदय में रमती रहती थी। **(क्रमशः)**

चिन्तन

श्री अरुण मेहता 'एफ.सी.ए.'

1. बाल सफेद करने में ज़िन्दगी निकल जाती है, काले तो आधे घंटे में हो जाते हैं।
2. मैंने ज़िन्दगी से पूछा- "सबको इतना दर्द क्यों देती हो?" ज़िन्दगी ने हँसकर जवाब दिया- "मैं तो सभी को खुशी देती हूँ, पर एक की खुशी दूसरे का दर्द बन जाती है।"

-467-ए, सातवीं ए रोड़, चिल्ड्रन पार्क के पास, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

संवाद

जिनशासन की दीक्षा (5)

आचार्य विजययोगतिलक सूरिजी म.सा.

गुजराती पुस्तक 'जिनशासन की दीक्षा' का हिन्दी अनुवाद सुज्ञ श्रावकरत्न श्री स्वरूपचन्द जी बाफना 'सी.ए.', सूरत ने किया है। यह संवाद वैराग्य को पुष्ट करने वाला है। जनवरी-2015 से इसका क्रमिक प्रकाशन हो रहा है।- **सम्पादक**

आचार्यश्री- छोटे बालक की समझ कम होती है, उसे दीक्षा कैसे दी जा सकती है? इसका जवाब मैं देता हूँ। उसके पहले तुम मुझे समझाओ कि बालदीक्षा क्यों नहीं दी जा सकती है?

विलास- कारण एकदम स्पष्ट है- (1) छोटे बालक स्वयं का भविष्य निश्चित कर सकें, इतनी समझ वाले नहीं होते। (2) ऐसी परिस्थिति में उनके भविष्य को कोई निश्चित कर दे तो यह उनका हक खत्म करने जैसा है। (3) जातीय सम्बन्ध अर्थात् स्त्री-संग का कोई अनुभव उन्हें नहीं होता। बाद में इच्छा जग जाए तो उसे रोकने से बड़ा नुकसान होता है। रोक न सके तो पतन होता है। मैं पहले कह गया वैसा गुप्त संसार शुरु हो जाता है जो भयंकर है।

आचार्यश्री- छोटा बालक स्वयं के भविष्य के बारे में विचार कर सके, उतनी समझ वाला नहीं होता, इसलिए ही जिनशासन में 16 वर्ष से छोटे बालक को माता-पिता आदि की सहमति से दीक्षा देने की छूट है। समझदार माता-पिता बालक की प्रकृति पर विचार कर उसके भविष्य के बारे में निर्णय करें तो, वह उसके हित के लिए ही होता है। हक छीन लेना जैसा इसमें कुछ भी नहीं। और ऐसा माना जाये तो मनोविज्ञान के मानवीय नियमों का उल्लंघन करके, स्वयं की मूर्खता का प्रदर्शन करने वाले माता-पिता 18 महीने के बालक को उनकी इच्छा के विपरीत, स्वयं से अलग करके स्कूल में क्यों धकेलते हैं? इस पर विचार कर उत्तर दो।

विलास- उनको, उसके भविष्य की चिंता है। वे उसके संरक्षक हैं। उस बालक को भविष्य में सुखी बनाने की भावना से ही वे यह कार्य करते हैं।

आचार्यश्री- बालक को एक ज़िन्दगी तक का और वह भी भ्रामक सुख मिल जाये, ऐसी

आशा से (मिलेगा ऐसा जरूरी नहीं) माता-पिता बालक को 15-17 वर्ष इस तरह जबरदस्ती पढ़ा सकते हैं तो वे बालक को सच्चा सुख मिले, इन संभावनाओं से हमारे चरणों में समर्पित करें, तो इसमें क्या बुराई है? माता-पिता उसकी इच्छा से इस प्रकार का निर्णय कर सकते हैं। ऐसे प्रयत्नों में सफलता मिले और बालक स्वयं ही संसार त्याग के लिए तैयार हो जाये, तब दीक्षा क्यों नहीं दी जा सकती है? छोटा बालक बड़ा होकर पूरी दुनिया को हैरान करने वाला, ठगाई करने वाला, लुच्चा और लफंगा बने, इसमें व्यक्ति कोई परेशानी नहीं, परन्तु पूरी दुनिया को सच्चा सुख का मार्ग देने वाला, सज्जनता में शिरोमणि, जीवन में कभी भी स्वयं की ओर से जीवमात्र को पीड़ा नहीं देने वाला साधु बने, उसमें सबको परेशानी होती है। बालक को छोटेपन से वैराग्य की बातें समझाने में आती हैं तो वह स्वयं तो सुखी बनता ही है, साथ में पूरी दुनिया के लिए उपकारी बन सकता है और एक मात्र इसी भावना से उसके सच्चे संरक्षक माता-पिता स्वयं के बालक के लिए प्रयत्न करें, उसमें तुम्हें या मुझे किसी तरह की आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

अब बात जातीय इच्छा की- हमने पहले ही यह विचार ध्यान में ले लिया कि प्रत्येक जीव को चार व्यसन जन्मजात होते हैं। उनमें एक मैथुन भी है। यह मैथुनेच्छा मतलब जातीय इच्छा, वय प्रमाण स्वरूप बदलती रहती है। बालवय में चमकते खिलौने, बाद की वय में खेलकूद, बाद में स्त्री पुरुष का सम्बन्ध फिर नामवारी- कीर्ति, स्टेटस (जिसके लिए पत्नी को छोड़कर भी व्यक्ति धंधे में पूरा डूबा रहता है) फिर सत्ता प्राप्त करने की इच्छा और अंत में वृद्धावस्था में पौत्र व स्वजनों के प्रति लगाव रहता है। हम दीक्षा देने के पहले जिस वय का व्यक्ति है वह वय सम्बन्धी लगाव (जातीय लगाव) छोड़ने में समर्थ है कि नहीं, इसकी परीक्षा करते हैं। अमुक उम्र के बाद आदमी स्त्री छोड़ सकता है, परन्तु सत्ता, बाहरी व्यवहार एवं बातचीत नहीं छोड़ पाते हैं, ऐसे बहुत से होते हैं। उन्हें दीक्षा नहीं दी जा सकती है। इसीलिए जो जीव पूर्वभव से जातीय लगाव घटा करके आया है, वे ही बालक प्रयत्न से खिलौने और माता-पिता को छोड़ सकते हैं। सभी बालक नहीं छोड़ सकते। जो बालक बालवय के जातीय लगाव स्वरूप खिलौनों एवं माता-पिता को छोड़ सकते हैं, उनकी योग्य देखभाल की जाये तो

यौवनवय में स्त्री सम्बन्धी लगाव भी सरलता से त्यागा जा सकता है। कारण कि उसके आत्मस्थ संस्कार वैसे ही हैं। गृहस्थों में भी सार संभाल घटने से बहुत से परिवारों में व्यभिचार बढ़ा ही है। सार संभाल की जाए तो व्यभिचार को काबू में रखा जा सकता है। उसी रीति से साधुपना में भी मैथुन-त्याग सहज हो सकता है और जो माता-पिता स्वयं के बालक को पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करे और उसमें बालक की रुचि हो तो जरूर दीक्षा दी जा सकती है। न देना यह महापाप है। कारण कि सुखी होने के मार्ग पर जाते हुए बालक को रोकना अनुचित है। सुख क्या है? यह पूर्व में बता ही दिया है। छोटे बच्चों को स्कूल में भेजने वाले माता-पिता की अपेक्षा साधु बनने के प्रयत्न में सहयोग करने वाले माता-पिता बालक के सच्चे हितैषी हैं। बालपन से जुड़ा हुआ व्यक्ति सिद्धि के शिखर पर पहुँच सकने की संभावना रखता है, इसीलिए बाल दीक्षा सुयोग्य ही है।

यहाँ इतना जरूर कहूँगा कि व्यक्ति गड़बड़ हो सकता है। कभी कोई शिष्य का लालची गुरु किसी को फुसलाकर दीक्षा दे दे, और दीक्षा देने के बाद सुयोग्य शिक्षा, सार-संभाल न हो तो फिर मुश्किल खड़ी हो सकती है। परन्तु यह तो व्यक्ति की कमजोरी हुई, हम तो सिद्धान्त की बात करते हैं।

विलास- बहुत अच्छा! आपने मेरे सभी प्रश्नों का बहुत तार्किक और नास्तिक के भी दिल में उतर जाय वैसे प्रत्युत्तर देकर, मुझे संतुष्ट किया। अब एक अन्तिम प्रश्न पूछ लूँ? जैन साधु गन्दगी करके पर्यावरण बिगाड़ते हैं और जगत को नुकसान पहुँचाते हैं। वह किस तरह उचित कहा जाय?

आचार्यश्री- गंदा करने के सम्बन्ध में भी तुम्हारा भ्रम है, वास्तविकता बताऊँ तो.....? पर्यावरण की दृष्टि से साधु-जीवन के सिवाय दुनिया के किसी व्यक्ति का जीवन ऐसा नहीं है जो जगत में प्रदूषण नहीं फैलाता। कम से कम प्रदूषण मात्र साधु जीवन में ही संभव है, बाकी किसी भी जीवन में नहीं। कारण कि- 1. साधु गाड़ी में नहीं बैठते, इस कारण पेट्रोल वगैरह के धुएँ से होने वाला प्रदूषण नहीं होता। 2. साधु कभी पटाखे नहीं फोड़ते। 3. साधु कागज का एक भी टुकड़ा नहीं फैंकते। 4. साधु कपड़े का एक भी टुकड़ा नहीं फैंकते। 5. साधु पुड़िका, आइसक्रीम की सली, बिसलरी, प्लास्टिक के गिलास, डिश, थैली नहीं रखते और फैंकते नहीं, जिससे अनेक पशु-पक्षी, मछली वगैरह की हिंसा नहीं होती और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचता। 6.

साधु कहीं थूकते नहीं, कोई चीज़ कहीं कभी फेंकते नहीं । 7. साधु पान-तम्बाकू , गुटखा, मसाला खाते नहीं, इसलिए थूकने का प्रश्न ही नहीं। 8. धूम्रपान, बीड़ी, सिगरेट, गांजा वगैरह का नशा नहीं करते, जिससे धुंआ होकर प्रदूषण नहीं फैलता। 9. 100 साधु इकट्ठे हो गये हों तो भी जूठन का एक दाना भी वहाँ नहीं होता। 100 आदमी का जीमण हो तो कितनी गंदगी? 10. साधु जिसमें भोजन करते हैं, उसको धोकर स्वयं ही पी जाते हैं इसलिए बर्तन धोने से उत्पन्न गंदगी का प्रश्न ही नहीं और उससे किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं होता। 11. साधु कभी-कभी ही कपड़े धोते हैं तथा वह भी कम से कम पानी से धोते हैं, उस पानी को जमीन पर फैला-फैला कर डालते हैं, जिससे सूर्य के प्रकाश से तुरन्त सूख जाये। इसीलिए कीचड़ नहीं होता, प्रदूषण नहीं होता। 12. साधु पूरी ज़िन्दगी में कभी भी स्नान नहीं करते। आन्तरिक चर्या आदि अत्यन्त पवित्रता रखने वाले होते हैं, जिस स्नान से पानी के प्रवाह का प्रश्न ही नहीं होता, इसीलिए प्रदूषण की संभावना नहीं होती। अब तुम मुझे बताओ कि पर्यावरण का प्रदूषण सबसे कम कौन फैलाता है?

विलास- आपकी बात सौ प्रतिशत सही है महाराजश्री! आपकी यह बात वास्तव में दिल को स्पर्श करे वैसी है। आज वर्षों से मेरे दिमाग में जो गलत बातें भरी हुई थीं वे निकल गई हैं। अब एक भी बात ऐसी नहीं रही जिसके लिए मैं शंकाशील रहूँ।

आचार्यश्री- तुम्हारा यह सौभाग्य है कि तुम शांति से विचार कर सकने की योग्यता धारण करते हो। आज बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जिन्हें स्वयं के मन में बैठी बात से अलग हटकर दूसरी बात सुनने की तैयारी ही नहीं होती, ऐसे लोग सत्य से हमेशा दूर रहते हैं। अतः जो बात सच्ची है, उसे समझो और समझाओ। इससे अलग बात भी कोई तर्क से सिद्ध करके बताए तो उसे भी सुनने, स्वीकार करने की तैयारी रखनी चाहिए। तुम सत्य को प्राप्त करो, सत्य प्राप्त करके सच्चा सुख प्राप्त करो और संयम की साधना कर दुःख के चंगुल से छूट जाओ, यही शुभ अभिलाषा.....।

विलास- महाराजश्री! आपके चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

(समाप्त)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (10)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(बीसवाँ अध्ययन-महानिर्ग्रन्थीय)

सिद्धों और संयत को मेरा, भाव भरा है वंदन,
धर्म अर्थ का ज्ञान कराऊँ, तथा पूर्ण संबोधन,
हितकामी करते अभिलाषा, ज्ञान से सत्य जगालो
जीवन धन्य बनालो.....।।244।।

करने को आमोद मगधपति, पहुँच गया उपवन में,
आँख टिकी ध्यानस्थ मुनि पर, सौम्य लगे यौवन में,
सुन्दर संयत रूप देखकर, मन में उन्हें बसालो
जीवन धन्य बनालो.....।।245।।

कैसा सुन्दर रूप रंग है, कैसी है कोमलता,
कैसी इनकी अनासक्ति है, क्षमा और निर्मलता,
दर्शन से अभिभूत था राजन, दर्शन कर सुख पालो
जीवन धन्य बनालो.....।।246।।

वंदन कर राजा ने पूछा, अभी तरुण हो मुनिवर,
भोगकाल में हुए प्रव्रजित, क्या कारण है प्रियवर,
उत्कट जिज्ञासा है मन में, इसका राज निकालो
जीवन धन्य बनालो.....।।247।।

धीर वीर संयत तब बोले मैं, अनाथ था राजन्,
करुणाशील मिला न कोई, बन्धु-बान्धव परिजन,

इसीलिए संयम को धारा, योगक्षेम अपनालो
जीवन धन्य बनालो.....।।248।।

मुक्तहास से राजा बोला, ऋद्धिमान तुम लगते हो,
फिर भी अनाथ कहा क्यों भंते! मन में प्रश्न उभरते,
मैं बनता अब नाथ तुम्हारा, मेरे संग में चालो
जीवन धन्य बनालो.....।।249।।

परिजन के संग में रह करके, सुखभोगी बन महको,
मुश्किल है मानव तन मिलना, दुःख देते क्यों इसको,
सुख को तजना योग्य नहीं है, भिक्षा वृत्ति टालो
जीवन धन्य बनालो.....।।250।।

भोग निमंत्रण पाकर मुनिवर, बोले ऐसे गहरे,
तुम खुद राजन् हो अनाथ, क्या नाथ बनोगे मेरे,
खरे वचन को कहना सुनना, धैर्य धर्म अपनालो
जीवन धन्य बनालो.....।।251।।

अश्रुत वचन मुनि के सुनकर, मगधपति चकराया,
मैं सम्राट हूँ मगध देश का, अपना वैभव गाया,
मेरी सत्ता सब पर चलती, मुनिवर संशय टालो
जीवन धन्य बनालो.....।।252।।

होता कौन अनाथ यहाँ पर, कौन सनाथ कहाता,
ज्ञात नहीं है तुमको राजन्, सुनो मैं आज बताता,
नाथ-अनाथ की परिभाषा को, सुनकर भ्रांति मिटालो
जीवन धन्य बनालो.....।।253।।

एक चित्त हो सुनना राजन्, घटना नहीं पुरानी,
हुआ अनाथ मैं कैसे सुनलो, अनुभव भरी कहानी,
धन वैभव सत्ता का राजन् अहं कभी मत पालो
जीवन धन्य बनालो.....।।254।।

नगरों में सुन्दर नगरी थी, कौशाम्बी इक न्यारी,
पिता वहीं रहते थे मेरे, विपुल सम्पदा धारी,
साधन सुविधा धन वैभव था, पूर्व परिचय पालो
जीवन धन्य बनालो.....।।255।।

यौवन वय में एक दिन मेरे, नेत्र वेदना उभरी,
वो पीड़ा थी शस्त्र प्रहार सम, अंग-अंग में गहरी,
मैं बेचैन था गहरा पीड़ित, कोई पीड़ा टालो
जीवन धन्य बनालो.....॥256॥

पिता ने मेरी पीड़ा हरने, कुशल वैद्य बुलवाए,
माता भाई बहनें पत्नी, सबने करी दुआएँ,
टाल सका ना कोई पीड़ा, कर्म कहानी सुनालो
जीवन धन्य बनालो.....॥257॥

मिली शरण ना मुझे किसी की हुआ न कोई रक्षक,
धन परिजन भी काम न आये, रोग बना विस्फोटक,
यही अनाथपना था मेरा, राजन् भरम मिटालो
जीवन धन्य बनालो.....॥258॥

मन ही मन संकल्प किया तब, लगती पीड़ा भारी,
मुक्त अगर हो जाऊँ इससे, बन जाऊँगा अणगारी,
यही सोचकर मैं सोया था, श्रद्धा भाव बसालो
जीवन धन्य बनालो.....॥259॥

रात्रि बीती चैन से मेरी, गई वेदना सारी,
परिजन से अनुमति पाकर के, मैंने दीक्षा धारी,
तब से नाथ बना मैं अपना, दया धर्म को पालो
जीवन धन्य बनालो.....॥260॥

दुःख का मूल सुना है राजन्, कर्मों का ये फल है,
आस्रव और निर्जरा से ही, दुःख होते निष्फल हैं,
परम औषधि श्रद्धा का बल, पीलो और पिलाओ
जीवन धन्य बनालो.....॥261॥

जो जग के भोगों को त्यागे, संयम वृत्ति धारे,
वही नाथ होता है अपना, राग-द्वेष जो टारे,
सब जीवों का रक्षण करके, सबके नाथ कहालो
जीवन धन्य बनालो.....॥262॥

वैतरणी सम दुःखद आत्मा, कूट शाल्मली आत्मा,
कामधेनु सम सुखद आत्मा, नन्दनवन ही आत्मा,
नाथ अनाथ स्वयं ही आतम, आतम रूप सम्भालो
जीवन धन्य बनालो.....।।263।।

सुख-दुःख दाता अन्य नहीं है, स्वयं आत्मा अपनी,
आत्मा मित्र है आत्मा शत्रु, करणी जैसी भरनी,
नहीं किसी को दोषी कहना, दोष से खुद को बचालो
जीवन धन्य बनालो.....।।264।।

अन्य अनाथ भी होते राजन्, सुनो जिक्र अब उनका,
कायर बनकर संयम पाले, खेद खिन्न मन जिनका,
साधु होकर दोष लगाते, उनको अनाथ कहालो
जीवन धन्य बनालो.....।।265।।

महाव्रत का नहीं सम्यक् पालन, और प्रमाद जो करते,
नहीं अनुशासन रस आसक्ति, राग-द्वेष नहीं तजते,
ऐसा श्रमण अनाथ कहाता, करुण दशा को टालो
जीवन धन्य बनालो.....।।266।।

पंच समिति में नहीं यतना, वीर मार्ग नहीं चलता,
केवल द्रव्य से मुण्डित रहता, अनुशासन से भगता,
इससे बढ़कर क्या है अनाथ का, समझो दोष निकालो
जीवन धन्य बनालो.....।।267।।

खाली मुट्ठी खोटा सिक्का, मूल्य न कांच मणि का,
द्रव्य लिंग से पूजा पाता, मूल्य न ऐसे मुनि का,
जन्म-मरण दुःख छूट सके ना, ये अनाथता टालो
जीवन धन्य बनालो.....।।268।।

कालकूट विष उलटा आयुध, खुद का घात कराता,
वश में नहीं वेताल अगर तो, स्वामी को मरवाता,
विषय युक्त है धर्म भी ऐसा, आत्मघात को टालो
जीवन धन्य बनालो.....।।269।।

तंत्र मंत्र लक्षण विद्या से, जीवन यापन करता,
ऐसा साधक मिथ्या भ्रम से, दुर्गति का दुःख भरता,
शरण मिले नहीं उसको कोई, कर्म का कर्ज चुकालो
जीवन धन्य बनालो.....।।270।।

नित्य सदोषी भोजन करता, पाप से दुर्गति पाता,
गला काटने वाले से भी, ज्यादा अहित कराता,
अंत समय में खेद है करता, पश्चात्ताप को टालो
जीवन धन्य बनालो.....।।271।।

विपरीत बुद्धि रखे मोक्ष में, उभयलोक नहीं सधता,
भोगासक्त स्वच्छन्दी साधु, दुःख द्वन्द्वों में फंसता,
भ्रष्ट भिक्षु संताप को पाते, जिनपथ को अपनालो
जीवन धन्य बनालो.....।।272।।

मेधावी सुनकर हित शिक्षा, तजे कुशील के पथ को,
तीर्थंकर के पथ पर चलके, पहुँच मोक्ष तीरथ को,
ज्ञात चरित से समृद्ध होकर, बंध का हेतु छुड़ालो
जीवन धन्य बनालो.....।।273।।

शीलहीन का मारग छोड़े, जिन पथ को अपनाए,
श्रेणिक राजन् सुनो ध्यान से, वो सनाथ कहलाए,
ऐसा मार्ग मोक्ष का कारण, शाश्वत सुख को पालो
जीवन धन्य बनालो.....।।274।।

मुनि उपदेश से हर्षित राजा, हाथ जोड़कर बोला,
प्रभु आपने अनाथता का, तत्त्व यथार्थ खोला,
जन्म सफल ऐसे मुनिजन का, स्व-पर नाथ कहालो
जीवन धन्य बनालो.....।।275।।

जिज्ञासावश मैंने आपके, ध्यान में डाली बाधा,
भूल से भोग का दिया निमंत्रण, मैं अपराध खमाता,
श्रेणिक ने समकित गुण पाया, धर्म से प्रीत जगालो
जीवन धन्य बनालो.....।।276।।

हर्ष भाव से श्रेणिक राजा, वंदन कर घर आया,
सच्चे साधक मुनि अनाथी, जिनका यश जग छाया,
धन्य अनाथी धन्य है राजा, जिनसे सत्य जगालो
जीवन धन्य बनालो.....।।277।।

त्रिगुप्ति के धारक मुनिवर, गुण के रत्नाकर हैं,
रहते विरत तीन दण्ड से, जिनवर के अनुचर हैं,
परिग्रह रहित विहग की भाँति, इस भूतल पर चालो
जीवन धन्य बनालो.....।।278।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

क्रोध की जीवनी

श्री सचिन कुमार जैन

कारण

1. भौतिकता की प्रगति के साथ क्रोध और चिन्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि।
2. इच्छाओं की अधिकता से मन में असंतोष एवं तज्जन्य क्रोध।

परिणाम

1. स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव
2. रिश्तों में मधुरता का अभाव
3. परिवारों में टकराव
4. अड़ौस-पड़ौस में दुश्मनी
5. असमय में वृद्धावस्था
6. घर में नरक सा वातावरण
7. विवेक का नाश
8. नकारात्मक सोच में अभिवृद्धि
9. हीनता का भाव
10. मानसिक क्लेश

निवारण के उपाय

1. स्वाध्याय
2. क्रोध के परिणामों का चिन्तन
3. अनुप्रेक्षा
4. सकारात्मक सोच
5. मिली हुई परिस्थिति को स्वीकार करना
6. जागरूक होकर क्रोध को स्वयं पर हावी न होने देना
7. क्रोध न करने का संकल्प
8. अपेक्षाओं में कमी

-आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

कैसे करें स्वाध्याय?

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

स्वाध्याय की परम्परा

प्राचीन काल से ही भारत में स्वाध्याय की परम्परा चली आ रही है। 'स्वाध्याय' शब्द की व्युत्पत्ति स्व+अधि+आय के रूप में हुई है, जिसका अर्थ है अपने आपका, अपनी आत्मा का अध्ययन व अपने आत्म-स्वरूप का बोध। ऐसा होने में शास्त्र अवलम्बन है, अतः शास्त्राध्ययन भी स्वाध्याय है। प्राचीन काल में भारत में गुरुकुलों में ज्ञान प्रदान किया जाता था। उस समय विद्यार्थी की शिक्षा समाप्त होने पर आचार्य शिष्य को विदा करने के समय कहते थे, "वत्स! तूने अब अपना अध्ययन सम्पूर्ण किया। अब तुम जीवन के क्षेत्र में इस सीखे हुए ज्ञान को चरितार्थ करने के लिए प्रवेश कर रहे हो। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ। तुम जीवन में तीन बातों को हमेशा याद रखना"

सत्यं वद।
धर्मं चर।
स्वाध्यायान्मा प्रमदः।

अर्थात् तुम जीवन में सत्य का अनुसरण करना, धर्म का आचरण करना और स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करना। अतः उस समय स्वाध्याय करने पर बहुत जोर दिया जाता था।

स्वाध्याय योग्य साहित्य

साहित्य को हम दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं- श्रेयस्कारी और प्रेयस्कारी। श्रेयस्कारी साहित्य जीवन का कल्याण करने वाला, उसे ऊँचा उठाने वाला होता है, प्रेयस्कारी साहित्य मनुष्य का मनोरंजन करने वाला होता है। स्वाध्याय के अंतर्गत वह सब साहित्य आता है जो मनुष्य की उदात्त भावनाओं को जागृत करता है तथा उसे सत्कर्म करने की प्रेरणा देता है। स्वाध्याय का अर्थ केवल पढ़ना नहीं, आत्म-चिंतन, विचारशीलता व जागरूकता भी है। जिस व्यक्ति में जागरूकता है वही स्वयं का तथा समाज का उत्थान कर सकता है।

स्वाध्याय का लक्ष्य

स्वाध्याय में हमारा लक्ष्य क्या है, यह समझना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि मात्र कुछ पुस्तकों को कुछ समय के लिए पढ़ लेना वास्तविक रूप में स्वाध्याय नहीं है। स्वाध्याय का लक्ष्य है 'स्व' अर्थात् अपने आत्म-स्वरूप की जानकारी। मैं कौन हूँ, मेरे

जीवन का लक्ष्य क्या है, मुझे क्या कर्म करने चाहिये और क्या नहीं करने चाहिये, इन सबका ठीक प्रकार से ज्ञान प्राप्त करना स्वाध्याय का उद्देश्य है। अध्यात्म में इसे भेद विज्ञान कहते हैं अर्थात् यह अनुभव करना कि शरीर और आत्मा अलग-अलग है। नश्वर शरीर के भीतर जो अविनश्वर चिरंतन आत्म-तत्त्व है, उसका चिंतन व बोध प्राप्त करना स्वाध्याय है। भगवान महावीर ने कहा- "जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ।" अर्थात् जो एक (आत्मा) को जानता है वह सब (जगत्) को जानता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि शिक्षा मात्र विभिन्न सूचनाओं का संग्रह नहीं है जो हमारे मस्तिष्क में ठूंस-ठूंस कर भर दी जाती हैं और जो बिना आत्मसात् हुए वहाँ हमेशा गड़बड़ मचाती रहती हैं। हमें उन विचारों की आवश्यकता है जो 'जीवन-निर्माण', 'मनुष्य-निर्माण' तथा 'चरित्र-निर्माण' में सहायक हों। इस प्रकार 'मनुष्यत्व' का ज्ञान प्रदान करने वाली शिक्षा प्राप्त करना ही स्वाध्याय का लक्ष्य है।

स्वाध्याय का महत्त्व

जैन साधना में स्वाध्याय को बहुत महत्त्व दिया गया। भगवान महावीर ने कहा है कि स्वाध्याय महान् तप है। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान से पूछा गया-"हे भगवन्! स्वाध्याय करने से जीव को क्या लाभ होता है?" भगवान ने उत्तर दिया-"सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।" अर्थात् स्वाध्याय से जीव ज्ञानावरणीय (ज्ञान को रोकने वाले) कर्मों का नाश करता है। भगवती सूत्र 2.111 में प्रभु महावीर ने बतलाया कि सही प्रकार से स्वाध्याय करने से मनुष्य अपने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात् परमात्म-स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। वह गाथा है-

"सवणे नाणे य विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हये तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धि।।"

अर्थात् धर्म-श्रवण (स्वाध्याय) से निम्न लाभ होते हैं- 1. ज्ञान, 2. विशिष्ट तत्त्व-बोध, 3. प्रत्याख्यान (सांसारिक पदार्थों का निरोध), 4. संयम, 5. अनास्रव (नवीन कर्मों का निरोध), 6. तप, 7. पूर्वबद्ध कर्मों का नाश, 8. सर्वथा कर्मरहित स्थिति व 9. सिद्धि (मुक्त स्थिति)। इससे ज्ञात होता है कि जीवन की साधना में स्वाध्याय का स्थान सर्वोपरि है।

स्वाध्याय के अंग

जैन शास्त्रों में स्वाध्याय के बारे में विशद विवचेन मिलता है। प्राचीनकाल में जब पुस्तकों का प्रचलन नहीं था तब भी स्वाध्याय किया जाता था। उस समय ज्ञान को कंठस्थ रखने की परम्परा थी। शिष्य गुरुजनों से शास्त्र श्रवण कर उन्हें अपनी स्मृति में संजोकर रखते थे। वेदों को 'श्रुति' और आगम को 'श्रुत' कहा गया, यह इसी तथ्य का सूचक है।

जैन आचार्यों ने स्वाध्याय के निम्न पाँच अंगों का विस्तृत विवेचन किया है-

1. **वाचना**- स्वाध्याय का पहला प्रकार वाचना है। शास्त्र या सत्साहित्य पढ़ना, गुरुजनों से ज्ञान ग्रहण करना, उनके प्रवचन सुनना वाचना कहलाता है।
2. **पृच्छना**- पढ़े हुए या सुने हुए ज्ञान के बारे में कोई शंका हो या उसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो तो उसके बारे में जिज्ञासा वृत्ति से प्रश्न पूछना ताकि विषय स्पष्ट हो जाये, पृच्छना कहलाता है।
3. **परावर्तना**- पूर्व पठित ज्ञान को बार-बार स्मरण करना या उसका पुनःपुनः पारायण करना परावर्तना कहलाता है। बार-बार याद करने से ज्ञान स्मृति में स्थायी रूप से स्थिर हो जाता है।
4. **अनुप्रेक्षा**- पठित अंश के बारे में निरन्तर चिंतन-मनन करना तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना अनुप्रेक्षा कहलाता है। इससे ज्ञान में व्यापकता आती है। अनुप्रेक्षा द्वारा स्वाध्यायी ज्ञान में गम्भीरता प्राप्त करता है।
5. **धर्मकथा**- जब स्वाध्यायी ज्ञान को ग्रहण कर उसे आत्मसात् कर लेता है तब उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने निर्मल ज्ञान से अन्य लोगों को ज्ञान देकर उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करे। साधक वार्ता, चर्चा, प्रवचन, अध्यापन, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से अपने ज्ञान को भी सुदृढ़ करता है तथा समाज को भी लाभान्वित करता है।

आगम ग्रन्थों में साधु की जीवन चर्या का वर्णन करते हुए कहा है कि वह दिन के प्रथम और चतुर्थ तथा रात्रि के भी प्रथम व चतुर्थ प्रहर में स्वाध्याय करे। इस प्रकार मुनि प्रतिदिन चार प्रहर तक स्वाध्याय करे। आचार्य कुंदकुंद ने लिखा है- ''**आगमचक्खू साहू, इंदियचक्खूणि सव्वभूदाणि**'' अर्थात् अन्य सभी व्यक्ति इन्द्रियों की आँख वाले हैं, पर साधु आगम की आँख वाला है। कहने का तात्पर्य यह है कि साधक निरन्तर आगम ज्ञान का चिन्तन करता रहे तथा आगम के आधार पर ही अपने जीवन का संचालन करे।

स्वाध्याय कैसे करें?

सत्साहित्य का अध्ययन करना स्वाध्याय कहलाता है, लेकिन यह स्वाध्याय किस प्रकार से किया जाय, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। स्वाध्याय में पूरा मन लगाना चाहिये। आचार्य विनोबा भावे के अनुसार स्वाध्याय गम्भीरतापूर्वक करना चाहिये। उन्होंने लिखा है-''अध्ययन में महत्त्व लम्बाई-चौड़ाई का नहीं, गम्भीरता का है। बहुत देर तक घंटों भाँति-भाँति के विषयों के अध्ययन करने को मैं लम्बा-चौड़ा अध्ययन कहता हूँ। समाधिस्थ होकर नित्य थोड़ी देर किसी एक निश्चित विषय के अध्ययन को मैं गम्भीर अध्ययन कहता

हूँ। दस-बारह घंटे सोना, पर करवटें बदलते रहना- ऐसी नींद से विश्रांति नहीं मिलती। बल्कि पाँच-छः घंटे सोयें, किन्तु गाढ़ और निःस्वप्न निद्रा हो, तो उतनी नींद से पूर्ण विश्रांति मिल सकती है। यही बात अध्ययन की भी है। गम्भीरता अध्ययन का मुख्य तत्त्व है।''

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के अनुसार बांचने, पढ़ने और स्वाध्याय में अंतर है। हम दस पृष्ठों के अखबार की मुख्य-मुख्य खबरें दस मिनट में बाँच लेते हैं। इससे विषय आत्मसात् नहीं होता। उनके ही शब्दों में- ''हम बाँचते बहुत हैं, थोड़ा पढ़ते भी हैं, पर स्वाध्याय कहाँ है हममें? स्वाध्याय की शर्त यह नहीं है कि हम आसन पर बैठकर एक नियत समय पर पढ़ें, स्वाध्याय की अनिवार्य शर्त है गहरी जिज्ञासा, अपने दोषों-कमियों को दूर करने की तीव्र आकांक्षा और पूर्णता प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प। जिसमें जिज्ञासा, आकांक्षा और संकल्प की यह त्रिवेणी नहीं बहती, वह बाँचेगा, पढ़ेगा पर स्वाध्याय कहाँ करेगा?''

श्रेष्ठ स्वाध्यायी के अनुभव

सुविख्यात विद्वान् एवं सुश्रावक श्री अगरचंदजी नाहटा केवल पाँचवीं कक्षा तक ही पढ़े थे, लेकिन शुरू से ही उनकी पुस्तकों को पढ़ने की रुचि थी। पूज्यश्री जिनकृपाचंदसूरिजी के व्याख्यान सुनने से उनमें स्वाध्याय का भाव जगा। उन्होंने लिखा है- ''सहज तथ्य है कि किसी कार्य का फल उसमें एकाग्र और निमग्न हुए बिना नहीं मिलता। मेरा स्वाध्याय में बहुत मन लगता है। उसमें ऐसा रस मिलता है कि अन्य सब बातें और बीतता हुआ वक्त जाना ही नहीं जाता। इसलिए साधना के अनेक प्रकार होते हुए भी मुझे स्वाध्याय ही सर्वाधिक प्रिय है। यही कारण है कि मैं अब तक हजारों ग्रन्थों व लाखों पृष्ठों को पढ़ चुका हूँ और इसी विशाल अध्ययन के बल पर विविध विषयों पर इतने लेख लिखने संभव हुए।''

स्वाध्याय के द्वारा सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति भी विद्वत्ता के शिखर पर पहुँच सकता है, श्री नाहटाजी इसके एक उदाहरण हैं। आपने अपने सम्पर्क में आने वाले अनेक व्यक्तियों को नियमित सामायिक व स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। आप स्वाध्याय का बड़ा ही सहज तरीका बताते हैं। उनके ही शब्दों में- ''मेरा सीधा हिसाब है, एक घंटे में 20-30 पृष्ठ पढ़े जा सकते हैं। एक सामायिक एक महीने तक करने पर 600-700 पृष्ठ व वर्ष भर करने पर 8500 पृष्ठों का वाचन हो जाता है। यदि दो सामायिक की जाये तो यह संख्या 16000 पृष्ठों के लगभग हो जायेगी। गत 35 वर्षों में मैंने केवल सामायिक में ही लाखों पृष्ठ पढ़ डाले हैं तो अन्य समय में भी उससे कुछ कम नहीं पढ़ गया हूँ। इसलिए प्रायः बड़े से बड़े विद्वान् को भी कुछ न कुछ जानकारी देने की योग्यता प्राप्त हो सकी है। वैसे ज्ञान का

अंत नहीं है और मेरा भाषा-ज्ञान भी सीमित है। प्राकृत-संस्कृत पढ़ी नहीं, अंग्रेजी तो शुरु में कुछ पढ़ी थी, वह भूल सा गया तथा वैसी असाधारण प्रतिभा भी मुझमें नहीं है। फिर भी आज तक कुछ ज्ञानार्जन कर सका, यह स्वाध्याय का ही सुफल है। आशा है मेरे जीवन के अनुभव से प्रेरणा लेकर सभी लोग स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त होंगे और उससे लाभ उठायेंगे।''

स्वाध्याय का प्रारम्भ

स्वाध्याय के लिए आगम-ग्रंथों का अध्ययन सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन यह काफी कठिन है। अतः शुरु में कुछ चुनी हुई सूक्तियों का अर्थ समझकर आगे बढ़ना चाहिये। सम्प्रति सभी भाषाओं में उत्तम साहित्य का निर्माण हुआ है। महापुरुषों की जीवनियाँ, श्रमण-श्रमणियों के प्रवचन इत्यादि का पठन, मनन व परिशीलन करना चाहिये। इसी प्रकार बोध कथाओं को भी पढ़ना उचित है। प्राचीन एवं अर्वाचीन कवियों के भजन, दोहे, कविता, सवैया, स्तोत्र, सूक्त आदि को पढ़ने, समझने व याद करने से स्वाध्याय में आगे बढ़ा जा सकता है। धीरे-धीरे तत्त्वज्ञान की गम्भीरता को समझना चाहिये। अनेक स्थानों पर स्वाध्याय संघों द्वारा स्वाध्याय के अनेक कार्यक्रम, शिविर, व्याख्यान आदि आयोजित होते हैं, उनमें भाग लेना चाहिये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वाध्याय आत्म-स्वरूप का बोध कराने का उत्तम साधन है। हम प्रतिदिन स्वाध्याय करें, नित नया ज्ञान प्राप्त करें और उसे अन्य लोगों में प्रचारित करें, श्रेष्ठ स्वाध्यायी बनें, इसी में जीवन की सार्थकता है, यही आज के युग की आवश्यकता है।

-70, टी.टी.के. रोड़, अल्वारपेट, चेन्नई-600018 (तमिलनाडु)

अनाग्रही सत्य को प्राप्त करता है

श्री अनोखीलाल मोगरा

एक चींटी नमक के पर्वत पर रहती थी और दूसरी चीनी के पर्वत पर। एक दिन दोनों मिली। बातचीत में नमक के पर्वत पर रहने वाली चींटी ने कहा- मेरा मुख निरन्तर खारा रहता है। दूसरी चींटी ने कहा- मेरे घर चलो। वहाँ सब कुछ मीठा है। वह उसके साथ चली गई।

वहाँ भी वह बोली- मेरा मुँह तो खारा ही है। दूसरी चींटी ने कहा- मुख में विद्यमान नमक के कणों को नहीं छोड़ा तो कैसे मधुरता की अनुभूति होगी?

आग्रह के लवण कणों को मुख में धारण करता हुआ मनुष्य क्या कहीं भी सत्य रस का आस्वाद लेने में समर्थ हो सकता है? *-मु.पो. मोरवन बांध, जिला-नीमच (मध्यप्रदेश)*

बाल-स्तम्भ

पुस्तकें, बाल-मन और संघर्ष

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जून 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

(1) पुस्तकें कैसे पढ़ें?

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

पुस्तक पढ़ने के नियमों को समझने से पहले यह जान लेना चाहिए कि सभी पुस्तकें एक समान नहीं होतीं। जैसा कि प्रसिद्ध विचारक बेकन ने कहा है- "कुछ किताबें चखने के लिए होती हैं। कुछ थोड़ी-सी चबाये जाने के लिए। कुछ निगल जाने के लिए होती हैं और कुछ हज़म किये जाने के लिये भी होती हैं।" अतः पुस्तक के विषय में बहुत जागरूक होकर उसे हाथ में उठाना चाहिए और पढ़ते समय मन व बुद्धि को जागृत रखना जरूरी है। हर काम का एक तरीका होता है। बिना सलीके के पहने गए कपड़े कितने भद्दे लगते हैं। पुस्तकें पढ़ने के भी कुछ नियम और मान्यताएँ हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि बड़े-बड़े विद्वान और पढ़े-लिखे लोग भी इन नियमों की उपेक्षा करते हैं।

पुस्तकों को मात्र कागजों के पृष्ठ ही न समझें। सभी पुस्तकें ज्ञान-मंजूषाएँ हैं। इनमें ज्ञानियों की आत्मा बसती है। अतः किसी भी कीमत पर पुस्तकों के पन्नों को थूक लगाकर नहीं पलटना चाहिए। विद्या और ज्ञान की मंजूषा पुस्तक के थूक लगाकर पन्ने पलटना पहले दर्जे की मूर्खता है, ज्ञान की देवी सरस्वती का अपमान है। अतः अंगुली को शुद्ध जल से गीला करके पृष्ठ पलटने चाहिए। सस्ते उपन्यासों और अश्लील साहित्य पढ़ने वालों के मन में पुस्तक का निरादर हो तो आश्चर्य की कोई बात नहीं, पर अच्छे संस्कार वाले पढ़े-लिखे लोगों को जब थूक लगी अंगुली से पृष्ठ पलटते देखा जाता है तो बड़ी पीड़ा होती है।

पुस्तक के पृष्ठ कभी नहीं मोड़ने चाहिए। कहाँ तक पढ़ लिया, इसके लिए पुस्तक चिह्न लगाना चाहिए। पुराने पोस्टकार्ड, मोटा धागा या गत्ता आदि के पुस्तक चिह्न बना लेने चाहिए। पुस्तकों के पृष्ठों पर कुछ लिखना भी अनुचित है। जब भी पढ़ने बैठें, एकाग्र होकर ही पढ़ें। सरसरी निगाह से पढ़ने से कोई लाभ नहीं होता। पढ़ते समय नोट बुक रखें और जो बातें याद रखने योग्य हों, उन्हें तुरन्त नोट कर लेना चाहिए।

कुछ पुस्तकें अप्राप्य होती हैं। वे बाजार में नहीं मिलतीं। उनके बाजार में न मिलने का कारण यह नहीं होता कि उनका महत्त्व कम है। उनकी आम बिक्री नहीं होती या वे बहुत कीमती होती हैं, इसलिए उनका पुनर्मुद्रण नहीं होता और उन्हें 'आउट ऑफ प्रिंट' कहा जाता है। ऐसी उपयोगी पुस्तकें अच्छे-पुराने और बड़े-बड़े पुस्तकालयों में मिलती हैं। किसी अच्छे पुस्तकालय का सदस्य बनकर स्वाध्याय की भूख को तृप्त करके ज्ञानार्जन करना बड़ा सुगम होता है। पुस्तक से मिला ज्ञान स्वयं के जीवन को भी आलोकित करता है और दूसरों के जीवन को भी।

इस प्रकार ज्ञान-प्राप्ति के मार्गों में अध्ययन और चिंतन-मनन मुख्य हैं। अनुसरण या नकल से प्राप्त ज्ञान वास्तव में ज्ञान नहीं, उधार ली हुई समझ है। उधार ली हुई समझ कभी काम नहीं आती। वैज्ञानिक कहते हैं कि चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश उधार लेता है, इसलिए दिन में निस्तेज दिखता है। उधार के ज्ञान से न तो जीवन का और न व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। यह ज्ञान तो स्वतः ही 'करत-करत अभ्यास' की फलश्रुति है या दीर्घकाल की यात्रा है। उसके लिए कोई शिक्षण, अभ्यास या प्रयास की अपेक्षा नहीं रहती।

(2) बाल मन

श्री दिलीप गाँधी

स्वाति की बून्दों की तरह
बच्चों तुम्हारा मन है
राग-द्वेष से रहो परे,
यही तुम्हारा धन है।
हर घड़ी हर पल ध्यान
अपने लक्ष्य पर हो
माता-पिता, धर्म, गुरु की सीख अपना उद्देश्य हो,
हृदय के सिंहासन पर आसन निर्मलता का है
चित्त के आकाश पर उजाला पवित्रता का है

अणु से विराट बनने की शक्ति तुम्हारे पास है
लघु से गुरु बनने की भक्ति तुम्हारे पास है
अरमान देखो तुम बड़े
सफलता तुम्हारी दास है
लगे रहो, डटे रहो पुरुषार्थ तुम्हारा खास है
तोड़ना मुसीबत के घेरे को
आशीर्वाद तुम्हारे साथ है
मिटाना उलझन के अंधेरे
प्रार्थना तुम्हारे साथ है
अनुपम जीवन, हर्षित तन-मन
कभी ना उदास हो
घर परिवार, राष्ट्र जगत के तुम अभिमान हो
आने वाले समय की तुम तकदीर और शान हो
मन में हो विश्वास पूरा होना है कामयाब
'गाँधी' कहे बाल मन से एक दिन बनोगे नवाब

-चित्तौड़गढ़ (राज.)

(3) संघर्ष

डॉ. रमेश 'मयंक'

जो बीज-
तूफान-ओले-बारिश के
संघर्षों को झेल पाता है
वही
फसल बनकर लहराता है
बीज के संघर्ष का यही सार है
ज़िन्दगी हार नहीं
उपकार और उपहार है
जीवन संघर्ष से निखरता है
संघर्ष की चोट
जीव को चोटी पर पहुँचाती है

पत्थर की शिला भी
तराशने की चोटें सहन कर
महान् प्रतिमा बन जाती है
जिन्होंने संघर्ष किया
उत्कर्ष पर पहुँच है,
संघर्ष में तनाव को नहीं
पुरुषार्थ को अपनाएँ,
आध्यात्मिक साधना में
विकारों से संघर्ष कर
आत्मा को प्रबल पुरुषार्थी बनाएँ।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

प्रश्न:-

1. कवि ने बच्चों का धन किसे कहा है?
2. सफलता किससे मिलती है?
3. ऐसे प्रसिद्ध दो व्यक्तियों के नाम बताओ, जिन्होंने जीवन में बहुत संघर्ष किया।
4. 'संघर्ष' कविता में कवि ने किनके संघर्ष की कहानी बताई है?
5. बेकन के कथन का अभिप्राय समझाइये।
6. पुस्तकों को पढ़ते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? (कोई चार)

बाल-स्तम्भ [मार्च-2015] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'मीठी वाणी बोलिए' रचना के प्रश्नों के उत्तर 39 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	लक्की कांकरिया-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)	29
द्वितीय पुरस्कार-300/-	रुचिबाला जैन-सिंगोली-नीमच(मध्यप्रदेश)	28
तृतीय पुरस्कार- 200/-	श्लोक जैन-जयपुर (राज.)	27.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अंकिता चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	27
	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	26.5
	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़ (राज.)	26
	आयुषी आहूजा-जयपुर (राज.)	26
	विशाल सिंघवी-जोधपुर (राज.)	26

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

भगवान महावीर- आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा., ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, ***पृष्ठ***-256+34, ***मूल्य***- 40 रुपये मात्र, सन् 2015

यह ग्रन्थ 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' भाग-प्रथम (तीर्थंकर खण्ड) में वर्णित भगवान महावीर के जीवन चरित्र का पुस्तकाकार है। पृथक् पुस्तक के रूप में प्रकाशित होने से पाठकों के लिए सुविधाजनक, सुग्राह्य एवं सम्वाह्य है। भगवान के पूर्वजन्म की कथा से लेकर निर्वाण तक के आद्योपान्त जीवन चरित्र को यहाँ रेखांकित किया गया है, जिसमें कल्याणक, गर्भ में आगमन, गर्भापहार, गर्भ में अभिग्रह, बालक्रीड़ा, विवाह, दीक्षा, अभिग्रह, साधना के वर्ष, केवलज्ञान, प्रथम देशना, केवलीचर्या के तीस वर्ष, गणधर, महावीर कालीन धर्म परम्पराएँ, अविस्मरणीय संस्मरण, महावीर और बुद्ध के निर्वाण का ऐतिहासिक विश्लेषण से सम्बद्ध विवरण समाहित है।

अचित्त जल का विज्ञान एवं जल-संरक्षण- डॉ. जीवराज जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, ***पृष्ठ***-276+20, ***मूल्य***- 50/- रुपये, द्वितीय संस्करण, सन्-2014

प्रस्तुत ग्रन्थ 'धोवन पानी का विज्ञान' नामक पुस्तक का संशोधित एवं सम्वर्द्धित स्वरूप है। अभियन्ता वैज्ञानिक डॉ. जैन ने हिन्दी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों से अपनी बात को सशक्त रूप में रखा है। उन्होंने जल में जीवत्व की सिद्धि के लिए प्रयोग- आधारित तर्क दिए हैं। उन्होंने होम्योपैथी पद्धति के आधार पर यह प्रस्तुत किया है कि जल में स्वतः स्मृति एवं सूचना प्रसारण की क्षमता होती है, जो उसमें जीवत्व की सिद्धि करती है। जल संरक्षण, अचित्त जल के उपयोग आदि के प्रतिपादन की दृष्टि से पुस्तक में तार्किक स्थापना की गई है। गर्म करके अचित्त जल बनाने की अपेक्षा डॉ. जैन ने धोवनपानी को अधिक उपादेय निरूपित करते हुए कहा है कि जल को गर्म करके अचित्त बनाने में अप्कायिक जीवों के साथ अग्निकायिक एवं वायुकायिक जीवों की भी हिंसा होती है, जबकि धोवन पानी में मात्र अप्कायिक जीवों की ही हिंसा होती है। अतः गर्म जल की अपेक्षा अहिंसा की दृष्टि से धोवन पानी अधिक उचित है। एक बार पानी को धोवन आदि के रूप में अचित्त किए जाने के पश्चात् निरन्तर होने वाली जीवोत्पत्ति एवं मरण की हिंसा के दोष से बचा जा सकता है। इसमें आगमिक एवं वैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से तुलनात्मक विचार

किया गया है तथा जल के संरक्षण से लेकर धोवन पानी तक के अनेक बिन्दु चर्चित हुए हैं। उन्होंने अपने मन्तव्य को कहीं चार्ट या तालिका से, कहीं चित्रों या फोटोग्राफ के तथ्यों द्वारा निरूपित किया है। यह पुस्तक हिन्दी और अंग्रेजी दोनो पाठकों के लिए उपयोगी है। पुस्तक पर डॉ. धर्मचन्द जैन की सारगर्भित एवं पुस्तक के विषय की अवबोधक भूमिका है।

आगम निबन्धमाला (भाग 4 एवं 5) - ***सम्पादक***- श्री तिलोकचन्द जैन, ***प्रकाशक***- श्री जैनागम नवनीत प्रकाशन समिति, राजकोट, ***प्राप्तिस्थान***- श्री तिलोकचन्द जैन, ओम सिद्धि, मकान नं. 6, वैशाली नगर, रैया रोड़, राजकोट-360007 (गुजरात), मोबाइल नं. 9898239961, ***पृष्ठ***-255 एवं 271, ***मूल्य***-प्रत्येक का 50 रुपये मात्र, सन्-2015

आगमों की विषय-वस्तु को निबन्धाकार देते हुए लेखक ने अपने चिन्तन को उसमें संयोजित किया है। अभीचिकुमार, लवसत्तम, आकाश के पर्याय, समुद्घात, ध्यान स्वरूप, गुणस्थान स्वरूप, बारहव्रत धारण आदि विषय चतुर्थ भाग में तथा पट्टावली, निर्युक्तियों के कर्ता, लोंकाशाह का जीवन, वासक्षेप प्रथा आदि विषय पंचम भाग में वर्णित हैं। लेखक ने चतुर्थ भाग में 100 एवं पंचम भाग में 66 निबन्धों के माध्यम से आगम की गूढ जानकारी प्रदान की है। आगम में रुचि रखने वालों के लिए ये निबन्ध उपयोगी हैं।

समीक्षा हेतु प्राप्त पुस्तकें

1. **परमतत्त्व की साधना (भाग-1)**- पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी, **प्रकाशक**- दिव्य संदेश प्रकाशन, द्वारा- सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस.एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनापुरा गली के सामने, मरीन लाईंस (ईस्ट), मुम्बई-400002 (महा.), **पृष्ठ**- 252+26, **मूल्य**- 120 रुपये मात्र, सन् 2014
2. **हुं तो लाव्यो छुं भक्ति भावना**- मुनि श्री जयानन्दविजयजी म.सा., **प्रकाशक**- गुरु श्री रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, **प्राप्ति स्थान**- महाविदेह भीनमाल धाम, तलेटी, हस्तिगिरि, लिंक रोड़, पालीताणा-364270, फोन नं. 02848-243018, **पृष्ठ**- 277+26, **मूल्य**- उल्लेख नहीं।

'अपरिग्रह कोश' अब मात्र 750 रुपये में

जिनवाणी के मार्च-2015 के अंक में प्राकृतभारती अकादमी, जयपुर से विदुषी बहन डॉ. सुषमाजी सिंघवी के सम्पादकत्व में प्रकाशित अपरिग्रह विश्वकोश की तीन पृष्ठों में समीक्षा हुई थी। इस विश्वकोश में 167 लेखकों की 275 प्रविष्टियाँ हैं तथा अपरिग्रह के सम्बन्ध में वैश्विक चिन्तन सन्निहित है। बृहदाकार में प्रकाशित यह पुस्तक अर्द्धमूल्य 750 रुपये में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु सम्पर्क सूत्र- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.) फोन-0141-2524827

विचार

भक्ति एवं उपासना में न हो हिंसा

भगवान महावीर जन्म-कल्याणक पर सन्तों के उद्‌बोधन

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का स्वर्णिम प्रभात, भगवान महावीर का जन्म-कल्याणक होने से सम्पूर्ण जगत में विख्यात है। हर चेहरे पर चमक, हर गाँव में गुणगान, हर नगर में जयघोष, हर स्थानक में सामायिक, हर उपाश्रय में उपासना, हर मंदिर में मंगलगीत, हर घर में धर्मनायक भगवान महावीर की चर्चा, हर दुकान में दुआएँ, हर द्वार पर वर्धमान की दयादृष्टि इस दिन साक्षात् साकार रूप में दृष्टिगोचर होती है।

इस पुनीत प्रसंग पर परमाराध्य, **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का खोह संघ को सुयोग मिला। 2 अप्रेल 2015 की सूर्योदय की वेला के साथ ही महुवा, मण्डावर, हिण्डौन, रसीद्पुर, लक्ष्मणगढ़, नदबई, हरसाना, मौजपुर, पहरसर, खेड़ली, अलवर, सहाड़ी, भनोखर, दांतियां, अलीपुर, कठूमर, बड़ौदाकान आदि अनेक स्थानों से आगन्तुकों का पूज्य गुरुदेव की कृपा-किरण पाने की भावना से स्थानक परिसर में आगमन हुआ। दोपहर एक बजते-बजते समूचा धर्मस्थल श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति से विभूषित हो उठा। अच्छी संख्या में भाई-बहिनों ने सामायिक साधना की।

दोपहर एक बजे प्रवचन प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण के पश्चात् महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ने अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर ने धर्म के लिए धन को छोड़ दिया, पर आप में से अधिकांश ने धन की वृद्धि के लिये महावीर का नाम धन से जोड़ दिया। महावीर का नाम प्रदर्शन के क्षेत्र में बढ़ रहा है, अन्तर दर्शन में नहीं। आज महावीर हमारी जिह्वा में तो हैं, पर जीवन में नहीं। भगवान महावीर के उपदेशों को जीवन में, व्यवहार में, अन्तर में उतारें और वीर जयन्ती पर वीर प्रभु के गुणगान के साथ गुणग्रहण के भाव रखें।

महासती श्री रक्षिता जी म.सा.- प्रभु महावीर महान् वीर थे, महान् धीर थे और महान् गंभीर थे। वे परीषहों को सहन करने में शूर थे। तेईस तीर्थंकरों ने कुल मिलाकर जितना परीषह सहा, उन सबसे अधिक अकेले महावीर ने परीषह सहन किये। आज

सहनशक्ति का टोटा हो गया है। महावीर ने सब कुछ सहा पर कहा कभी नहीं। हम अपना जीवन सहनशीलतामय बनायें।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.– वीर तूने जहाँ में उजेला किया, दूर पाखण्ड का सब झमेला किया, माता त्रिशला के प्यारे गुणी नन्दना, वन्दना,वन्दना, वन्दना, वन्दना...। (भजन) प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि– इस संसार में दो प्रकार के लोग जन्म लेते हैं– 1. एक तो महान् विचार देने वाले और 2. दूसरे महान् जीवन देने वाले। महान् विचार देने वाले 'विचारक' होते है, पर महान् जीवन देने वाले 'वीतराग' महापुरुष होते है। महान् विचार देने वाले 'बहुत' हो सकते हैं, पर महान् जीवन देने वाले 'विरले' होते है। भगवान् महावीर एक मात्र ऐसे शख्स थे, महामना थे, जिन्होंने हमें महान् विचार भी दिये, तो महान् जीवन जीने का आदर्श–अनूठा मार्ग भी दिया। उनके जीवन को हम पाँच पक्षों से सम्यक् प्रकार से समझ सकते हैं। उनके जीवन का हर कोना कर्त्तव्य की कहानी कहता है। उनके जीवन का हर पहलू प्रेरणाओं के प्रकाश से पूरित है।

महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.– भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्ररूपित धर्म अंहिसा प्रधान है। आपने भी अनेक बार 'अंहिसा परमो धर्म' का उद्घोष किया होगा, पर पालन कितना कर रहे हैं, इसका कभी चिन्तन भी किया है? आज आप धर्म करणी देखादेखी कर रहे हैं। बिना उपयोग के नकल कर रहे हैं। जहाँ दया नहीं, वहाँ धर्म नहीं। अहिंसा ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। निर्वाण होने के पश्चात् आत्मा लौट कर आने वाली नहीं है। फिर भी आप भगवान को मंदिरों में बिठा रहे हो, पूजा कर रहे हो। तीर्थ जो तारने के स्थल हैं, उनको लेकर आज जैनी ही आपस में झगड़ रहे हैं। जितने ज्यादा मंदिर व पूजा के स्थान बनेंगे, उतने ही झगड़े अधिक बढ़ते जायेंगे। जो पद्धति लड़ना सिखाती है, उसमें धर्म कदापि नहीं हो सकता। धर्म सदैव जोड़ना सिखाता है। संत तो कर्म बंधन के कर्जे से मुक्त होने का आपको सच्चा मार्ग बताते हैं। सिद्धान्तों व चर्या को समझो। मात्र जय–जयकार से जन्म कल्याणक मनायें, यह विधि तारने वाली नहीं है। भगवान की मानें एवं तदनुरूप अनुसरण करें।

परम पूज्य आचार्य भगवंतश्री– स्वाध्याय, सामायिक और समता से भगवान बनने वाले तीर्थंकर भगवान महावीर का क्लेश मिटाने वाला जन्म–कल्याणक आप और हम इस वीर धरा खोह में मना रहे हैं। विनतियाँ अन्य क्षेत्रों से भी की गई, पर खोह संघ की पुण्यशालिता प्रबल थी। भगवान महावीर वीतराग वाणी के माध्यम से कहकर गये कि यह जीवन पूजा भक्ति के लिये नहीं, अपितु भगवान बनने के लिये है। मैं आपसे पूछ रहा हूँ– भगवान कौन? भगवान किस रूप वाले हैं? आपने जो मूर्ति धर्मस्थान में प्रतिष्ठित कर रखी

है- क्या उसका रूप, उसकी आकृति भगवान महावीर की सही प्रतिकृति है? भगवान कैसे बन सकते हैं? इस पर कभी मनन किया? भगवान की पूजा कैसे करें? मैं यहाँ द्रव्यपूजा की नहीं, अपितु भावपूजा की प्रधानता से कह रहा हूँ। भगवान की भावपूजा कैसे करें? उसकी उपयुक्त विधि कौनसी है, जो तिरने और तारने का आधार है। मैं विधि का सुन्दर स्वरूप आप सभी के समक्ष रख रहा हूँ-''ध्यान धूपं, मनः पुष्पं पंचेन्द्रिय हुताशनम्। क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनम्।।''

देवता भी चाहते हैं कि वे भी भगवान बनें, पर अप्रत्याख्यानावरण कर्म के उदय के कारण वे दीक्षा तो दूर, नवकारसी जैसा छोटा व्रत भी अंगीकार करने में असमर्थ हैं। राजा श्रेणिक व वासुदेव श्री कृष्ण भी उक्त कारणों से ऐसी भक्ति नहीं कर पाये। भक्ति करो, पर जिस विधि में पाप से सम्बन्ध हो, पाप का कारण हो, ऐसी विधि से भक्ति मत कीजिये। हाँ मैं कह रहा था- राजा श्रेणिक, वासुदेव श्री कृष्ण भी अप्रत्याख्यान के उदय के कारण नियम नहीं पाल पाये, पर उन्होंने दलाली खूब की। उन्होंने ऐसी धर्मदलाली की जिसके कारण से तीर्थंकर नाम गोत्र का उपार्जन कर लिया। ये दोनों ही अगामी चौबीसी में तीर्थंकर होंगे। मानव भव एक ऐसा भव है- जहाँ से सिद्धि मिलाई जा सकती है। दशार्णपुर के राजा का ऐसा ही एक सुन्दर कथानक है- तीर्थंकर भगवान महावीर की धर्मसभा में जाने से पहले उसने सोचा कि मैं पूर्ण दलबल के साथ सजकर चरणों में पहुँच कर ऐसी भक्ति करूँ, जो आज तक कोई न कर पाया हो। नगरवासियों को भी सूचित करवाया गया। भगवान के दर्शन व देशना सुनने को सब आतुर थे। सूचना मिलते ही सब जहाँ भगवान विराज रहे थे उस ओर चल पड़े। चार प्रकार की सेना सजाकर नगरवासियों के साथ भक्ति करने रवाना हुआ। राजा आगे ही आगे चल रहा था। पीछे मुड़कर देखा और अहंकार आ गया कि इतनी विशाल प्रजा व सेना के साथ आज तक किसी ने भी मेरी जैसी भक्ति नहीं की होगी। खोह में भी आज देवाधिदेव का जन्म कल्याणक चतुर्विध संघ की उपस्थिति में मनाया जा रहा है। इन्द्र तुरन्त दशार्णभद्र की प्रदर्शन वाली भक्ति को भांप गया। इन्द्र ने वैक्रिय शक्ति से राजा के दलबल से भी कहीं श्रेष्ठ एक सुन्दर हाथी की रचना की। वह अकेला हाथी ही अपने आपमें अनुपमता लिये हुआ था। वैसे हाथी के दो दाँत हुआ करते हैं। पर उस संरचित हाथी के आठ दाँत थे। विशेषता यह थी कि उसके एक-एक दाँत पर आठ-आठ बावड़ियाँ, एक-एक बावड़ी पर आठ-आठ कमल, एक-एक कमल में आठ-आठ पंखुड़ियों एवं उन एक-एक पंखुड़ी पर बत्तीस-बत्तीस नाटक हो रहे थे। ऐसी ऐश्वर्यपूर्ण भौतिक ऋद्धि के साथ भगवान की शरण में पहुँच गया। राजा को अपनी प्रदर्शन वाली भक्ति का आभास हो गया एवं संभलकर स्वयं ने पंचमुष्टि लुंचन किया। इन्द्र को भौतिक ऋद्धि से परास्त नहीं कर पाया।

अब आध्यात्मिक क्षेत्र में मुझे अपना पुरुषार्थ प्रस्तुत करना चाहिये और इस भावना से भगवान के चरणों में दीक्षित हो गया और मानव की श्रेष्ठता को सिद्ध कर दिखाया। अब इन्द्र असहाय था, क्योंकि वह ऐसा कर पा सकने में असमर्थ था। जहाँ पहले इन्द्र की जय-जयकार हो रही थी। अब दीक्षित हुए राजा की जय-जयकार से गगन गूँज उठा। आपमें से भी यदि किसी की ऐसी भक्ति करने की भावना हो तो यहाँ पाटे पर आ सकते हैं। संयम की भक्ति कीजिये। गुरु के गुरु की भक्ति कीजिये। महावीर की भक्ति कीजिये। ऐसी भक्ति ही भगवान बनाती है तथा भव पार लगाती है। राम के नाम को जपने वाला राम बन सकता है। भगवान बनने का रास्ता पकड़िये। पाप छोड़ने का प्रयास कीजिये। पूजा-प्रक्षालन में हिंसा है। वहाँ एकेन्द्रिय की हिंसा हो रही है। सनातन धर्म की देखा-देखी क्रिया नहीं करें। वे पाँच भूत मानते हैं। पानी, वनस्पति में जीव नहीं मानते, जबकि ये एकेन्द्रिय प्राणी हैं। चाहे प्राणी एकेन्द्रिय हो या पाँच इन्द्रिय वाला, जीव सभी में है, सभी जीव सुख चाहते है, मरना कोई नहीं चाहता। अतः पानी, फूल आदि (सजीव) को पूजा के निमित्त चढ़ाकर पूजा करना, असाता व कर्मबंध का कारण है। हिंसा हमेशा हिंसा ही है। हिंसा कभी भी धर्म नहीं हुई, न होगी। **ध्यान धूपं-** धूप खेने की बजाय आप ध्यानस्थ बैठ कर अन्तर की सौरभ से वातवरण को महकाएँ। **मनः पुष्पं-** पुष्प अर्पित करने की अपेक्षा अन्तर मन से श्रद्धा भाव की भेंट चढ़ाएँ। **पंचेन्द्रिय हुताशनम्-** घी का होम करने के स्थान पर अपनी इन्द्रियों के विषयों को/ विकारों को जलाइये। **क्षमा जाप-** जाप अनुष्ठान करें, उसकी बजाय क्षमा धारण कर सहनशील बन जाइये। यदि पूजा कर कुछ पाने की अभिलाषा रखते हों, तो कामना का त्याग कर सन्तोष वृत्ति धारण कीजिये, जो मिल रहा है या पास में है, उसमें सन्तोष रख धर्म करणी के लिये समय निकालिये। यदि आप कथनानुसार भक्ति का वास्तविक स्वरूप समझ भक्ति करोगे तो- **पूजो देव निरंजनम्-** यानी भगवान बन सकोगे। भक्ति का यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। माधवमुनिजी म.सा., गुरुदेव हस्तीमल जी म.सा. का इस क्षेत्र पर उपकार रहा है। सामायिक स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जुड़ने का संकल्प कीजिये तब ही समझूँगा कि भगवान बनने का रास्ता पकड़ा है। सही मायने में भक्ति का रूप समझकर भगवान बनने का मार्ग अपनायेंगे। तब ही जन्म-कल्याणक मनाना सार्थक होगा।

धर्म सभा का संचालन सुन्दर-सटीक भाषा शैली में अशोकजी जैन महवा वालों ने किया। सामायिक साधना कर रहे भाई-बहनों ने 3 से 5 सामायिक तप करने का लक्ष्य रखा। प्रवचन समाप्ति तक लगभग 4 बजे का समय हो चुका था। अच्छी संख्या में एकाशन व्रत के अतिरिक्त उपवास, आयम्बिल, तेला, पौषध व संवर की आराधना हुई।

आचार्य श्री हीरा आचार्य पद
रजत साधना वर्ष 2015-2016

जिनशासन की भवभयहारिणी श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा में यशस्विनी रत्नसंघ परम्परा गौरवमय स्थान रखती है। मूलपुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म.सा. के तीक्ष्णप्रभा सम्पन्न शिष्य पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. के युगप्रभावक शिष्य क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के नाम से विश्रुत इस परम्परा के सभी आचार्य भगवन्तों ने अपने निर्मल ज्ञान, दर्शन, चारित्रमय साधनातिशय से जिनशासन की कीर्तिपताका को दिग्-दिगन्त में फैलाया है व अनेक भव्य जीवों को मोक्ष मार्ग का पथ प्रशस्त किया है। इस कड़ी में युगमनीषी युगप्रभावक आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के उपकारों से जैन-जैनेतर आबाल-वृद्ध सभी प्रभावित रहे हैं। अपने निर्मल-विमल-अनुपम संयम जीवन से उन महापुरुष ने जिनशासन की गौरव गरिमा को अभिवृद्ध किया है। सामायिक-स्वाध्याय के उनके पावन सन्देश से जिनवाणी की पावन गंगा देश के कोने-कोने में प्रवाहित हुई है। उनका पावन उपकार सदियों तक भी भुलाये नहीं भूला जा सकेगा। उन्हीं दिव्य-दिवाकर आचार्य श्री हस्ती के पट्टधर आगमज्ञ प्रवचन-प्रभाकर आचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने विनय व सेवा से गुरुदेव का हृदय तो जीता ही, अपने नीर-क्षीर-विवेक, निज पर शासन फिर अनुशासन व सतत जागरूकता से चतुर्विध संघ की सारणा-वारणा करते हुए आचार्य पद व धर्मसंघ को गौरवान्वित किया है। संघ उनके कुशल नायकत्व में अहर्निश प्रगति-पथ पर अग्रसर है। उन महामना आचार्य के आचार्य पदारोहण का 25 वां वर्ष ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, दिनांक 9 मई, 2015 को समुपस्थित हो रहा है। संघ ने संकल्प व्यक्त किया है कि इस दिन सामूहिक एकाशन दिवस के रूप में भक्त समुदाय देशभर में कम से कम 25000 एकाशन का लक्ष्य अवश्य पूर्ण करें।

एकाशन तप साधना से प्रारम्भ इस रजत वर्ष में संघ ज्ञानाराधन, तपाराधन व धर्माराधन के क्षेत्र में और अधिक प्रगति करे, इस दृष्टि से एक कार्यक्रम संघ सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत है-

(अ) ज्ञानाराधन-

वर्ग-प्रथम- 1. प्रतिक्रमण सूत्र विधि व अर्थ सहित, 2. हीराष्टक-हिन्दी पद्यानुवाद, 3. चयनित 25 थोकड़े, 4. वीर स्तुति-मूल एवं अर्थ, 5. उत्तराध्ययनसूत्र- प्रथम अध्ययन का सार।

वर्ग-द्वितीय-1. दशवैकालिक अध्ययन 1 से 4 तक अर्थ सहित, 2.उत्तराध्ययन सूत्र-9

वां अध्ययन का सार, 3.आचार्य-उपाध्याय के गुण, 4. विनीत शिष्य के कर्त्तव्य, 5. आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ।

नोटः-आवश्यकतानुसार पाठ्य सामग्री जिनवाणी में आलेखों एवं साहित्य के माध्यम से उपलब्ध कराई जायेगी।

(ब) तपाराधन- 1. कम से कम 2500 व्यक्तियों को न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के लिए सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु प्रेरित करना (एक वर्ष की समयावधि तक अभ्यास के साथ इसमें आगे बढ़ने हेतु विनम्र अनुरोध), 2. कम से कम 2500 व्यक्तियों को जमीकन्द त्याग हेतु प्रेरित करना, 3. कम से कम 250 वर्षीतप (एकान्तर/एकाशन) का लक्ष्य, 4. श्रावक-श्राविकाओं को इस वर्ष में कम से कम 25 आयंबिल/नींवी तप हेतु प्रेरित करना। 5. वर्ष पर्यन्त अथवा मासपर्यन्त कषायविजय हेतु अभ्यास।

(स) धर्माराधन- 1. कम से कम 25 प्रमुख क्षेत्रों में नियमित संवर-साधना हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करना, 2. स्वाध्याय संघ का कार्य क्षेत्र देश के 25 प्रमुख प्रान्तों तक फैलाना, 3. कम से कम 125 दम्पतियों को शीलव्रत हेतु प्रेरित करना, 4. कम से कम 125 व्यक्तियों को चौविहार हेतु प्रेरित करना, 5. श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष में कम से कम 25 पौषध करने हेतु प्रेरित करना।

(द) व्यसन -मुक्ति-

आचार्य श्री हीरा के सन्देश 'हीरा गुरु का यह आह्वान, व्यसनमुक्त हो हर इन्सान' को लेखों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रचार-यात्रा के माध्यम से देश के कोने-कोने में प्रचारित व प्रसारित करना।

साधना वर्ष शीघ्र प्रारम्भ होने वाला है। आयें! आप-हम सभी लक्ष्य सिद्धि हेतु अग्रसर हों। संघनायक साधना सुमेरु महापुरुष के चरण सरोजों में यही हमारा विनम्र श्रद्धा समर्पण होगा।

-ज्ञानेन्द्र बाफना

गुरुचरणरजकृपाकांक्षी

'गुणसौरभ गणिहीरा' पुस्तक पर प्रतियोगिता

जिनशासन गौरव आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के रजत आचार्यपदारोहण वर्ष के अवसर पर 'गुणसौरभ गणिहीरा' पुस्तक पर प्रतियोगिता का आयोजन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु द्वारा 9 मई 2015 से प्रारम्भ किया जा रहा है। विस्तृत विवरण आगामी अंक में प्रकाशित होगा।

-महेन्द्रकुमार कांकरिया, अध्यक्ष

दीक्षा-रिपोर्ट

सूर्यनगरी-जोधपुर में मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा की जैन भागवती दीक्षा 25 अप्रेल, 2015 को सानन्द सम्पन्न

वैशाख शुक्ला सप्तमी, शनिवार, 25 अप्रेल, 2015 को मीरा बाग पार्किंग स्थल, पावटा-बी रोड़, जोधपुर में जिनशासन गौरव परम **श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** की आज्ञा से एवं **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से** मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा की जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। इस अवसर पर शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**, तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा 18 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। दीक्षा महोत्सव के अवसर पर आचार्यप्रवर पं. रत्न श्री शुभचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री सुमतिमुनिजी म.सा. एवं ज्ञानगच्छीय श्रद्धेया महासती श्री चन्द्रकान्ताजी म.सा. की सुशिष्या उर्मिलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भी पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। श्री हनुवन्त एजूकेशनल सोसायटी, मीरा बाग पार्किंग स्थल, हनवन्त गार्डन के पीछे, पावटा-बी रोड़, जोधपुर में आयोजित पावन प्रव्रज्या-महोत्सव हजारों भक्तों के जयनादों के बीच उमंग उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

शोभा-यात्रा

24 अप्रेल, 2015 को प्रात: 8.30 बजे से प्रारम्भ मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा की भव्य शोभा यात्रा का नयनाभिराम दृश्य सभी दर्शकों के लिए आह्लादकारी था। शोभा यात्रा सामायिक-स्वाध्याय भवन, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा जोधपुर से प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा में बैण्ड की सुमधुर ध्वनियों के साथ सुसज्जित बग्गी में मुमुक्षु भाई एवं उनके परिवारजन विराजित थे। शोभायात्रा में विशाल जनसमूह ने यात्रा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए और मंगल गीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभायात्रा का आकर्षण बनाये रखा।

लगभग 500 साफाधारी श्रावकों के साथ सहस्राधिक गुरुभ्राता एवं चुनड़ी वेशधारी श्राविकाएँ कतारबद्ध हो अनुशासित रूप से शोभायात्रा में सम्मिलित थीं। शोभायात्रा के मार्ग में स्थान-स्थान पर श्रद्धालु भक्तजनों ने जोधपुर की अपणायत मनुहार के रूप में व्यक्त की। अत्यधिक गर्मी होने के बावजूद भी सभी भाई-बहिन पूरे समय तक शोभायात्रा में उपस्थित रहे। शोभायात्रा मेन मण्डोर रोड़ होकर हेमसिंहजी का कटला एवं पावटा-सी रोड़ स्थित आकाशवाणी, आयकर भवन, श्रीराम वाटिका, रिलायन्स फ्रेश, लक्ष्मीनगर होते हुए प्रमुख मार्गों से निकलती हुई विनायक, पावटा-बी रोड़, जोधपुर पर परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के मांगलिक श्रवण के साथ ही लगभग 11:30 बजे सानन्द सम्पन्न हुई। मुमुक्षु भाई एवं वीर परिवारजनों तथा शोभा यात्रा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने दर्शन-वन्दन करने के साथ परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर से मंगल पाठ श्रवण किया।

अभिनन्दन समारोह

24 अप्रेल, 2015 को दोपहर 2:00 बजे मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा व उनके वीर परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में हनवन्त गार्डन प्रांगण, पावटा बी रोड़, जोधपुर में आयोजित हुआ।

अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर ने की। न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, चेयरपर्सन आर्मड ट्रिब्यूनल, नई दिल्ली मुख्य अतिथि तथा डॉ. महावीरजी गोलेच्छा अन्तरराष्ट्रीय सामाजिक एवं स्वास्थ्य नीति विशेषज्ञ, इंस्पायर फेलो, भारत सरकार विशिष्ट अतिथि एवं वरिष्ठ सुश्रावक माननीय श्री पारसमलजी जिनाणी, बेंगलोर सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक-मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (दीक्षा) श्री कांतिलालजी चौधरी-धुलिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा, मारवाड़ सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमलजी गिड़िया, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़, कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराजजी चौधरी, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा, बहू बालिका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती नीलूजी डागा, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर के अध्यक्ष श्री धनपतचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सुभाषजी हुण्डीवाल एवं दीक्षा समिति संयोजक श्री अमरचन्दजी चौधरी ने मंच को सुशोभित किया।

मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा एवं उनके माता-पिता सहित वीर परिवारजनों को

निर्धारित स्थान पर आत्मीयता पूर्वक आमंत्रित कर मंचासीन करवाया गया।

हनवन्त गार्डन के प्रांगण में विशाल मंच अत्यन्त भव्यता लिये हुए था। मंच के सामने श्रावक-श्राविकाओं के बैठने के लिये सुन्दर व्यवस्था की गई थी। समारोह में विशाल जनमेदिनी ने सुविधापूर्वक बैठकर अभिनन्दन समारोह का आनन्द लिया। अभिनन्दन समारोह में मंगलाचरण की प्रस्तुति श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा-जोधपुर ने दी। 'आज सुहाना ये आंगन होगा, दीक्षा में मुदित मन पावन होगा' स्वागत-गीत श्रीमती रेखा जी सुराणा, श्रीमती पूजाजी गिड़िया व श्रीमती मनीषाजी अबानी ने प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण श्री जैन रत्न हिंतैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री धनपतचन्दजी सेठिया द्वारा प्रस्तुत किया गया। सभी अभ्यागतों का स्वागत करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि वीर परिवार ने अपने कलेजे की कोर को रत्नसंघ को समर्पित किया है, उसके लिए हम वीर परिवार का हार्दिक अभिनन्दन, सत्कार एवं सम्मान करते हैं।

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया का शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत श्री जैन रत्न वात्सल्य निधि के संयोजक श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर ने माला द्वारा एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली ने शॉल द्वारा बहुमान किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. महावीरजी गोलेच्छा का पूर्व संघ महामंत्री श्री अरूणजी मेहता-जोधपुर ने माला द्वारा व राष्ट्रीय संघ उपाध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी सुराणा-चेन्नई वालों ने शॉल द्वारा सम्मान किया। सम्माननीय अतिथि श्री पारसमलजी जिनाणी-बैंगलोर का पूर्व संघ महामंत्री श्री नवरतनजी डागा-जोधपुर ने माला द्वारा एवं पूर्व संघ कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चेन्नई ने शाल द्वारा बहुमान किया। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत का जोधपुर संघ के उपाध्यक्ष श्री भंवरलालजी चौपड़ा ने माला द्वारा एवं जोधपुर संघ पावटा क्षेत्र के संयोजक श्री नरतपराजजी चौपड़ा ने शॉल द्वारा बहुमान किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना का जोधपुर संघ के कोषाध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा ने माला द्वारा तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री धनपतचन्दजी सेठिया ने शॉल द्वारा बहुमान किया।

कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि सुश्रावक माननीय **श्री पारसमलजी जिनाणी**-बेंगलोर ने आशीर्वचन के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे गौरव है कि आज मेरे क्षेत्र का तथा मेरा दौहित्र अविनाश संयम मार्ग पर आरूढ़ हो रहा है। अविनाश भाग्यशाली है कि इसको ज्ञान-क्रिया सम्पन्न गुरुदेवों का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। आप ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करते हुए गुरु के हृदय में बसें, ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

विशिष्ट अतिथि **डॉ. महावीरजी गोलेच्छा** ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि

रत्नसंघ गौरवशाली संघ है और इस संघ में सिवांची के लाल अविनाशजी सालेचा संयम मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। अविनाशजी आप भाग्यशाली हैं। आपको जैन धर्म मिला, रत्नसंघ मिला, करुणा सागर गुरुभगवन्त मिले। आपका साधुत्व जीवन हम-सबके लिए प्रेरक बने। संसार की पहेली गुरुकृपा से सुलझती है। मैं आपके संयमी जीवन के लिए मंगलकामना करता हूँ।

संघ-संरक्षक-मण्डल के संयोजक **माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत** ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आज के इस भौतिकवादी युग में दीक्षा के भाव आना भी बड़ा दुर्लभ है। आज आत्म-संतोष कम नज़र आता है। ऐसे युग में दीक्षा या संयम का संकल्प लेना भी अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि अविनाशजी संयम मार्ग में आगे बढ़ेंगे तथा पाँच साल तक पूर्ण रूप से अध्ययन में अपना समय व्यतीत करेंगे। हम संत-सतीवृन्द के ज्ञान-दर्शन-चारित्र को पुष्ट करने में सहयोगी बनें। हम ज्ञानवान बनेंगे तभी दायित्वों का निर्वहन कर सकेंगे। हमें श्रावक धर्म का समुचित ज्ञान हो, श्रावक भी अपने आपको गौरवान्वित समझें। जीवन के सभी पहलुओं में अध्यात्म झलकना चाहिये। भाई अविनाशजी संयम की ऊँचाइयों को प्राप्त करें, ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

मुख्य अतिथि **न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया** ने अपने आशीर्वचन में कहा कि व्यक्ति की आस्था सम्यक् होनी चाहिये। सही आस्था के साथ व्यक्ति की कार्य शैली व्यक्ति को आगे बढ़ाती है। वातावरण और वेशभूषा का भी प्रभाव होता है। व्यावहारिक जीवन हो या आध्यात्मिक जीवन, उसे सही वातावरण मिलना चाहिये। वातावरण में एकरूपता-समरसता होनी चाहिये। हमें संघ एवं समाज में नई-नई प्रतिभाओं को धर्म से जोड़ने का सत्प्रयास करना होगा। भाई अविनाशजी व उनके परिवार को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आत्म-उत्थान के लिए अविनाशजी ने जो संयम का मार्ग चुना है उसके लिए उन्हें मेरा प्रणाम।

राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अपने आशीर्वचन में कहा कि दादी पानीबाई से जिन्होंने निर्मलता, विमलता व चरवैति-चरवैति के संस्कार पाये, पिता उसबचन्दजी से वात्सल्य पाया, रत्नकुक्षिधारिणी शोभा की जो शोभा है, भाई महेश के अनुज महा ईश बनने जा रहे हैं, ऐसे भाई अविनाशजी एवं सम्मानित वीर परिवार। हम आज एक पुनीत अवसर की पूर्व वेला में उपस्थित हैं। आज हम अविनाशजी का अभिनन्दन कर रहे हैं। कल प्रातः वे अभिवन्दनीय बन जायेंगे। आज तक जो भी मोक्ष में गये हैं, जा रहे हैं, जायेंगे वे सभी सामायिक के प्रभाव से ही जायेंगे।

जब साधक तीन करण, तीन योग से सामायिक करता है तो उसके त्रिताप समाप्त हो

जाते हैं। दीक्षा क्यों-'संसार भयउविग्गा भीया जम्ममरणाओ' संसार के भय से भयभीत होकर जन्म-मरण को मिटाने के लिए संयम लिया जाता है। हम दीक्षा की अनुमोदना ही नहीं वरन् संकल्प करें, मैं भी दीक्षा लूँगा। क्यों कि दीक्षा के बिना त्रिखण्डाधिपति वासुदेव कृष्ण भी अपने आपको अधण्णा अपुण्णा व जालि मयालि आदि मुनियों को धण्णा पुण्णा मानते हैं। भाई अविनाशजी आपके जीवन में एक विमल अवसर उपस्थित हुआ है। अ- अव्याबाध सुख, वि- विशिष्टता, ना- निर्नाम बनना, श-शील सम्पन्नता। आप अपने नाम के अनुरूप गुणों को धारण करें। अर्पित चरणों में शीश, मुझे दे दो आशीष। वीर परिवार के दादीजी, वीरपिताजी, वीर माताजी को भी मेरा नमन। जिन्होंने अपने कलेजे की कोर को रत्नसंघ में जिनशासन में समर्पित किया है। अविनाशजी, आप आगे बढ़ें। रत्नसंघ के श्रेष्ठ रत्न बनें, जिनशासन को देदीप्यमान करें, यही मंगलकामना है।

अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा की वीरदादीजी श्रीमती पानीदेवीजी सालेचा का श्रीमती सुशीलाजी बोहरा-जोधपुर ने माला द्वारा व श्रीमती नलिनीजी भाण्डावत-जोधपुर ने शॉल द्वारा सम्मान किया। वीरपिता श्री उसबचन्दजी सालेचा का वीरपिता श्री इन्दरचन्दजी गाँधी-जोधपुर ने माला व शॉल से बहुमान किया। वीरमाता श्रीमती शोभादेवीजी सालेचा का श्रीमती उषाजी बोहरा-जोधपुर ने माला द्वारा एवं श्रीमती कुसुमजी सिंघवी-जोधपुर ने चून्दड़ी द्वारा बहुमान किया। वीर माता-पिता सहित परिवारजनों के सभी सदस्यों को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं मंचासीन पदाधिकारियों द्वारा संघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भी ससम्मान भेंट किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा भी मुमुक्षु भाई श्री अविनाशजी सालेचा एवं वीर परिवारजनों का माला, शॉल एवं चुन्दड़ी से बहुमान किया गया तथा वीर परिवार को अभिनन्दन-पत्र भी ससम्मान भेंट किया गया।

अभिनन्दन कार्यक्रम में मुमुक्षु भाई श्री अविनाशजी सालेचा का संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने माला द्वारा एवं संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने शॉल द्वारा बहुमान किया। मुमुक्षु भाई श्री अविनाशजी सालेचा को समर्पित किये जाने जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री सुमतिचन्दजी मेहता द्वारा किया गया। तत्पश्चात् मंचासीन अतिथियों एवं पदाधिकारियों द्वारा मुमुक्षु भाई श्री अविनाशजी सालेचा को अभिनन्दन-पत्र ससम्मान भेंट किया गया।

अभिनन्दन कार्यक्रम में वीर परिवार की ओर से **श्रीमती अरूणाजी कर्नावट**-जयपुर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी, साथ ही संगीताजी चौपड़ा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुक्ति पथ के राही भाई अविनाश का शत-शत अभिनन्दन। सुश्री लब्धिजी

सालेचा ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अविनाश भैया, आपका अभिनन्दन। आपके संयम जीवन का हर सैकण्ड, हर मिनट, हर घंटा शुभकारी, कल्याणकारी बने, यही मंगल मनीषा है।

वीरमाता श्रीमती शोभाजी सालेचा ने अपने ओजस्वी विचार व्यक्त करते हुए कहा कि चेतन मिथ्यात्व की चादर ओढ़कर सोया रहता है। मोह के कारण आत्मा के मौलिक स्वरूप को नहीं समझ पाता। बेटे चीकू, सच्चा सुख त्याग में है। तुम संसार की आसक्ति से ऊपर उठ गये हो, वास्तव में मेरा मातृत्व धन्य हो गया। हे अविनाश! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो। बेटे चीकू जिस मार्ग पर जा रहे हो उसकी शुरूआत आचारांग में जिज्ञासा से हुई है। तुम गुरुचरणों में जिज्ञासा का सम्यक् समाधान प्राप्त करना। गुणस्थानों में निरन्तर क्रमारोहण करते रहना। तुम्हारी प्रवृत्ति आत्मशोधन की रहे। अशुभ से दूर रहो, अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाओ। तुम्हारी साधना का प्रारम्भ संयम है तथा अन्तिम बिन्दु वीतरागता। तुम वीतराग बनते हुए शाश्वत सुख का वरण करो, यही मेरी मंगल मनीषा है।

वीरभ्राता श्री महेशकुमारजी एवं **वीरभाभी श्रीमती प्रभादेवीजी सालेचा** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा-भैया लेगा दीक्षा मेरा प्यारा, सब कहते हैं संयम पथ में आनन्द है अपारा। ख्वाहिश है हम सब की जिनशासन को उज्ज्वल बनायें। हम दोनों भी आपके पदचिह्नों पर चल सकें।

मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि संसार में दो तरह के जीव हैं- (1) चैतन्य के उपासक (2) पुद्गल के अनुरागी। अर्थात् एक संयमी और दूसरा संसारी जीव। संसारी जीव संसार में लोगों के बीच पहचान बनाने में लगा रहता है जब कि संयमी अपने आपको पहचानना चाहता है। कोऽहम् ! मैं कौन हूँ ? इसकी आन्तरिक जिज्ञासा ही साधक को आगे बढ़ाती है। चैतन्य के उपासक गुणों के उपासक होते हैं आज का अभिनन्दन शरीर का नहीं, नाम का भी नहीं, किन्तु त्याग-वैराग्य का अभिनन्दन है। अभिनन्दन अभी-नन्दन अर्थात् अभी तक मैं छोटा हूँ। किन्तु आज का अभिनन्दन संयम का है, अभिनन्दन ना तो रंग का, ना संग का किन्तु अभिनन्दन गुरु हीरा-मान के संग का है।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जब भी मैं दर्शन करने जाता तो उनमें मुझे अरिहन्त के दर्शन होते हैं। उपाध्याय भगवन्त के सान्निध्य में 5-6 वर्ष रहा। उनके श्रीचरणों में जब-जब भी बैठता हूँ तो अमृत का वर्षण मुझे प्राप्त होता है। महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. ने संयम मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु मुझे प्रेरित किया। महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. ने मुझे कहा- अविनाश! तू जिनकी सेवा में रह रहा है उनके चरणों में पूर्णतः समर्पित हो

जाना। मेरे दादाजी जब भी घर में रहते बिना सामायिक किये पानी नहीं लेते। उनकी यह प्रतिज्ञा थी कि वे कभी भी संयम में बाधक नहीं बनेंगे। दादीजी ने भी पूर्ण सहयोग किया। उपकारी माता-पिता का तो कहना ही क्या! तेरा मन लगे तो रहना नहीं तो घर पर वापस आ जाना। यह कह कर मुझे गुरुचरणों में उपस्थित किया। संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों का मुझे अपूर्व स्नेह, सहकार व वात्सल्य प्राप्त हुआ। पूज्य गुरुदेव की महती कृपा से ही आज मुझे संयम रूपी धन को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। मेरा संयम जीवन निष्पाप बने, निर्दोष बने। मैं अल्प भवों में मुक्ति का अधिकारी बनूँ ऐसा आप सहयोग प्रदान करें। मेरी किसी भी प्रवृत्ति से आपका दिल दु:खा हो तो उदार हृदय से क्षमा कर देना।

मुख्य अतिथि महोदय माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया को संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत द्वारा, विशिष्ट अतिथि डॉ. महावीरजी गोलेच्छा को संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना द्वारा, सम्माननीय अतिथि श्री पारसमलजी जिनाणी को संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (दीक्षा) श्री कांतिलालजी चौधरी द्वारा स्मृति चिह्न प्रदान किये गए। मीरा बाग पार्किंग स्थल के ट्रस्टी श्री गोपालसिंहजी रूदिया को भी जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री धनपतचन्दजी सेठिया द्वारा माला एवं शॉल से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में जोधपुर के संघ मंत्री श्री सुभाषजी हुण्डीवाल ने जोधपुर संघ की ओर से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। संघ महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा ने सभी अतिथियों, समागत भाई-बहिनों, वीर परिवार सदस्यों एवं सुन्दर व्यवस्था व आयोजन के लिए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं व सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा द्वारा किया गया।

अभिनिष्क्रमण यात्रा एवं दीक्षा-समारोह

25 अप्रेल, 2015 का मंगल प्रभात जन-जन को हर्षित-प्रमुदित करने वाला रहा। आगन्तुकों ने प्रात: उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन किए। सैंकड़ों लोग वीर परिवार के अस्थायी निवास-स्थान पर पहुँचे, जहाँ से अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई। अभिनिष्क्रमण यात्रा में पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र, संघ के पदाधिकारी एवं जोधपुर तथा आसपास के विभिन्न श्रीसंघों से पधारे श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे। मुमुक्षु भाई एवं वीर परिवारजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर मांगलिक श्रवण की, तत्पश्चात् लोच एवं वेश परिवर्तन के लिए निर्धारित स्थान पर पधारे। दीक्षा महोत्सव हेतु निर्धारित प्रांगण में उपाध्यायश्री के पधारने से पूर्व ही भाई-बहिनों ने अपना स्थान ग्रहण

कर लिया था। सामायिक-साधना करने वालों की बैठने की अलग व्यवस्था थी, तो सबसे आगे वीर परिवारजनों के विराजने हेतु पूर्व से व्यवस्था सुनिश्चित थी। प्रातः 7.45 बजे दीक्षा-स्थल पर परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द का पदार्पण हुआ। सर्वप्रथम नवकार महामंत्र से मंगलाचरण किया गया। प्रवचन सभा में जैसे ही मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा वेश परिवर्तन एवं केश मुण्डन करके पाण्डाल में पधारे, जय-जयकार के जयनादों से वातावरण गुंजायमान हो गया।

उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतीवृन्द ने दीक्षा-महोत्सव के अवसर पर समागत महानुभावों से कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रभावी प्रेरणा की। वेश परिवर्तन के पश्चात् जैसे ही मुमुक्षु भाई गुरुचरणों में उपस्थित हुए, प्रवचन सभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने जय-जयकारों के जयनादों से वातावरण को गुंजायमान कर दिया। दीक्षार्थी बन्धु ने उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन किया उसके पश्चात् सर्वप्रथम उपाध्यायप्रवर ने माता-पिता एवं पारिवारिकजनों से खड़े होकर दीक्षा की अनुज्ञा चाही तो दीक्षार्थी भाई के दादा-दादी, माता-पिता, भाई-भाभी, चाचा-चाची एवं अन्य परिजनों ने खड़े होकर सहर्ष दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की। उपाध्यायप्रवर के संकेत पर अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के साथ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर के पदाधिकारियों ने भी खड़े होकर अनुमति प्रदान की।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने मुनिवेश में समुपस्थित दीक्षार्थी भाई से कहा कि जब तक आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से दीक्षित न हों तब तक माता-पिता के चरण स्पर्श कर सकते हैं। यहाँ उपस्थित सभी से क्षमायाचना भी कर लें। दीक्षार्थी भाई ने माता-पिता, पारिवारिकजन एवं उपस्थित जनसमुदाय से आशीर्वाद लिया और क्षमायाचना की।

दीक्षार्थी भाई द्वारा सभी संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन करने के बाद उपाध्यायप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर एक इच्छाकारेणं का काउस्सग करवाया। नवकार मंत्र काउस्सग शुद्धि का पाठ, लोगस्स के पाठ का सुमधुर स्वर में समवेत उच्चारण किया गया। दूसरा चउवीसत्थव कराने हेतु इच्छाकारेणं, तस्सउतरी का पाठ बोलते हुए एक लोगस्स का काउस्सग करवाया। काउस्सग शुद्धि के पाठ एवं लोगस्स के पाठ का उच्चारण किया गया। तत्पश्चात् करेमि भन्ते के पाठ से उपाध्यायप्रवर ने मुमुक्षु भाई को जीवन भर के लिए सामायिक प्रदान की। उपाध्यायप्रवर ने मुमुक्षु श्री अविनाशजी का सांकेतिक लोच भी किया। इसके पश्चात् दो बार नमोत्थुंण का पाठ बोला गया। करेमि भन्ते का पाठ पढ़ते ही जनमेदिनी ने शासनेश महावीर, गुरुदेव एवं नवदीक्षित मुनिश्री की

जय के जयनादों से दीक्षा प्रांगण गुंजायमान कर दिया।

श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि- जो भाई थोड़ी देर पहले आप लोगों को चरण वन्दन कर रहे थे, दीक्षा मंत्र ग्रहण करते ही अब आप सबके वन्दनीय हो गये, यह है दीक्षा मंत्र का प्रभाव। **संयम की महिमा क्या है, जीकर बता देना। दुनियां गाये यश तेरा, इतिहास बना देना।** त्याग और वैराग्य की महिमा देखिये, अविनाशजी वन्दक से वन्दनीय बन गये। मुमुक्षु अविनाशजी सफेद चादर से बेदाग जीवन जीने की प्रेरणा लें। मुंहपत्ती से प्रेरणा लें, कम बोलो, काम का बोलो, कामना मुक्त बोलो। भाषा समिति का पालन करो। पात्र का अर्थ है संयम के आधार बनो। पात्र पात्रता अर्जित करने का सूचक है। मनसा, वाचा कर्मणा संयम को सुरक्षित रखना। संयमी का गुप्त संसार खतरनाक हो सकता है। अत: अन्दर-बाहर अपने जीवन में एकरूपता रखना। अपनी जीवन नैया को तिराने वाला बनना है। आपकी प्रज्ञा, प्रतिभा, निर्मलता एवं गंभीरता निरन्तर बढ़ती रहे यही शुभकामना है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा से प्राप्त शुभ मनोभावनाओं से युक्त पत्र श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रस्तुत किया। पत्र की कतिपय पंक्तियाँ इस प्रकार थीं- रोगों को शमन करने की विविध औषधियाँ हैं। क्षुधा को उपशांत करने के लिये अनेक प्रकार के धान्य, विष का शमन करने के कई प्रभावकारी मंत्र, शरीर की सुरक्षा हेतु तरह-तरह के परिधान उपलब्ध हैं, पर आधि-व्याधि-उपाधि को समाप्त कर समाधि को संप्राप्त करने का एक मात्र साधन है- संयम। प्रव्रज्या का पावन पथ है- सर्व भूतहितंकरी दीक्षा!

प्रव्रज्या के पावन पथ पर मुस्तैद चरणों से चरण विन्यास करने वाला मुमुक्षु अविनाश स्व नाम के अनुरूप अविनाशी की आराधना एवं संयम की साधना में **''वेयावच्चे णिउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ। सज्झाए वा णिउत्तेणं, सव्व दुक्खो विमोक्खणे।।''-उत्तराध्ययन 26.10**

इन आगम वचनों को आत्मसात् कर श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर की सेवा-शुश्रूषा में अहर्निश अप्रमत्त भाव से सन्नद्ध रहकर रत्नसंघ की गौरव-गरिमा को दीप्तिमान बनायेंगे, ऐसी शुभाशंसा की अभिव्यक्ति करते हैं।

दीक्षा-महोत्सव के पावन प्रसंग पर ज्ञानगच्छीय महासती श्री चन्द्रकान्ताजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री उर्वीजी म.सा. ने अपने सारगर्भित प्रवचन में फरमाया-अपने संयम के मालिक स्वयं ही बनें, शास्त्र सागर में डुबकी लगाते रहें। जमाने में उसने बड़ी बात कर ली जिसने अपने-आप से मुलाकात कर ली। जिनमार्ग सबसे सुरक्षित मार्ग है, अपने

लक्ष्य को पाने के लिए। भाग्यशाली है अविनाशजी जिन्होंने इस मार्ग को चुना है।

नवदीक्षित मुनिश्री की संसारपक्षीया भगिनी **महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि- गणिपिटक में तृतीय अंग ठाणांग के तीसरे ठाणा में कहा है कि तीन मनोरथ का चिन्तन करने से साधक महानिर्जरा, महापर्यवसान को प्राप्त करता है। दूसरा मनोरथ संयम अंगीकार करने से गंतव्य स्थान को प्राप्त किया जा सकता है। परिधि पर परिश्रम नहीं, केन्द्र पर पुरुषार्थ करना है। जिस श्रद्धा से आपने संयम लिया है उसी श्रद्धा से अन्त तक पालन करना है। जिसको छोड़ा है उसे कभी याद नहीं करें और जिसके लिए छोड़ा है उसको कभी भूलें नहीं।

नवदीक्षित मुनिश्री की संसारपक्षीया मौसेरी बहिन **महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि- आज का सूर्य संयम की रश्मियों को लेकर उपस्थित हुआ है। बच्चे के सोने के दो साधन हैं- गादी और गोदी। गादी में सुविधा है, किन्तु सुरक्षा नहीं। गोदी में पूर्ण सुरक्षा है। जिनशासन में संयम धारण कर लेने से जीवन पूर्ण सुरक्षित बन जाता है। जिनशासन सद्गुणों से भर देता है तथा अवगुणों से खाली कर देता है। नवदीक्षित मुनिश्री ने भी संसार की गादी का त्याग किया है तथा जिनशासन की सुरक्षित संयम की गोद को स्वीकार किया है। जिनशासन कहता है आओ भगवान बना दूँगा, जन्म-मरण को क्षय कर भगवान बना दूँगा।

साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. ने फरमाया कि जो भगवद् आज्ञा में चलता है वही शाश्वत सुखों को प्राप्त करता है। अविनाश जी! संयम के मार्ग को ग्रहण किया है, उस पर विनय विवेक पूर्वक निरन्तर आगे बढ़ते रहना। निर्मल साधना-आराधना से अपने जीवन को दीप्तिमान बनाने में निरन्तर पुरुषार्थ करना है। अविनाशजी अविनाशी बनने के लिए अविनाशी पद की साधना में आगे बढ़ते रहें, ऐसी शुभेच्छा है।

जयगच्छीय **श्रद्धेय श्री सुमतिमुनिजी म.सा.** ने संयम साधना के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो संयम स्वीकार करते हैं उनको धन्य है। जो संयम लेने की आज्ञा देते हैं, अनुमोदना करते हैं, वे भी धन्य हैं। भव्यत्व के परिपाक का उदय संयम है। द्वेष से छूटने के लिए शुभ कार्यों की अनुमोदना जरूरी है। सुकृत की अनुमोदना एवं दुष्कृत की गर्हा करने वाला भी निरन्तर आगे बढ़ जाता है।

श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज बड़ा ही खुशी का दिन है। अविनाशजी आज मुनि बन गये हैं। दीक्षा में गुण हैं अपार, वीरजी बखाणयो रे। संयम है

तारण हार, वीरजी बखाणयो रे।

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारा जिनशासन व्रतधारियों का तीर्थ है, मोक्षाभिलाषियों का संघ है। वीतरागता के उपाय रूप में जो घटक है, वह वैराग्य भाव, संवेग भाव है। मुमुक्षु अविनाशजी ने भी वीतरागता का लक्ष्य बनाया है। जब तक मोक्ष न मिले, तब तक मुमुक्षु बने रहना है। अत: ज्ञान के क्षेत्र में मुमुक्षु अविनाशजी निरन्तर आगे बढ़ें।

सावद्य योगों का तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त के लिए प्रत्याख्यान स्वरूप दीक्षा पाठ प्रदान करने के साथ जनसमुदाय जो अपलक दीक्षा-विधि देख-सुन रहा था, ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, सभी संत-सतीवृन्द की जय, नवदीक्षित मुनिवृन्द की जय जैसे अनेक जयघोष स्वप्रेरित भावना से गुंजायमान करते हुए दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना का लाभ लिया। भक्तों ने गुरु हस्ती, गुरु हीरा-मान के नाम से प्रचलित नारों का उच्चारण भी भावना पूर्वक किया। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए जनसमुदाय श्रद्धावनत था, दीक्षा और संयम के महत्त्व के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी शुभभावना थी। नमोत्थुणं के साथ दीक्षा-विधि परिपूर्ण होने पर नवदीक्षित मुनि मुनिमण्डल के बीच में सुशोभित हुए। प्रणाम करने वाले स्वयं प्रणम्य, श्रद्धेय एवं वंदनीय बन गये। यह है भागवती श्रमण दीक्षा का प्रभाव, संयम प्रवेश का प्रभाव।

दीक्षा-महोत्सव एवं प्रवचन का कार्यक्रम लगभग 11.30 बजे तक चला। उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के अतिशय प्रभाव से विशाल जनमेदिनी में स्वप्रेरित अनुशासन तो बना ही रहा, अपूर्व शांति, उल्लास और उत्साह भी देखा गया।

व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने वालों से अनुरोध किया गया कि वे इस अवसर पर उपाध्यायप्रवर से व्रत-प्रत्याख्यान अवश्य अंगीकार कर, संयम व त्याग का सार्थक अनुमोदन करें। उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से श्रीमान लक्ष्मीचन्दजी भण्डारी-ब्यावर ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने संयम अनुमोदनार्थ विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार किये।

कार्यक्रम संचालक **श्री प्रकाशजी सालेचा** ने महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रसारित करते हुए बताया कि दीक्षा के पश्चात् उपाध्यायप्रवर का विहार पावटा की ओर संभावित है तथा बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम 2 मई, 2015 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में होने की संभावना है।

उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर जनसमुदाय दूर से वन्दन-नमन करते हुए हर्ष-हर्ष, जय-जय, गुरु हीरा-गुरु मान के जय-जयकारों से प्रांगण को गुंजायमान करता रहा। मीरा बाग पार्किंग स्थल पर दीक्षा महोत्सव में समागत बन्धुओं के भोजन की सुन्दर, अत्यन्त स्नेह एवं आदरपूर्वक की गई थी।

दीक्षा-महोत्सव की घोषणा से ही जोधपुर संघ के सभी सदस्यों के मन में अपूर्व उल्लास था। जोधपुर संघ अध्यक्ष वीरभ्राता श्री धनपतचन्दजी सेठिया, संघमंत्री वीरभ्राता श्री सुभाषजी हुण्डीवाल एवं दीक्षा समिति के संयोजक श्री अमरचन्दजी चौधरी के निर्देशन व संयोजन में आवास-निवास, भोजन, पाण्डाल व्यवस्था, शोभायात्रा, प्रचार-प्रसार आदि सभी समितियों के संयोजकों, सदस्यों के साथ ही संघ के सभी सदस्यों ने संघ-सेवा व समागत भाई-बहिनों की सेवा का लाभ लेते हुए दीक्षा-महोत्सव की सफलता में अपना महनीय योगदान किया।

जोधपुर संघ के आबाल-वृद्ध सभी संघ-सदस्य पूरे दो दिन दीक्षा-महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर हर्षित-उल्लसित भावों से कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहे। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों एवं देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुजनों की कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी बनी रही। दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में हर आगत ने जोधपुर श्रीसंघ की आत्मीयता, सेवाभावना एवं अभिनन्दन समारोह तथा दीक्षा महोत्सव-व्यवस्था की सराहना की।

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2015 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन'** के प्रश्नों के उत्तर 33 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्री चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर(राज.)	(70/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती रेखा जसवंत नंगावत-मैसूर (कर्ना)	(69/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	सौ. निर्मला लुणावत-पुणे(महा.)	(67/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(1 मई, 2015)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 कठूमर विराज रहे हैं, नदबई की ओर विहार सम्भावित है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर विराज रहे हैं।
- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 जयपुर के लाल भवन स्थानक में विराज रहे हैं।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 कुम्हेर में विराज रहे हैं, अलवर की ओर विहार सम्भावित है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 15 सिद्धान्तशाला, पावटा, जोधपुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 अजमेर से किशनगढ़ की ओर बढ़ रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8 खेरली विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 गोपालगढ़-भतरपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 भीलवाड़ा विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 बजरिया-सवाईमाधोपुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9 मॉडल टाउन सोसायटी, सूरत में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 10 बीजापुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 बागलकोट विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 शांति कुँज-अलवर विराज रहे हैं।

- व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 बुचकला विराज रहे हैं। अग्रविहार पीपाड़ की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5 सीताराम वाड़ी, टोंक रोड़, जयपुर विराज रहे हैं।

आचार्यप्रवर ने खेरली आदि ग्रामों को किया उपकृत

खोह आदि ग्रामों में भक्ति का अनूठा रूप, 88 शीलव्रती बने

अक्षय तृतीया पर खेरली में पूर्ण उत्साह

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. कदम-कदम चलकर पहाड़ियों की तलहटी से सटी डगर को पावन करते हुए मुनिमण्डल के साथ 31 मार्च, 2015 को वीर धरा खोह में पधारे। पहाड़ी के नीचे सड़क मार्ग पर स्थित गाँव में सम्प्रति सभी सुविधाएँ सुलभ हैं। स्वर्गीय श्रद्धेय श्री राममुनिजी म.सा. की यह सांसारिक जन्म भूमि है। नवदीक्षित श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. का सांसारिक ननिहाल है। परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के विराजने और भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के प्रसंग से अपूर्व आनन्द का आह्लादकारी वातावरण सृजित हुआ। हर भक्त के चेहरे पर चमक, हरेक के मुखमण्डल पर प्रमोदभाव, हर वक्त सेवा व संभाल में सन्नद्धता-व्यस्तता देखने को मिली। पाँच दिवसीय अल्प प्रवास में धर्म आराधना के अनेक आयामों जैसे- संवरसाधना, एकाशन, आयम्बिल, उपवास की लड़ी, तेले की तपस्या कर श्रद्धालुओं ने आत्म-निर्जरा तो की ही साथ ही ज्ञानाराधना की दृष्टि से सामायिक, प्रतिक्रमण आदि सीखने का पुरुषार्थ कर सुयोग का सदुपयोग किया। पूज्य आचार्य भगवन्त खोह में 31 मार्च से 4 अप्रेल तक विराजे। यहाँ की फर्स्ट अप्रेल सदैव चिरस्मरणीय रहेगी, उस दिन 17 शीलव्रत के खंध हुए तथा सुमेरगंजमण्डी संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, 2 अप्रेल को भगवान महावीर का जन्म कल्याणक विशाल उपस्थिति में तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान के साथ उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। (महावीर जयन्ती के समाचार इस अंक में पृथक् से प्रकाशित हैं।) भाइयों ने प्रेरणा कर 3 अप्रेल को पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से शीलव्रत के 19 खंध करवाकर अल्पकालीन प्रवास अवधि को स्वर्णिम एवं उल्लेखनीय बना दिया। 4 अप्रेल को विगत 20 वर्षों से हर पूर्णिमा पर पूज्य गुरु भगवन्त के पावन दर्शनों का सुलाभ लेते आ रहे श्रद्धानिष्ठ गुरुभक्त श्री पारसमल जी खटोड़ दर्शनार्थ उपस्थित हुए। सुदूर दक्षिण-प्रवास के समय भी श्री खटोड़जी व श्री अमरचन्दजी साण्ड का यह क्रम विजयनगर चातुर्मास से अनवरत बना हुआ है। वर्तमान में

श्री सुमेरसिंह जी बोथरा व श्री प्रमोद जी लोढ़ा-जयपुर भी महीने में 3-4 बार पधार कर दर्शनों का लाभ लेने का लक्ष्य रखते हैं। ऐसे गुरु भक्तों पर चतुर्विध संघ को नाज है। खोह में कुल मिलाकर 38 शीलव्रती बने। आतिथ्य सेवा का सुन्दर नियोजन छोटे से ग्राम में इतने बड़े स्तर पर आत्मीय भावों से हुआ, जो प्रमोदजन्य है। श्रावकरत्न श्री कजोड़मलजी जैन, श्री सुमतिचन्द जी जैन, श्री प्रदीपजी जैन, श्री सुशीलजी जैन, श्री विमलजी जैन, श्री प्रसूनजी जैन की अग्लान भाव से सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए धर्म प्रभावना का जो सुन्दर प्रसंग बना वह चिरस्मरणीय रहेगा।

5 अप्रेल को पूज्य गुरुदेव का जब खोह से विहार हुआ तो निःशक्तजनों को छोड़ आठों ही परिवारों के समस्त सदस्य पैदल विहार में सहाड़ी तक साथ रहे एवं जयनिनाद का उद्घोष समूचे मार्ग में गुंजायमान रहा। 5 को सायं पुनः विहार कर धोलागढ़ पधारे एवं 6 अप्रेल को वीर धरा बड़ौदाकॉन पधार कर पदरज से पावन किया। वीर पिता श्री राजेन्द्र जी जैन एवं वीर भ्राता श्री सचिनजी जैन की भावभरी विनति गंगापुर विहार समय से चल रही थी। यहाँ से महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा. गुरु भगवन्त के चरणों में दीक्षित हो, रत्नसंघ की धर्मप्रभावना कर रही हैं।

7 अप्रेल को टिटपुरी में पूज्यश्री का पधारना हुआ। यहाँ बैंगलोर, चेन्नई, जयपुर, मुम्बई, भोपालगढ़, जोधपुर आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका दर्शनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर सायंकाल विहार कर सलेमपुर एवं 8 को बसेठा तथा 9 को भनोखर पधारे। यह धरा महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा. की सांसारिक जन्मभूमि है। 10 को जहाडू पधारने पर वहाँ के भक्तों ने सेवाभक्ति का पूरा लाभ लिया। जहाडू मुख्य सड़क से एक कि.मी. अन्दर है। 11 को रोणिजाथान पधारना हुआ। यहाँ आगरा संघ शेषकाल फरसने की विनति लेकर पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। जयपुर से भी भक्तजन पधारे। 12 को घोसराना विराजे। जयपुर, भरतपुर, नदबई संघ, अपनी भावना लेकर उपस्थित हुए। अजमेर से श्री माणकचंद जी रांका उनके मातुश्री के समाधिमरण के पश्चात् परिवारजनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्यप्रवर की सेवा में पधारे। 13 अप्रेल को दांतिया एवं 14 एवं 15 अप्रेल को अलीपुर में विराजकर रात्रि साधना की। अलीपुर में ब्यावर, जयपुर, भोपाल से भक्तजनों का पधारना हुआ। बजरिया, सवाईमाधोपुर से श्री प्रेमबाबूजी, सुरेशबाबूजी जैन अपनी मातुश्री श्रीमती रामकन्याबाई जी के स्वर्गगमन पर परिवार सहित मांगलिक श्रवण करने पावन सन्निधि में पधारे। धोलागढ़ से खेड़ली मात्र 17 कि.मी. ही था, पर क्षेत्रवासियों को उपकृत करने के लक्ष्य से लगभग 60 किमी. का अतिरिक्त विहार फरमाकर 16 अप्रेल को खेड़ली की ओर पावन श्री चरण बढ़े। इस अतिरिक्त विहार में ऊबड़-खाबड़ रास्ते, नुकीले-तीखे कंकरों से

युक्त उधड़ी हुई सड़क एवं वर्षा आदि के विघ्न आए, पर यह अतिशय रहा कि जहाँ-जहाँ गुरु भगवन्त के चरण पड़े, वहाँ ओलावृष्टि नहीं हुई।

खेड़ली वालों का अंतरंग उत्साह देखते ही बनता था। छोटी वय के बालकों ने पैदल नंगे पैर विहार कर धन्यता का अनुभव किया। समूचे मार्ग में जयघोष का उद्घोष समवेतस्वर में बराबर बना रहा। खेड़ली पहुँचते-पहुँचते संख्या 300 के लगभग हो गई थी। धर्म सभा को उद्बोधित कर पूज्य गुरुदेव ने मांगलिक फरमाई।

श्री कजोड़मलजी जैन खोह वाले जो नवदीक्षित श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के सांसारिक नाना भी हैं, ने गंगापुर से लेकर खेड़ली तक परिवार वालों के साथ प्रतिदिन विहार सेवा का अलभ्य लाभ लिया। वीरपिता श्री शिवदयालजी जैन हरसाना वालों ने भी मण्डावर से खेड़ली तक विहार का लाभ लिया। जिन-जिन गाँवों में पूज्य गुरुदेव की फरसना हुई, पूज्य आचार्य भगवन्त की प्रभावी प्रेरणा से सामायिक-साधना पुनः प्रारम्भ हुई। जिन स्थानक भवनों के ताले लगे हुए थे, वहाँ धर्म साधना का क्रम प्रारम्भ हुआ। विचरण काल में खोह में-38, सहाड़ी में-1, बड़ौदाकॉन में-2, सलेमपुर में-1, बसेठ में-2, भनोखर में-2, जहाड़ू में-9, रोणिजाथान में-6, घोसराना में-11, दांतियां में-15 और अलीपुर में-1 शीलव्रत के खंध हुए। खेड़ली में पूज्य गुरु भगवन्त के पदार्पण समय से ही जयपुर से गुरुभक्तों का दर्शनार्थ पधारने का क्रम अनवरत बना रहा। कोटा संघ के प्रमुख श्रावकगणों ने दर्शनों का लाभ लिया।

खेड़ली में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि महासती मण्डल का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर कोलकाता, मेड़ता, बैंगलोर, जलगांव, जोधपुर, जयपुर, ब्यावर, उनियारा, रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन, भरतपुर, इन्द्रगढ़, महावीरनगर, अजमेर, कोटा, बाबई, सवाईमाधोपुर, कनानीपुर, खोह, सहाड़ी, मौजपुर, विचगाँव, हरसाना, अलीगढ़-रामपुरा, मण्डावर, इन्दौर, महुआ, सैंकवा, जहाड़ू, कठूमर, आगरा, नदबई, अलवर, चैन्नई, गंगापुर, लक्ष्मणगढ़, अलीपुर, दांतियां, टिटपुरी, रसीदपुर, बौण से, बरगमां इत्यादिक ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्रों के अनेकों ग्राम नगरों के सुश्रावक-सुश्राविकाएँ उपस्थित हुए।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकर भगवान अनन्तदानी एवं अनन्तज्ञानी होते हैं। 'तप' ताप और संताप मिटाने वाला है। **महासती श्री रक्षिताजी म.सा.** ने कहा कि आप लोग त्याग मार्ग अपनाकर अक्षय तृतीया पर तप करने वालों की अनुमोदना करें। **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** ने तप एवं दान के महत्त्व का प्रतिपादन किया।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया- आज अक्षय पर्व का दिन एक है, प्रसंग चार-चार हैं। दान का संज्ञान, तप के प्रत्याख्यान, साधना का व्याख्यान तथा आचार्य हस्ती के चादर महोत्सव का दिन है। तपस्वियों से निवेदन है कि वे पारणा नहीं करें। आगामी वर्ष तक के लिये प्रत्याख्यान करने का भाव रखें। आचार्य भगवन्त व उपाध्याय भगवन्त का दीक्षा अर्द्धशती वर्ष पोरवाल क्षेत्र में तप-त्याग के साथ मनाया गया। आचार्य भगवन्त का आचार्य पदारोहण का रजत वर्ष उपस्थित हो रहा है। यह वर्ष हमारे लिये गौरव का है। साधना करने का, त्याग के साथ मनाने का है। आज का दिन भगवान के पारणे का तथा श्रेयांस द्वारा इक्षुरस दान करने का है। भारत की संस्कृति तप प्रधान है। तप के साथ पारणे का सम्बन्ध है। भगवान आदिनाथ के समय 12 महीने के तप का विधान था। भगवान महावीर के समय 6 महीने तक के तप का विधान है। दान देते समय तीनों समय उपयोग रखा जाना चाहिए। देने के पहले शुद्ध भावना, संतोष, देते समय हर्ष तथा देने के बाद भी संतोष रखना चाहिए।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि वीतरागवाणी का भक्त कहलाने वाला जैन तप के नाम पर रात्रि भोजन नहीं करता। आज का दिन तप का है- रात्रिभोजन का त्याग कीजिये। गुटखा छोड़िये, अखाद्य मत खाइये। यदि घर, समाज, संघ चलाना चाहते हैं तो कड़वे बोल नहीं बोलें, सामंजस्य रखें। दूध व शक्कर खाने पीने वाला यह जीव कड़वा क्यों हो रहा है?

अक्षय तृतीया के पश्चात् वैशाख शुक्ला अष्टमी 26 अप्रेल को पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. का पुण्यस्मृति दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। खेरली संघ ने पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवासकाल में धर्माराधना का तो लाभ लिया ही, समागत श्रद्धालुओं के अतिथि-सत्कार में भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। 28 अप्रेल को पूज्यप्रवर का विहार दारोदा एवं फिर कठूमर की ओर हुआ। खेरली में अनेक श्रद्धालु श्रावकों का आवागमन हुआ। श्रावकों, श्राविकाओं एवं युवकों ने सेवा का लाभ लिया। वीर पिता श्री प्रभुदयालजी सेवा का निरन्तर लाभ ले रहे हैं।

उपाध्यायप्रवर ने किया जोधपुर के क्षेत्रों को पावन
शासनप्रभाविकाजी द्वारा भी धर्मप्रभावना
जोधपुर में दीक्षा का सुयोग

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में जोधपुर

नगर के श्रावक-श्राविका सतत लाभान्वित हो रहे हैं। उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा 5 के घोड़ों का चौक स्थानक विराजते समय 2 अप्रेल को महावीर जयन्ती पर्व तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। महावीर कॉम्प्लेक्स में प्रातःकाल 7 से 8 बजे तक विभिन्न सम्प्रदायों के लगभग 2000 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-साधना का लाभ लेते हुए मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. के मंगल उद्बोधन का श्रवण किया। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि महावीर नाम बड़ा सार्थक नाम है। इसके प्रत्येक अक्षर से हमें प्रेरणा प्राप्त होती है। 'म' का अभिप्राय है- मधुरता आये व्यवहार में। 'हा' का तात्पर्य है- हाथों से हो परोपकार। 'वी' से हमें संदेश मिलता है- वीतरागता हो विचारों में। 'र' अक्षर कहता है- रमणता हो आचार में। श्रद्धेय मुनिश्री ने इन चार अक्षरों के माध्यम से भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त, समता, सहिष्णुता, क्षमाशीलता, विनय, सत्यनिष्ठा आदि विभिन्न सिद्धान्तों की जीवन में महत्ता प्रतिपादित की। मुनिश्री ने कहा भगवान महावीर ने मानव जाति को जो संदेश दिया वह समस्त विश्व को आलोकित करने वाला है।

घोड़ों का चौक स्थानक से 4 अप्रेल को विहार कर पूज्य उपाध्यायप्रवर संत मण्डली सहित महिलाबाग के चौथ स्मृति भवन स्थानक पधारे। यहाँ दो दिन विराजकर 6 अप्रेल को मुथाजी के मंदिर पधारे। 8 अप्रेल को महामन्दिर के समता भवन पधारे। यहाँ पर चार दिन विराजे। हेमसिंह जी का कटला स्थित स्थानक में आचार्य श्री शुभमुनिजी म.सा. की सुखसाता की पृच्छा की गई तथा दीक्षा में पदार्पण हेतु निवेदन किया गया। उपाध्यायप्रवर के महामन्दिर विराजते समय श्रद्धेय श्री सुमतिमुनिजी म.सा. के अलग प्रवचन नहीं हुए। समता भवन से आपश्री का पदार्पण 12 अप्रेल को शक्तिनगर स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में हुआ। शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा पावटा से विहार कर लालेशजी कांकरिया के निवास स्थान पधारे। चतुर्दशी एवं पक्खी को 40 से 50 दया-संवर की आराधना हुई।

21 अप्रेल को अक्षय तृतीया पर 21 पारणक हुए। जो तपस्वी पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में खेड़ली नहीं पहुँच सके, उन्होंने शक्तिनगर के एस.एल.बी.एस. कॉलेज के प्रांगण में पारणक का लाभ लिया। इसी दिन पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 86 वां आचार्यपद दिवस भी था। पालनपुर, पीपाड़सिटी, पाली, कानपुर, रणसीगाँव, जोधपुर आदि क्षेत्रों के तपस्वी भाई-बहनों ने पारणक किये तथा लगभग 1500 श्रावक-श्राविकाओं की महती उपस्थिति रही। संत मण्डल एवं महासती मण्डल ने तप एवं दान के महत्त्व पर प्रकाश

डाला। वात्सल्य सेवा का लाभ श्री कांतिलालजी, प्रवीणजी, विनयजी बाफना परिवार-पालनपुर ने लिया। 23 अप्रेल को उपाध्यायप्रवर लक्ष्मीनगर स्थित कांकरिया स्थानक पधारे। यहाँ प्रवचन में श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने गुणदर्शी, समदर्शी, स्वदर्शी एवं सर्वदर्शी बनने की प्रेरणा की तथा मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने 'हर क्षण जानते रहो और हर क्षण जागते रहो' की प्रेरणा की। 24 अप्रेल को श्रावकरत्न श्री मनमोहनजी कर्णावट के निवास स्थल 'विनायक' पर पूज्य उपाध्यायप्रवर का पदार्पण हुआ, क्योंकि यहाँ से दीक्षा-स्थल मीरा बाग पार्किंग स्थल एकदम निकट था। इस दिन मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा की भव्य शोभा यात्रा पावटा के स्थानक भवन से प्रारम्भ हुई, जो उपाध्यायप्रवर के विराजित स्थल पर पहुँची। यहाँ मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रेरणाप्रद उद्‌बोधन दिया एवं उपाध्यायप्रवर ने दीक्षार्थी सहित सबको मंगल पाठ प्रदान किया।

25 अप्रेल को मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा की अभिनिष्क्रमण यात्रा अपने अस्थायी निवास 'अक्षयदीप' से प्रारम्भ हुई जो दीक्षा स्थल मीरा बाग पार्किंग स्थल पहुँची। उपाध्यायप्रवर आदि संत-मण्डल पहले ही दीक्षा स्थल पर पहुँच चुके थे। उनके पावन मुखारविन्द से प्रातः 9.00 बजे 'करेमि भंते' का पाठ प्रदान किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री शुभचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्री सुमतिमुनिजी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा, ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चन्द्रकांताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री उर्मिलाजी म.सा. आदि ठाणा भी उपस्थित थे।

दीक्षा का समस्त कार्यक्रम अत्यन्त शांति एवं सुव्यवस्था के साथ सम्पन्न हुआ। लगभग 8 बजे से 11.15 बजे तक श्रावक-श्राविकाओं ने पूर्ण अनुशासन के साथ दीक्षा के अवसर पर हुए उद्‌बोधनों का श्रवण किया तथा दीक्षा की भावपूर्ण अनुमोदना की। दीक्षा विधि के सम्पन्न होने के पश्चात् पूज्य उपाध्यायप्रवर पूर्व न्यायाधिपति स्व. श्री चाँदमलजी लोढ़ा के सुपुत्र श्री लक्ष्मीमल जी लोढ़ा के आवास पधारे।

वैशाख शुक्ला अष्टमी 26 अप्रेल को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 24 वें पुण्यस्मृति दिवस पर पूज्य उपाध्यायप्रवर पावटा स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन पधार गए। यहाँ पूज्य हस्ती के जीवन एवं उपदेशों को केन्द्र में रखकर श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा., महासती श्री कान्ताजी म.सा., श्रद्धेया महासती श्री शान्तिप्रभाजी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने भावभरा उद्‌बोधन दिया। इस अवसर पर संघसंरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने भी भावभीनी

अभिव्यक्ति करते हुए कहा- मेरे मन के भगवान गुरुदेव हस्ती ने मुझे इस क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित किया। संघ सेवा में समर्पित रहने में उनका हाथ है। वे अल्पभाषी थे, किन्तु उनका जीवन बोलता था। उपाध्यायप्रवर ने संक्षिप्त उद्बोधन में फरमाया कि आपको आचार्य भगवन्त के जीवन की जो बातें अभी संत-मण्डल एवं महासती मण्डल के द्वारा बताई गई हैं, उन्हें जीवन में अपनाएंगे तो आपका जीवन सार्थक होगा। इस अवसर पर 22 एकाशन, 80-85 दया संवर, 15 उपवास एवं आयम्बिल तप की आराधना हुई। वात्सल्य का लाभ श्रीमती संतोषजी किरोड़ीमल जी लुंकड़, घोड़ों का चौक ने लिया।

27 अप्रेल को उपाध्यायप्रवर का 25 वां उपाध्यायपद दिवस उपस्थित हुआ। महासती श्री शान्तिप्रभाजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर का गुणानुवाद किया। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने रत्नसंघ के आचार्यों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते हुए फरमाया कि उपाध्यायपद को रत्नसंघ में पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने ही सुशोभित किया है। एक रोचक प्रसंग सुनाते हुए मुनिश्री ने कहा कि उपाध्यायप्रवर से जब किसी ने पूछा कि आपको पण्डित क्यों कहते हैं तो उपाध्यायप्रवर ने उत्तर दिया कि जो पाप से डरे वह पण्डित है। इस दिन 25 दया-संवर की आराधना हुई एवं 25 एकान्तर तप चल रहे हैं। 28 अप्रेल को भगवान महावीर का केवलज्ञान दिवस तथा 29 अप्रेल को संघ स्थापना दिवस मनाया गया।

श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी का जयपुर में विचरण

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जयपुर के विभिन्न उपनगरों में विचरण चल रहा है। 27 मार्च को आराधना भवन श्यामनगर से विहार कर रामनगर, सिविल लाइंस, महेश नगर, जगदीश कॉलोनी होते हुए 31 मार्च को रत्न स्वाध्याय भवन पधारे। जहाँ 15 दिन का प्रवास रहा। 15 अप्रेल को विहार कर तिलक नगर, आदर्श नगर, सेठी कॉलोनी, रमण मार्ग होते हुए पुनः 25 अप्रेल को रत्न स्वाध्याय भवन पदार्पण हुआ। यहाँ 26 अप्रेल को पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वां पुण्यस्मृति दिवस 3-3 सामायिक, एकाशन, संवर, दया आदि के साथ मनाया गया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव के सयंमित जीवन पर प्रकाश डाला तथा अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भजन एवं संस्मरण प्रस्तुत किए। सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने लगभग एक घण्टे तक गुरुदेव के साथ रहे संस्मरणों, उनके संयमी जीवन व उपकारों का विवेचन किया। यहाँ से 27 अप्रेल को विहार कर सन्तमण्डल लाल भवन पधार गए हैं, जहाँ अभी कुछ समय स्थिरता संभव है।

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

श्रावक-श्राविकाओं को आगम में भगवान ने अनेक विशेषणों से सम्बोधित किया है। जहाँ श्रावक को 'कोविद श्रावक' के रूप में कहा, वहीं श्राविकाओं को 'बहुश्रुता शीलवंता' आदि उत्कृष्ट सम्बोधन दिये। आगमों में वर्णित श्रावक-श्राविकाओं की झलक वर्तमान में परिलक्षित हो, इस हेतु अत्यन्त आवश्यक है- आगम का स्वाध्याय। श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ एवं तत्त्वज्ञ बनें, इस हेतु आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल का उपदेशों के माध्यम से पुरजोर प्रयास रहता है। गुरुद्वय के दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष के शुभप्रसंग पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु "बनें आगम अध्येता" अनुष्ठान प्रारम्भ किया गया, जिसके अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, नन्दीसूत्र, अन्तगडसूत्र की परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं। अब पाँचवीं आगम परीक्षा के रूप में 'उत्तराध्ययनसूत्र' को लिया गया है। इसमें श्रावक-श्राविका वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में पूर्ण होगी। आप सभी भगवान महावीर की अन्तिम देशना उत्तराध्ययसूत्र का स्वाध्याय करने का लक्ष्य रखें। इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण में मूल्यांकन प्रश्न पत्र 01 मई 2015 को वितरित करना प्रारम्भ किया गया है तथा प्रश्न-पत्र पूर्ण कर भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 जून, 2015 रखी गई है। **सम्पर्क सूत्र**- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2570753, अध्यक्ष-श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, जयपुर-098290-19396, महासचिव- श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625, श्री धर्मेन्द्र जी जैन, जयपुर-096943-79209

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने ड्रेस कोड के रूप में लाल चून्दड़ी एक समान रंग व रूप (डिजाइन) में निर्धारित की है। रत्नसंघ की सभी श्राविकाओं से निवेदन है कि इस ड्रेस कोड को प्रत्येक श्राविका को अपनाना अनिवार्य है। संघ द्वारा आयोजित दीक्षा महोत्सव, संवत्सरी, सामूहिक संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन आदि सभी कार्यक्रमों में समस्त श्राविकाएँ उक्त साड़ी पहन कर भाग लेने का लक्ष्य रखें, जिससे कार्यक्रमों में एकरूपता एवं अनुशासन बना रहे। साड़ी मंगवाने हेतु महासचिव श्रीमती बीनाज़ी मेहता से शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें, साड़ी का मूल्य 450/- रुपये निर्धारित है।

-बीना मेहता, महासचिव

'संस्कारम्' पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल की प्रस्तुति 'संस्कारम्' (संकलन- श्रीमती नीलू डागा-बीकानेर) पुस्तक पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता हो रही है। प्रश्न पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि 15 जून 2015, उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि 15 अगस्त, 2015 एवं परिणाम की घोषणा की सम्भावित तिथि 17 नवम्बर, 2015 है। प्रतियोगिता में पुरस्कार निम्नप्रकार देय हैं- **प्रथम पुरस्कार-** 21000/- रुपये, **द्वितीय पुरस्कार-** 11000/-रुपये, **तृतीय पुरस्कार-**5100/-रुपये, **अगले 10 प्रतियोगियों को** 3100/- रुपये, **अगले 10 प्रतियोगियों को** 2100/- रुपये, **अगले 20 प्रतियोगियों को-** 1100/- रुपये, **अगले 50 प्रतियोगियों को** 500/-रुपये तथा सभी भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। **'संस्कारम्' पुस्तिका-** 100 रुपये में तथा संस्कारम् आराधना (प्रश्न पुस्तिका) 30 रुपये में उपलब्ध है। पोस्ट से मंगवाने पर डाक खर्च 30 रुपये अतिरिक्त देय होगा। प्रतियोगिता में सभी आयुवर्ग के जिज्ञासु भाग ले सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र-** श्रीमती इन्दिराजी बोहरा, चेन्नई (तमिलनाडु)- 09176806000, श्रीमती नीलूजी डागा, बीकानेर (राज.)-09314879797, सुश्री विधिजी कोठारी, कोटा (राज.)-09461916309, श्रीमती रजनीजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.) -09460230950, श्रीमती सुनीताजी चौधरी, पीपाड़ (राज.)-07597451157, श्रीमती अनीताजी जागीरदार, बालोतरा (राज.)-07877223269, श्रीमती अनुपमाजी गुलेच्छा, पाली (राज.)-09414121999, श्री राजीव जी नाहर, सूरत (गुजरात)-09375165765, श्री मनोजजी संचेती, जलगाँव (महा.)-09422591423, श्रीमती मंजूजी जैन, मुम्बई (महा.)-09820388903, श्रीमती रेखाजी मेहता, बैंगलोर (कर्नाटक)-09900152457, श्रीमती पदमाजी गुगलिया, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)-09553901195, **पुस्तिका प्राप्ति-स्थान-** (1) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763, 2641445, 2624891, 2630490, 2622623, (2) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 2570753

मारवाड़ एवं पल्लीवाल क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 01 मार्च 2015 को मारवाड़ क्षेत्र में तथा 04 से 06 अप्रेल 2015 तक पल्लीवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार

कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रथम प्रचार-प्रसार यात्रा में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमती सरला जी भण्डारी, वरिष्ठ स्वाध्यायी, स्वाध्याय संघ-जोधपुर कार्यालय सहायक श्री धीरजजी डोसी, संस्कार केन्द्र के पाठशाला निरीक्षक विनीत कुमारजी जैन की अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुईं तथा अप्रेल माह की यात्रा में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमती सरला जी भण्डारी, स्वाध्याय संघ-जोधपुर कार्यालय सहायक श्री धीरजजी डोसी, पल्लीवाल शाखा संयोजक श्री शिवदयाल जी जैन, हरसाना, स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री राजेश जी जैन, हिण्डौन सिटी की अमूल्य सेवाएं प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत मारवाड़ क्षेत्र के भोपालगढ़, गोटन, खारिया, मेडता तथा पल्लीवाल क्षेत्र के गंगापुर सिटी, करौली, सेंवाला, बरगमां, हिण्डौन, वर्द्धमान नगर हिण्डौन, बोण, महुआ, रसीदपुर, मण्डावर, बीचगांवा, हरसाना, मौजपुर, खौह, नदबई, पहरसर आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ।

प्रचार कार्यक्रम मे पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायियों को बुलाने की प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप पल्लीवाल क्षेत्र से नौ मांगे प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनाने की प्रेरणा से पांच नए स्वाध्यायियों ने स्वाध्यायसंघ की सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पयुर्षण सेवा की स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर पाठशाला तथा रविवारीय संस्कार शिविर की प्रेरणा की गई तथा चल रही पाठशालाओं की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा हेतु नए केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा परीक्षा फॉर्म भरवाए गए। सभी श्रावक-श्राविकाओं को स्थानक में पधारकर सामायिक स्वाध्याय करने की प्रेरणा की गई।

-कुशलचंद जैन 'गोटेवाला', संयोजक

जैन समाज की सात हस्तियों को राष्ट्रीय सम्मान

भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में 8 अप्रेल 2015 को आयोजित एक भव्य समारोह में कर्नाटक प्रान्त के प्रमुख तीर्थ धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र जी हेगड़े को पद्मविभूषण से सम्मानित किया। आपके द्वारा आयुर्वेद, नेच्युरोपैथी, डेन्टल, इंजीनियरिंग, मेडिकल, कानून एवं बिजनेस मैनेजमेन्ट के 40 शिक्षण संस्थान संचालित किये जाते हैं। आपके द्वारा गाँव में रोजगार तथा प्रतिभा प्रोत्साहन तथा नशामुक्ति के कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान किया गया है।

प्रशासनिक अधिकारी स्व. श्री मीठालाल जी मेहता, उदयपुर एवं वीरेन्द्रराजजी मेहता, जयपुर को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। प्रमुख फिल्म डायरेक्टर श्री संजय लीला भंसाली, संगीत निर्देशक श्री रवीन्द्र जैन को, तारक मेहता का उल्टा चश्मा सीरियल के लेखक श्री तारक मेहता एवं परम्परागत टेक्सटाइल आर्ट्स ऑफ इण्डिया के प्रमुख विशेषज्ञ

श्री राहुल जैन को भी पद्मश्री अलंकरण प्रदान किया गया है।

अगरचन्द नाहटा पर डाक टिकिट जारी

बीकानेर- अगरचन्द नाहटा की स्मृति में डाक विभाग द्वारा उनके 105 वें जन्मदिवस पर 19 मार्च 2015 को विशेष आवरण विमोचन समारोह आयोजित किया गया। डाक टिकिट पर राजस्थान साहित्य वाचस्पति श्री अगरचन्द नाहटा और उनके द्वारा स्थापित अभय जैन ग्रंथालय को दर्शाया गया है। स्वर्गीय नाहटा ने संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, पाली सहित विविध भाषाओं में शोध कार्य किया था। उन्हें अनेक लिपियों का विशिष्ट ज्ञान था। उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग 90 हजार दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह किया जो आज भारत के निजी ग्रंथागारों की प्रथम पंक्ति में शुमार होता है। स्वर्गीय नाहटा ने प्रतिदिन लगभग 16 घंटे अध्ययन कर आठ हजार शोधपूर्ण निबंध भी लिखे जो आज शोधार्थियों को अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

आचार्य हस्ती की पुण्यतिथि पर विशेष व्याख्यान

कोलकाता- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के तत्त्वावधान में 26 अप्रेल 2015 को आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वाँ स्मृतिदिवस दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, चेन्नई के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि आचार्य हस्ती ने विद्वत् निर्माण, जैन इतिहास लेखन, गुणानुराग आदि अनेक उपायों से जैन एकता को सुदृढ़ बनाया। सामायिक-स्वाध्याय की ही भाँति सामाजिक एकता और पारस्परिक सद्भाव को बढ़ाने में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है, जिसकी वर्तमान में बहुत आवश्यकता है। इस अवसर पर कवि डॉ. धींग ने स्वरचित 'जय जिनेन्द्र' गीत सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के न्यासी रिखबदासजी भंसाली ने श्रम, समता और समानता पर बल दिया। जैन सभा के अध्यक्ष श्री सरदारमल जी कांकरिया ने शिक्षा, चिकित्सा और मानवसेवा की महत्ता बताई। इस अवसर पर छह काय रक्षा नाटिका, राजस्थानी गीत के माध्यम से आचार्य हस्ती गुणानुवाद तथा 'आचार्य हस्ती ने कमाल कर दिया' शीर्षक से कविता प्रस्तुत की गई। *-डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा, महामंत्री*

संक्षिप्त-समाचार

वाराणसी- श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी के तत्त्वावधान में भगवान महावीर स्वामी की 2614 वीं जन्म-जयन्ती के सुअवसर पर बढ़ता हुआ 'उपभोक्तावाद एवं भगवान

महावीर के सिद्धान्त' विषय पर आचार्य विद्यासागरजी के सुशिष्य मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज एवं मुनिश्री विराटसागर जी महाराज के सान्निध्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. बी.एम. शुक्लाजी, पूर्व कुलपति-गोरखपुर विश्वविद्यालय ने की। मुख्य अतिथि- प्रो. यदुनाथजी दुबे, कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, सारस्वत अतिथि- प्रो. कमलेश दत्तजी त्रिपाठी ने अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया। संगोष्ठी का संचालन डॉ. अमितकुमार जी जैन ने किया।

अहमदाबाद- एल.डी. इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, संबोध संस्थान तथा श्रुतरत्नाकर द्वारा 'उपमितिभवप्रपंचकथा अध्ययन शिविर' 23 मई से 30 मई 2015 तक आयोजित किया जाएगा। महर्षि सिद्धर्षिगणि विरचित श्री उपमितिभवप्रपंचकथा जैन साहित्य का अद्भुत ग्रंथ है। इस ग्रंथ में विविध उपमाओं से संसार के प्रपंच कथित हैं। आठ दिवसीय इस शिविर के अन्तर्गत इस ग्रंथ के आठ प्रस्तावों का अध्ययन किया जाएगा। प्रवेश पत्र के लिए निम्न पतों पर सम्पर्क करें- ला.द.भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, यूनियन बस स्टेण्ड के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009 (राज.), पारुलबेन एच. परीख-26633734, इन्दीराबेन डी.शाह- 26587230

कुलियाबांधा- शास्त्री जी युवक संघ, कुलियाबांधा के द्वारा 'श्री महावीर गौशाला' का निर्माण किया गया है, जिसमें बूढ़ी गाय, जो दूध नहीं देती है, ऐसी गायों के रख-रखाव एवं चारा-पानी की व्यवस्था की गई है। हमारा निवेदन है कि जो गाय बूढ़ी हो गई हैं, दूध नहीं देती हैं, उन्हें किसी अन्य के हाथ में न बेचें, उसे हमारी गौशाला को बेच दें या दान में दे दें। गौसेवा एवं रक्षा के कार्य में आप सभी अपना सहयोग, सुझाव भेजें। **सम्पर्क सूत्र-** श्री महावीर गौशाला-संचालक, शास्त्री जी युवक संघ, कुलियाबांधा, जिला-नुआपड़ा (ओड़िशा) , श्री हीरालाल पटेल-अध्यक्ष-086584-94631, श्री राकेश जैन-सचिव-09437-071731, 95562-64064

दिल्ली- जीतो संस्था प्रशासनिक सेवा-संस्थान के माध्यम से समाज के प्रतिभाशाली/मेधावी छात्र एवं छात्राओं को देश की प्रशासनिक सेवाओं (IAS.IPS, IRS, etc) में जाने के लिए गत 8 वर्षों से उत्साहित एवं प्रेरित कर रही हैं। अब तक 67 छात्रों का चयन 'संघ लोक सेवा आयोग' में हो चुका है तथा इनमें 120 से अधिक प्रशासक/अधिकारी 'राज्य लोक सेवा आयोग' में चयनित हो चुके हैं। JITO अपने छात्रों को निःशुल्क आवास, निःशुल्क स्वच्छ एवं पौष्टिक आहार, प्रशिक्षण में रियायत, उचित वातावरण, वरिष्ठ एवं अनुभवी प्रशासकों द्वारा परामर्श एवं निर्देशन की सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। JATF की हॉस्टल सुविधाएँ दिल्ली, जयपुर, इन्दौर, पुणे एवं चेन्नई शहरों में

उपलब्ध है। इसका लाभ कोई भी जैन छात्र उठा सकता है, अतः सबको सूचित करें। JATF की लिखित परीक्षा 30 मई 2015 को होगी, जिसके लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 10 मई 2015 है। **सम्पर्क सूत्र-** विनय कवाड़, चीफ सैक्रेटरी, जीतो जोधपुर (राज.), Email-jitojodhpur@gmail.com, info@jitoatf.org, Website-www.jatfadmission. org, www.jitoaft.org

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न विद्यालय में प्रधानाचार्य, व्याख्याता भौतिक, गणित, जीव व रसायन विज्ञान, वाणिज्य-बही खाता, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, शारीरिक अध्यापक व लिपिक की आवश्यकता है। जैन परिवार से प्रार्थी को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार देय होगा। आवेदन हेतु सम्पर्क सूत्र- मंत्री श्री जैन रत्न उ. मा. विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), फोन नं.-044-25369430, 09380102607

बधाई

जोधपुर- संबोधि साधना मार्ग का राष्ट्रीय सम्मान 'संबोधि सेवा रत्न' इस वर्ष 21 अप्रेल

2015 को नेत्रहीन संस्थान की अध्यक्ष एवं श्राविकारत्न श्रीमती सुशीला जी बोहरा को प्रदान किया गया। श्रीमती बोहरा को अभिनन्दन-पत्र एवं शॉल से सम्मानित किया गया तथा श्री आसूलाल विमल वडेरा परमार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष सोहनलाल वडेरा द्वारा नेत्रहीन संस्थान को इक्यावन हजार की सहयोग राशि भी प्रदान की गई। इस अवसर पर संत चन्द्रप्रभ ने कहा कि श्रीमती सुशीला बोहरा जोधपुर की मदर टेरेसा हैं। नेत्रहीन संस्थान द्वारा पाँच सौ से ज्यादा नेत्रहीन बच्चों को पढ़ाना, लिखाना, उन्हें सारी सुविधाएँ देकर पाँवों पर खड़ा करने के लिए जो सेवा की जा रही है वह मानवता के लिए मिसाल है। संबोधि सेवा रत्न सम्मान साधना, सत्साहित्य और मानव-सेवा के क्षेत्र में की जाने वाली अमूल्य सेवाओं के लिए समर्पित किया जाता है।

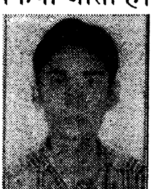

हिण्डौनसिटी- श्री गौरव कुमारजी जैन सुपुत्र श्री अशोककुमारजी जैन (प्रधानाचार्य) का राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड में कनिष्ठ अभियन्ता-प्रथम (JEN-I) पद पर चयन हुआ है। इनका पद स्थापन 400KV GSS, Hindaun City हुआ है।

चण्डीगढ़- चंडीगढ़ के पूर्व सांसद और भाजपा नेता सत्यपाल जैन को 16 अप्रेल 2015 को भारत सरकार का एडिश्नल सॉलिसिटर जनरल नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति तीन साल के लिये राष्ट्रपति द्वारा की गई है।

जोधपुर- सुश्री हीना सुपुत्री श्रीमती कविता-अखिलेश जी खिंवसरा एवं सुपौत्री श्रीमती बुधकंवरजी-श्री जवरीलाल जी खिंवसरा की रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया में नियुक्ति होने पर हार्दिक बधाई। आपकी धार्मिक अध्ययन में भी गहरी रुचि है।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- संघ-सेवी, तपसाधिका सुश्राविका श्रीमती मोहनकंवरजी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व.

श्री जंवरीलाल जी लोढ़ा का 08 अप्रेल, 2015 को परलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक साधना करती थीं। आपने अपने जीवन को कई प्रकार के नियमों से अलंकृत किया, यथा- शीलव्रत, हरी-त्याग, आजीवन जमीकन्द-त्याग, धोवन पानी का नियम, 40 वर्षों से रात्रि चौविहार-त्याग। आपने अपने जीवन में 2 अठाई, दस की तपस्या और 2 वर्षीतप किए। वे संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। उन्होंने संस्कारी जीवन जीते हुए अपनी सन्तति को धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया जिसके फलस्वरूप आप एवं आपका परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

भोपालगढ़- धर्मशीला सुश्राविका श्रीमती पारसकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री केवलचन्दजी

कर्णावट का 25 अप्रेल 2015 को 80 वर्ष की वय में जोधपुर में प्रयाण हो गया। आप नित्य सामायिक- स्वाध्याय करती थीं। आपके रात्रिभोजन-त्याग, तिथियों के दिन हरी-त्याग एवं धोवन पानी-सेवन जैसे अनेक नियम थे। आपकी रत्नसंघ के प्रति विशेष श्रद्धा थी। कर्णावट परिवार ने सामायिक-स्वाध्याय हेतु भोपालगढ़ में 'जैन भवन' का निर्माण करवाया। ओस्तरा मन्दिर में भोजनशाला का निर्माण करवाया।

जोधपुर- शान्त स्वभावी, सुश्राविका श्रीमती भंवरीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालाल जी हुण्डीवाल (कांकरिया) मूल निवासी भोपालगढ़ का 13 अप्रेल 2015 को सेंधवा (म.प्र.) में संथारे के साथ देवलोकगमन हो गया। आप नित्य 5 सामायिकें करती थीं। आप 10-12 साल से एकाशन की तपस्या कर रही थीं। आपके जमीकन्द-त्याग, रात्रिभोजन-त्याग आदि अनेक नियम थे। आप महासती चन्द्रकलाजी म.सा. की सांसारिक काकीजी थीं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती चुकी देवीजी धर्मपत्नी श्री मगराजजी तलेसरा 'रोहिट वाले' का 78 वर्ष की वय में 8 अप्रेल 2015 को समाधि भावों में स्वर्गवास हो गया। आपका व्यक्तित्व अत्यन्त सरल, सहज, सौम्य एवं

मिलनसार था। आप नियमित सामायिक व धर्माराधना करती थीं। संत-सतियों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप सुश्रावक श्री पीरचन्द जी चोरडिया की बहिन थीं।

जोधपुर- सुश्रावक श्री अरविन्दकुमारजी कुम्भट का 02 अप्रेल,2014 को देहावसान हो गया। आपकी रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में कुम्भट परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। आप अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामंत्री एवं आचार्य हस्ती शताब्दी समारोह के महासचिव श्री जगदीशमलजी कुमभट के अनुज भ्राता थे। मरणोपरान्त आपके नेत्रदान किए गए।

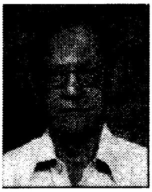

भरतपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री सुखदर्शनलालजी जैन 'पहरसर वाले' का 3 अप्रेल 2015 को 82 वर्ष की उम्र में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आप नित्य सामायिक साधना करती थीं। आपने अपने जीवनकाल में कई तेले, पचोले, अठाई व दयाव्रत की तपस्या की। 24 मार्च को श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. से आपने मांगलिक श्रवण किया तथा महासती सौभाग्यवतीजी म.सा. के मुखारविन्द से उपवास के प्रत्याख्यान के साथ सागारी संथारा ग्रहण किया। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सभी संत-सतियों के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा भक्ति एवं आस्था थी। सम्पूर्ण पावटिया परिवार संघ सेवा, संत सेवा और समाज सेवा में अग्रणी रहा है। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर- संघनिष्ठ, धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न श्रीमती प्रेमकंवरजी रांका धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्दजी रांका का 5 अप्रेल, 2015 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सरलता, उदारता व सेवाभावना से युक्त एवं सादगीपूर्ण रहा। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। वे संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। रांका परिवार की संत-सतीवृन्द की सेवा में विशेषतः औषधोपचार व वैय्यावच्च में महनीय भूमिका रहती है। श्रीमान् पारसमल जी रांका श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के वर्षों तक अध्यक्ष रहे तथा संघसेवा में सन्नद्ध रहते हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती प्रणिताजी भण्डारी धर्मपत्नी श्री नीरजजी भण्डारी का 4 अप्रेल 2015 को युवावय में असामयिक निधन हो गया। सरलता, प्रसन्नता आदि गुणों से युक्त सुश्राविका का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में

भी वे सदैव तत्पर रहती थीं। आपने शील, स्वभाव, स्नेह एवं माधुर्य से परिवार में समन्वय का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

हुबली- तपाराधिका, सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी धर्मपत्नी श्री सम्पतराजजी कटारिया का 13 फरवरी, 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि करती थीं। उन्होंने जीवनकाल में तीन मासक्षपण व अनेक अठाइयाँ, बेला-तेला, वर्षीतप, सिद्धितप, उपधान तप, 500 आयंबिल एवं निरन्तर तपस्याएँ कीं। महासतीजी श्री ज्ञानलताजी म.सा. के 2007 के चातुर्मास में हुबली में उन्होंने चौका लगाकर लाभ लिया।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विजयकंवर जी धर्मपत्नी स्व.श्री पृथ्वीराज जी

लुणावत का 85 वर्ष की वय में 9 अप्रेल 2015 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवनकाल में वर्षीतप, अठाई आदि कई तपस्याएँ कीं। आप नियमित रूप से सुबह-शाम सामायिक-प्रतिक्रमण एवं स्वाध्याय करती थीं। आचार्य भगवन्त, उपाध्यायप्रवर एवं सभी संत-सतियों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा भक्ति थी। आपका परिवार संघसेवा एवं समाज सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

चेन्नई- अनन्य गुरु भक्त सुश्रावक श्री फुटरमलजी बाघमार (कोसाणा वाले) सुपुत्र स्व. श्री

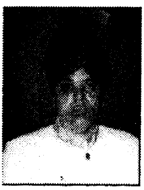

मोहनलालजी बाघमार का 26 अप्रेल 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक स्वाध्याय करते थे। आप मिलनसार, सरलमना व विनयशील श्रावक थे। रत्नसंघ के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा व भक्ति थी। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति अटूट श्रद्धावान है। आपके दोनों सुपुत्र श्री राजेशजी व श्री सम्पतजी बाघमार पयुर्षण महापर्व पर स्वाध्यायी सेवा देते हैं।

इन्दौर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती शान्तादेवीजी सिंघवी धर्मपत्नी श्री बाबूलाल जी सिंघवी का 70 वर्ष की वय में शुभ भावों के साथ देवलोकगमन हुबली (कर्नाटक) में हो गया। आपने 2 वर्षीतप, शीलव्रत, जमीकंद-त्याग एवं धोवन-पानी का नियम रखा। सामायिक-स्वाध्याय, नवकार मंत्र जाप, 125 गाथा का स्वाध्याय प्रतिदिन करती थीं।

मसूदा- सुश्राविका श्रीमती कंचनदेवी धर्मपत्नी श्री पुखराज जी नाहर का 31 मार्च 2015 को परलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक एवं प्रार्थना करती थीं। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी महिला थीं।

उदयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती निर्मलचन्द्रिका डाँगी धर्मपत्नी कवि छंदराज

'पारदर्शी' का 21 अप्रेल 2015 को 69 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, सहजता एवं प्रसन्नता जैसे गुणों से युक्त था। आपकी अभिलाषा के अनुसार देहदान और नेत्रदान किए गए।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

अनमोल उपहार देने की अभिनव योजना

हम जन्मदिन, विवाह, शादी की सालगिरह और अन्य अवसरों पर भेंट व उपहार देना चाहते हैं। आप द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न उपहारों के बीच सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-जयपुर द्वारा एक अभिनव उपहार प्रदान करने की योजना बनायी गई है। इस योजना के अन्तर्गत आप **'जिनवाणी'** पत्रिका उपहार के रूप में दे सकते हैं। आपके निर्देशानुसार मण्डल आपकी ओर से उपहार प्राप्तकर्ता को एक शुभकामना संदेश भेजेगा। उनको जिनवाणी की प्रथम प्रति विशेष Gift wrapper में भेजी जाएगी। उपहार प्राप्तकर्ता को बीस वर्षों तक प्रतिमाह जिनवाणी प्रेषित की जाएगी।

हमारे अधिकतर उपहार कुछ ही दिनों के लिये होते हैं और उनकी उपयोगिता भी सीमित होती है, लेकिन 'जिनवाणी' का यह उपहार सिर्फ एक हजार रुपये में आने वाले बीस वर्षों तक आपकी याद दिलाता रहेगा। 'जिनवाणी' में बच्चों, बुजुर्गों, युवक और युवतियों सबके लिए पठनीय सामग्री का ख़जाना होता है। 'जिनवाणी' सुसंस्कारों से सज्जित एक ऐसा गुलदस्ता है जिसकी सौरभ सारे परिवार में हमेशा फैलती रहेगी।

मेरा निवेदन है कि 'जिनवाणी' की इस अभिनव उपहार योजना को अपनाकर अपने उपहार को अमरत्व से सजाइये।

-कैलाशमल दुग्गड़

अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

उपहार राशि जमा कराने की विधि

इस योजना के लिए आप तीन तरह से 1000/- रुपये या उसके गुणकों में राशि जमा करा सकते हैं- 1. नगद राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय में, 2. 'जिनवाणी' के नाम से चैक बनाकर, 3. 'जिनवाणी' के बैंक खाते **SBBJ 51026632986, IFSC No. SBBJ 0010843** में राशि जमा कर।

राशि जमा करने के साथ उपहारकर्ता एवं जिनवाणी प्राप्तकर्ता का पता एवं फोन नं. सहित विवरण से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.) को 0141-2575997/ 2570753 अथवा **Email-sgpmandal @yahoo.in** को अवश्य सूचित करें। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

ध्यान-शिविर का अनुभव

जब ध्यान में मन रमने लगता है

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

स्व पर हित सधने लगता है
जब ध्यान में मन रमने लगता है
कठिन कार्य भी सरल सा लगने लगता है
बंधन से मुक्ति का रास्ता मिलने लगता है। जब ध्यान.....।।1।।
वेदन तरंग तरंग हो उर्मियाँ धारा प्रवाह साथ लिए
या संवेदन हो जड़ स्थूल भाव को साथ लिए
सम रस के आस्वादन से अनित्य बोध जगने लगता है
प्रज्ञा के जगने से अपना मंगल सधने लगता है। जब ध्यान.....।।2।।
श्रुत से बढ़कर चिन्तन होवे फिर भावित प्रज्ञा साथ लिए
हर वेदन पर प्रज्ञा जागे सम्यक् बोधि साथ लिए
जागृत रहने पर अन्तर में राग-द्वेष सिमटने लगता है
असीम शान्ति को पाने से अन्तर्मन खिलने लगता है। जब ध्यान.....।।3।।
दुःख-चक्र, धर्म-चक्र में बदले आत्म दर्शन को साथ लिए
लोक-चक्र मुक्ति-चक्र में पलटे प्रज्ञा ज्ञान को साथ लिए
पर को छोड़ स्व में जीने से जीवन निर्मल बनने लगता है
नश्वरता को निरख-परख कर संसार सिमटने लगता है। जब ध्यान.....।।4।।
चेतन शक्ति प्रतिपल जागे समता वृद्धि की चाह लिए
शुद्ध धर्म सबके मन जागे विकार विमुक्त स्वभाव लिए
समता रस के बहने से नवल उत्साह बढ़ने लगता है
अनित्य को देख नित नव रस अपूर्व मिलने लगता है। जब ध्यान.....।।5।।
हर संवेदन उत्पाद व्यय युक्त है जाने शाश्वत सत्य को साथ लिए
प्रेय अप्रेय में राग-द्वेष न जागे अनित्य का अहसास लिए
वेदन के सदुपयोग से दुःख का ज्वार थमने लगता है
मैत्री के मंगल प्रयोग से दूर अमंगल होने लगता है। जब ध्यान.....।।6।।

-मुम्बई (महा.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल सत्साहित्य की 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

772 श्री तेजमलजी लोढ़ा, फूलियाकला-भीलवाड़ा (राजस्थान)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15408 से 15417 तक 10 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

7000/- वीरपिता श्री अमृतलालजी सुराणा, हुबली, सहायतार्थ।

5100/- श्री मगराजजी, आनन्द प्रकाशजी, सुरेशकुमारजी, विरेन्द्रकुमारजी तलेसरा 'रोहट वाले', जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती चुकीदेवीजी धर्मसहायिका श्री मगराजजी तलेसरा का 8 अप्रेल, 2015 को स्वर्गगमन होने पर पावन स्मृति में।

5100/- श्री शैलेश जी डोसी, जोधपुर, अपनी मामीजी श्रीमती पारसकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री केवलचन्दजी कर्णावट, भोपालगढ़ के 25 अप्रेल 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

5000/- श्री रतनचन्दजी कोठारी, मालवीयनगर-जयपुर, सप्रेम भेंट।

4000/- वीरभ्राता श्री संदीप जी सुराणा, हुबली, सहायतार्थ।

2511/- डॉ. नरेन्द्र बाबूजी जैन (कुण्डेरा वाले), आलनपुर-सवाईमाधोपुर, डॉ. प्रेरणा सुपुत्री श्रीमती प्रेमलताजी एवं डॉ. नरेन्द्रबाबूजी जैन का शुभविवाह 9 मार्च 2015 को डॉ. विपिनजी सुपुत्र श्रीमती सरोजदेवीजी एवं श्री नरेन्द्रजी गुप्ता, कोटा के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सुरेशचन्दजी जैन, जयपुर, पूज्य श्री धर्मचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री प्रसन्नचन्दजी, स्वरूपचन्दजी, राजेन्द्रजी, जुगलजी, कमलजी, महावीरजी हुण्डीवाल, अपनी माताजी श्रीमती भँवरीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालाल जी हुण्डीवाल (कांकरिया) का 13 अप्रेल, 2015 को सेंधवा में संथारे सहित देवलोक-गमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री पुरुषोत्तमजी भण्डारी, श्रीमती सुधाजी लोढ़ा, श्रीमती लताजी मेहता, श्री अनिलजी भण्डारी, श्रीमती मीनाजी भण्डारी, श्री अंकुशजी मेहता, उदितजी एवं यशजी भंडारी, मुम्बई, श्रीमती पूनमकँवरजी भण्डारी (जोधपुर वाले), मुम्बई का जन्म दिवस चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तथा देवलोकगमन अक्षय तृतीया की पावन स्मृति में।

2100/- श्री प्रकाशमलजी, महावीरचन्दजी, राजेन्द्रजी लोढ़ा, जोधपुर, श्रीमती मोहनकंवरजी लोढ़ा धर्मसहायिका स्व. श्री जवरीलाल जी लोढ़ा के 8 अप्रेल 2015 को स्वर्गगमन होने पर पावन स्मृति में।

2000/- डॉ. सरदारसिंहजी, हिम्मतसिंहजी, कुशलसिंहजी एवं बाबूलालजी लोढ़ा, फूलियाकला-भीलवाड़ा, पूज्य माताजी श्रीमती लाडकँवरजी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री तेजमलजी लोढ़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री सौभागमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन, बिलोता वाले, पूज्य मातुश्री श्रीमती माँगीबाईजी की 19वीं पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री बुद्धिप्रकाशजी, नरेन्द्र कुमारजी, महेन्द्र कुमारजी जैन (चौरूवाले), कोटा, चि. सौरभ का शुभविवाह 13 मार्च, 2015 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती निर्मलादेवी डागा एवं श्री सुनीलजी, सुरेन्द्रजी, सुधीरजी, संदीपजी डागा, जयपुर, स्व. श्री कैलाशचन्दजी डागा की 26 अप्रेल को सातवीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती राजकँवरजी, अनराजजी गाँधी (जोधपुर वाले), मुम्बई, प्रपौत्री के शुभ आगमन पर सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, राजेश जी बरडिया, जोधपुर हाल मुकाम पीपाड़सिटी, पूज्य पिताश्री श्री माणकचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री हेमराज जी बरडिया के 16 मार्च, 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री गौतमचन्दजी, सुनीलजी लोढ़ा, जोधपुर, श्रीमती लाडकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री धनराजजी लोढ़ा के वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री जवरीमलजी खिंवसरा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री हीना खींवसरा सुपुत्री श्री अखिलेशजी खिंवसरा के रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया में नियुक्ति होने पर।

1100/- श्रीमती गणेशीबाई बाफना धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचन्दजी बाफना, चेन्नई, सहायतार्थ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

65000/- श्रीमती सायरकँवर, प्यारेलाल शेषमल कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'नन्दीसूत्र' के पुनः प्रकाशन हेतु अर्थसहयोग सधन्यवाद प्राप्त।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

100000/- श्री अमिताभजी, शशांकजी हीरावत, जयपुर, संघ प्रभावक।

51000/- मैनादेवी दुलीचन्द बोहरा ट्रस्ट, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

30000/- श्री कुशलराजजी, पदमचन्दजी, सरितादेवीजी, महावीरचन्दजी कोठारी, निमाज, संघ सहायतार्थ।

11000/- श्रीमती कंचनकुंवरजी फोफलिया धर्मपत्नी श्री रंगरूपमलजी फोफलिया के वर्षीतप पारणे की खुशी में जीवदया हेतु।

11000/- वीरपिता श्री अमृतलालजी संदीपजी सुराणा, हुबली, संघ सहायतार्थ।

6100/- श्री मगराजजी, आनन्दप्रकाशजी, सुरेशकुमारजी, धीरेन्द्रकुमारजी तलेसरा-रोहट वाले, जोधपुर, श्रीमती चुकीदेवीजी तलेसरा का 8 अप्रेल 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में जीवदया हेतु।

5000/- श्री रमेशजी, विजयमल जी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

3000/- श्री जगदीशचन्दजी बच्छावत, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2000/- श्री एस.सी. मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

2101/- श्री धर्मचन्दजी, प्रदीपकुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. सुनील संग सौ. प्रियंका का 21 फरवरी, 2015 को शुभविवाह होने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री अरुणकुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र अंशुल का 22 फरवरी, 2015 को शुभविवाह होने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री हेमराजजी, इन्द्रप्रसादजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. दिलीप जैन (अधिष्ठाता, आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर) संग सौ. मनीषा का शुभविवाह 09 फरवरी, 2015 को होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रतनलाल जी, रमेशचन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. मुकेश संग सौ. निधि का शुभविवाह 08 फरवरी 2015 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती चन्द्रकांताजी हिरण, जलगांव, सुपौत्री सौ.कां. मित्तल संग चि. भूषणकुमार जी का विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

100000/- श्री गणपतजी, हेमन्तकुमारजी बागमार, चेन्नई।

24000/- श्री कुशलराजजी, पदमचन्दजी, महावीरजी कोठारी, निमाज, स्व. श्री कनकमलजी कोठारी की पुण्यस्मृति में।

24000/- श्रीमती राज जैन, अजमेर, अपने माता-पिता श्री जीतमलजी-श्रीमती कुसुमजी कोठारी के वैवाहिक जीवन के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री सरदारसिंहजी, हिम्मतसिंहजी, कुशलसिंहजी, बाबूलालजी लोढ़ा, फूलियाँकला-भीलवाड़ा, स्व. श्रीमती लाडकंवरजी धर्मपत्नी श्रीमती तेजमल जी लोढ़ा की पुण्यस्मृति में।

12000/- श्री पुखराजजी भण्डारी, जयपुर, धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सुधाजी भण्डारी की पुण्यतिथि पर उनकी पुण्यस्मृति में।

12000/- श्री अजयजी भण्डारी, जयपुर, अपनी मातुश्री स्व. श्रीमती सुधाजी भण्डारी की पुण्यतिथि पर उनकी पुण्यस्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra****, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व

ज्येष्ठ कृष्णा 6, रविवार	**10.05.2015**	**पूज्य श्री कुशलचन्दजी म.सा. की 232 वीं पुण्यतिथि**
ज्येष्ठ कृष्णा 8, सोमवार	**11.05.2015**	**अष्टमी**
ज्येष्ठ कृष्णा 14, रविवार	**17.05.2015**	**चतुर्दशी, पक्खी**
ज्येष्ठ शुक्ला 8, मंगलवार	**26.05.2015**	**अष्टमी**
ज्येष्ठ शुक्ला 14, सोमवार	**01.06.2015**	**चतुर्दशी, पक्खी, पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म. की 170 वीं पुण्यतिथि**
प्रथम आषाढ़ कृष्णा 2, गुरुवार	**04.06.2015**	**219 वां क्रियोद्धारक दिवस**
प्रथम आषाढ़ कृष्णा 8, बुधवार	**10.06.2015**	**अष्टमी**
प्रथम आषाढ़ कृष्णा 14, सोमवार	**15.06.2015**	**चतुर्दशी**
प्रथम आषाढ़ कृष्णा 30, मंगलवार	**16.06.2015**	**पक्खी**
प्रथम आषाढ़ शुक्ला 6, सोमवार	**22.06.2015**	**आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ**

विनम्र अनुरोध

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका के समस्त सदस्यों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रमोद हो रहा है कि 'जिनवाणी' परिवार आपके एवं आपके परिवार की खुशियों में शामिल होने जा रहा है। जिनवाणी परिवार जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि पावन प्रसंगों पर आपको बधाई संदेश प्रेषित करने का इच्छुक है।

अत: आप सभी सदस्यों से विन्रम अनुरोध है कि आप अपनी एवं परिवार के सभी सदस्यों की जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि की तारीख जिनवाणी कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करावें। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

फोनः 0141-2710946, 94614-56489 (मोबाइल)

Email-ahassansthan@gmail.com

प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र-2015

अपना नवीन फोटो लगायें

1. नाम ....
2. पिता का नाम...
3. जन्मतिथि...
4. पत्राचार का पूर्ण पता..

....

5. मोबाइल नं. .... निवास दूरभाष नम्बर .... ईमेल...............................
6. शैक्षणिक योग्यता विवरण (पिछले चार वर्ष की)

कक्षा/डिग्री	संस्थान/कॉलेज	बोर्ड/विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक/प्रतिशत

7. विशिष्ट योग्यता / उपलब्धि...
8. धार्मिक अध्ययन ....

....

(आ) पारिवारिक विवरण

(1) परिवार के कुल सदस्य............ (2) परिवार का किस धर्म से सम्बन्ध.......................

(3) परिवार में धार्मिक गतिविधियाँ ....

(इ) संस्थान में प्रवेश का उद्देश्य एवं लक्ष्य ....

....

(ई) सम्पर्क सूत्र (स्थानीय श्रावक)

(1) नाम.. (2) नाम ....

पता .... पता ....

दूरभाष/ मोबाइल................................ दूरभाष/ मोबाइल ....

(उ) विशिष्ट संदर्भ सूत्र-

नाम .... पता ....

....दूरभाष/ मोबाइल ....

मेरे द्वारा दी गई उक्त जानकारी सत्य है।

आवेदन में दी गई जानकारी के गलत होने पर फार्म निरस्त किया जा सकता है।

अभिभावक हस्ताक्षर

छात्र हस्ताक्षर

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 69 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 11 से 18 सितम्बर 2015** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **05 अगस्त 2015** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.......................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...

   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..

   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...

   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.......................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763,मो.-9460441570(संयोजक),9461013878(सचिव), 94142-67824,9462543360(का.प्रभारी),ईमेल-swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट 93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है ।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

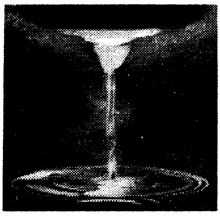

Electric Arc Furnace

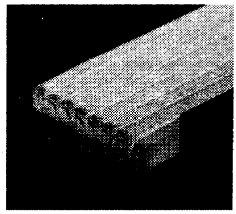

Billets

Rolling Mill

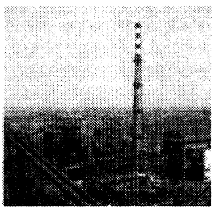

Captive Power Plant

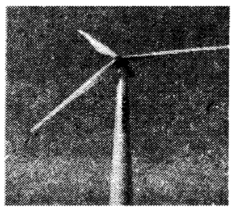

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नम: ।।

हस्ती–हीरा जय जय ! हीरा–मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे–मोती जन–जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ा अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य	रजत स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 16801010012O722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिठ, श्रेठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् राजीव जी डागा, ह्यूस्टन।	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमती नीता जी डागा, ह्यूस्टन।	
	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।	
	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर।	
	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पून्नामल्लई।	
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।	
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।	
	श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, W-570, Park Road,Annanagar West Extn.,**CHENNAI-600101** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

K.L. COTTON MILLS
Kanti
T.M.J. No. 1333

kelico®
remembering quality

स्वाध्याय से ही आप आत्म-निर्माण
और समाज-निर्माण के साथ जिनशासन
को समुन्नत करने में समर्थ होंगे।
-आचार्य हस्ती

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
• PACHPADRA • PALI • ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali - 306 401 (Raj.)
Mobile: 094141 22757

135, N.M.S.Compound, ERODE - 638 001 (T.N.)
© Off : 3205500, Mobile: 93600 25001

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – **समस्त जैन समाज**

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मई, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मई, 2015 ★ ज्येष्ठ, 2072

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन